

# तिथि मीमांसा

जैन ग्रंथ के आधार पर जैन तिथिसंबंधी ठोस विचारणा



– मुनि कृपाबोधिविजयजी म.सा.

॥ शासनपति श्री महावीरस्वामिने नमः ॥ ॥ श्री धर्मनाथस्वामिने नमः ॥  
नमो नमः श्री गुरु प्रेम-भुवनभानु-पद्म-जयघोष-राजेन्द्र-हेमचन्द्र-संयमबोधिसूरीशेभ्यः

# तिथि मीमांसा

(जैन ग्रन्थों के आधार पर जैन तिथि से सम्बन्धित टोस चर्चा)

-: परामर्शदाता :-

पू. आचार्य श्री जयसुन्दरसूरीश्वरजी म.सा.

-: संकलन-चिह्नन :-

पू. आचार्य श्री संयमबोधिसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य  
मुनि कृपाबोधिविजयजी म.सा.

-: प्रकाशक-प्राप्ति स्थल :-

जैनम् परिवार

22, नाकोडा पार्क, सिनेप्राईडनी गलीमां, कृष्णनगर-नरोडा रोड,  
अमदावाद-382 346, मो. 89801 21712

पुस्तक का नाम	: तिथि मीमांसा
आधार ग्रन्थ	: सूर्यप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति, ज्योतिष करण्डक, मण्डल प्रकरण, ठाणांग सूत्र आदि
अन्य ग्रन्थ	: वेदांग ज्योतिष, सूर्यसिद्धान्त, Ephemeris Data आदि
भाषा	: हिन्दी
प्रकाशन तारीख	:
संकलन-चिह्न	: प.पू. मुनिराज श्री कृपाबोधिविजयजी म.सा.
अनुवाद	: पवनकुमार बैद
अनुवाद सौजव्य	: श्री पो. हे. जैननगर जैन संघ
विषय	: जैन ग्रन्थ, अन्य ग्रन्थ एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से तिथि की मान्यता के सन्दर्भ में गहरा संशोधन
संशोधित आवृत्ति	:
प्रतियाँ	500

मूल्य : 150



## प्रस्तावना....

वैशाख शुक्ल 10 को परमात्मा महावीर देव को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। जगत के समस्त पदार्थ और उनके समस्त पर्याय प्रभु के ज्ञान में सहज प्रतिबिम्बित हुए। सूर्य, चन्द्र, ग्रह और नक्षत्रों की अगम्य गति प्रभु के ज्ञान में स्पष्ट रूप से गोचर थी और उसी केवलज्ञान में प्रतिभासित ज्ञान का आंशिक प्रतिबिम्ब गणधरों और पूर्वधरों के श्रुतज्ञान में भी प्रतिबिम्बित हुआ। प्रभु ने अर्थ दर्शाया और गणधरों एवं उनकी परम्परा में आए पूर्वधरों ने उस अर्थ को अंग आगम और उपांग आगम रूपी सूत्रों के धागे में पिरोकर सुरक्षित रखा।

गणधरों और पूर्वधरों के श्रीमुख से गूँथे हुए सूत्रों के पवित्रतम और रहस्यपूर्ण धागों का समूह ही श्री टाणांग सूत्र, श्री सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र, श्री चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र, ज्योतिषकरंडक आदि है।

वांचन में सहज माने जाने वाले इन सूत्रों का अर्थ गहन है, और ये अनेक त्रैकालिक सत्य को अपने अन्दर छिपाए बैठे हैं।

- ❖ किन्तु दुर्भाग्य यह है, कि इन सूत्रों के सागर में डुबकी मारने की जिज्ञासा आज कम हो चुकी है,
- ❖ सूत्र-सागर की गहराई में स्थित रत्नों को खोजने की संशोधक वृत्ति आज लुप्त हो रही है,
- ❖ सूत्र-सागर की विशालता और गहराई को स्वीकार करने वाली मध्यस्थ दृष्टि आज धुँधली पड़ चुकी है।

बाकी सामाजिक, वैज्ञानिक, धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि को केन्द्र में रखकर होने वाला अभ्यास जीव को श्रेष्ठ मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक, सन्त और सर्वज्ञ भी बनाता है।

- ❖ गणितानुयोग का ज्ञान आज भी लुप्त नहीं हुआ, किन्तु उसके सचोट अर्थघटन द्वारा सर्वज्ञ की सर्वज्ञता की यशोपताका को विश्वपटल पर लहराने वाले विद्वान आज लुप्त हुए हैं। लगभग उपेक्षित हो चुके इन ग्रन्थों के पदार्थ आधुनिक यूरोपीय ग्रहादि गणित को दिशा दिखाने की क्षमता रखते हैं, और जिनशासन के

अनेक अभ्यन्तर प्रश्नों के सन्तोषप्रद समाधान प्रकट करने में समर्थ हैं ।

- ❖ ये सभी समाधान जन-कल्याणकारी और आत्म-हितकारी भी हैं,
- ❖ ये समाधान संघर्ष और संक्लेश नाशक होने के साथ शासनोन्नतिकारक भी हैं,
- ❖ ये सभी समाधान जिनशासन की अभ्यन्तर व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में सक्षम तो हैं ही, तथा साथ ही बाह्य आक्रमणों को दूर करने में भी समर्थ हैं ।
- ❖ ये समाधान संघ, साधु और साधर्मिक वात्सल्य की पूर्ति करने वाले, और साथ ही सम्यग्दर्शन की शुद्धि करने वाले हैं ।

इसीलिए इस विषय के संशोधन में निष्पक्ष, शासनरसिक गीतार्थ विद्वानों की जागरूकता अत्यन्त आवश्यक है ।

❖ मन्दक्षयोपशम धारक मुद्ग पर अचानक देव और गुरु की कृपा हुई और मार्गानुसारी दृष्टि खिलती गई ।

❖ मुझे ऐसा संकेत हुआ, कि मेरे **सांसारिक पिताजी समाधिमरण** प्राप्त करने के बाद चन्द्र विमान में उत्पन्न हुए हैं इसलिए उस संकेत ने ज्योतिष देवों की जानकारियों से भरपूर गणितानुयोग के ग्रन्थों के प्रति मेरा सहज आकर्षण जगाया । दिव्यात्मा स्व. **पिताजी** की दिव्य कृपा हुई और उसमें पूज्यपाद स्व. गच्छाधिपतिश्री आचार्यदेव श्रीमद् **विजयजयघोषसूरीश्वरजी** म.सा. तथा प.पू. वैराग्यदेशनादक्ष दादा गुरुदेव आचार्यदेव श्रीमद् **विजय-हेमचन्द्रसूरीश्वरजी** म.सा. की वचनलब्धि मिली कि, **“तू जैन गणित का अनुसरण करने वाला पंचांग बना ।”** बस इसी बल पर शुरू हुई संशोधन यात्रा आज तीसरे चरण में पहुँची है । प्रथम चरण **“जैन आगमिक गणित आधारित पंचांग प्रक्रिया”** के स्वरूप में प्रस्तुत हुआ, दूसरा चरण **“नक्षत्र मीमांसा”** के रूप में प्रस्तुत हुआ, और तीसरा चरण **“तिथि मीमांसा”** के रूप में प्रस्तुत हो रहा है ।

इस पुस्तक में :—

- 1) वैज्ञानिक दृष्टिकोण से तिथि के साथ समन्वय,
- 2) **“क्षय पूर्वा”** के प्रघोष के सन्दर्भ में ऐतिहासिक तथा शास्त्रीय दृष्टिकोणपूर्वक कीगई विचारणा और उसका मार्गानुसारी अर्थ, तथा

3) टाणांग सूत्र, सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र तथा वेदांग ज्योतिष की प्राचीन मान्यताओं के तुलनात्मक अभ्यासपूर्वक की गई तिथि की मान्यता को मुख्य रूप से प्रस्तुत किया गया है।

मुझे विश्वास है, कि निष्पक्ष गीतार्थ तथा तिथि प्रकरण के निष्पक्ष जानकार इस पुस्तक का मध्यस्थ दृष्टिकोण से पठन करेंगे तो जैन पंचांग का पुनर्जीवन होकर ही रहेगा।

❁ प्रभु के वचन स्वरूप आगम आज भी त्रैकालिक सत्य प्रस्तुत करते हैं, उनका थोड़ा ही, सही अहसास करवाए और "अहो जिनशासनम्" "Salute Jinshasanam" बोलने को मजबूर करें, ऐसी घटना लिखे बिना रहा नहीं जाएगा।

जन्मभूमि आदि सभी पंचांग आज जिस Ephemeris data से बनते हैं, उनकी Printed copy गुरुकुलम साबरमती के संचालक जीतुभाई बालड द्वारा भेजे गए माननीय पण्डितवर्य राजेश्वरसिंह राणा जी के पास से मिली। मेरे लिए ज्योतिष का विषय सर्वथा अपरिचित था, किन्तु पण्डित जी ने उन डेटा के सभी विवरण खोलने की पद्धति दिखाई।

फिर तो परिचित युवकों से अनेक वर्षों के डेटा के प्रिंट मंगवाए। अब आश्चर्य यह है कि ५२४ B.C. के वर्ष के डेटा की जाँच करने पर दिनांक २२/६/५२४ B.C. के डेटा में से शास्त्रपाठ के अनुसार १) पांचवें आरे की शुरुआत वाला, २) चातुर्मास की ऋतु के प्रारम्भ वाला, ३) श्रा.व. १ की तिथि से शुरु होने वाला, ४) अभिजित के योग में तथा उत्तरायण में प्रवेश करने वाले चन्द्र को सूचित करने वाला, तथा ५) पुष्य के योग में रहा तथा दक्षिणायन में प्रवेश करने वाले सूर्य को सूचित करने वाला-जैसा अवकाश होता है, वैसा डेटा मिला। कदाचित् आस-पास के ५० वर्षों की जानकारी जाँची, किन्तु कहीं तिथि नहीं बैठी, तो कहीं नक्षत्र नहीं बैठा तो कही अयन नहीं बैठा। प्रभु शासन के शास्त्रपाठ आज भी इस हद तक स्पष्ट मिल सकते हैं, यह जानकर सहज ही मुख से निकल उठा, "अहो जिनशासनम्"।

मात्र थोड़े ही वर्ष पहले की संस्था और ई.सं. १९७० में तैयार हुए डेटा से २५४४ वर्ष पूर्व शुरु हुए पांचवें आरे के निर्दिष्ट आकाश की ग्रहस्थिति मात्र २-३ घण्टे के बदलाव के साथ सूचित करते हैं। यह डेटा तैयार हुआ है—DE ४३१ Project से, और ये लोग अपने साहित्य में लिखते हैं कि यह डेटा लम्बे समय अन्तराल का होने के कारण थोड़ा Less Accurate है, इसलिए २-३ घण्टे का फर्क होना सम्भव है। यह

मात्र गणित और टेक्नोलॉजी का संयुक्त प्रयास है जिससे प्राचीन काल के आकाश की स्थिति जानी जा सकती है ।

❖ गेलीलिओ के समकालीन **वैज्ञानिक केप्लर** द्वारा तैयार किए गए ३ नियम आज भी स्कूलों में पढ़ाए जाते हैं । उसका **दूसरा नियम समान माप की तिथि का समर्थन करता है ।**

❖ नेपाल की दरबार लाइब्रेरी में स्थिति शिलालेख **पोष और आषाढ़ को अधिक मास** के रूप में स्थापित करते हैं ।

“इन परम्पराओं का विच्छेद हो गया है” ऐसी स्वीकृति व्यापक हो गई हो, ऐसे काल में **वैज्ञानिक और इतिहासविद** एक-एक शास्त्रपाठ को सत्य साबित करते हुए नजर आ रहे हैं । इस प्रकार सम्यग्दर्शन की स्थिरता, शुद्धि और वृद्धि करने वाले ये प्रमाण देखकर हृदय बोल उठता है, **“नमोऽस्तु कलये यत्र त्वद्दर्शनमजायत ।”**

❖ **मात्र इतना ही कहूँगा कि श्रद्धायुक्त जिज्ञासा और संशोधकवृत्ति जीवन्त हो, तो प्रत्येक आगमवाक्य की सत्यता टेक्नोलॉजी के माध्यम से जगत के समक्ष रखी जा सकती है ।**

ऐसे दूसरे अनुभव होने पर संशोधन में आनन्द और अहोभाव बढ़ता गया और नई-नई स्फुरणाएँ सतत होती गईं, और तैयार होने वाला **तिथि मीमांसा** का नजराना संघ के चरणों में समर्पित कर रहा हूँ ।

यह मात्र **विचार है, निर्णय नहीं, इसलिए मध्यस्थ बुद्धि से होने वाले अभ्यास और टिप्पणियाँ सहर्ष स्वीकार्य हैं ।**

सभी पूज्य कम से कम इस पुस्तक के **पेज-२१** पर दिए गए— **“जैन पंचांग विच्छेद”** मान्यता एक विचारणा-परिशीलन Topic से तो इसे अवश्य पढ़ें । जिसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण में रुचि हो तो कम से कम **पेज नं. ३२ “तिथि उत्पत्ति की सत्यता के सन्दर्भ में तुलनात्मक विचारणा”** से तो यह पुस्तक अवश्य पढ़ें, ऐसी विनयपूर्ण विनती है ।

दिव्य सांनिध्य द्वारा सतत बल प्रदान करने वाले पूज्यपाद आचार्य भगवन्त श्रीमद् **विजयप्रेमसूरीश्वरजी म.सा.** तथा पूज्यपाद आचार्य भगवन्त श्रीमद् **विजयभुवनभानुसूरीश्वरजी म.सा.** के चरणों में मेरी कोटिशः वन्दना ।

इस ग्रन्थ के सृजन के आज्ञादाता, और अपनी सूक्ष्म प्रज्ञा से इस ग्रन्थ को नवपल्लवित करने वाले स्व. पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्रीमद् **विजयजयघोषसूरीश्वरजी म.सा.** के चरणों में वन्दना ।

जिनकी शीतल छाया उपशम भाव की साधना का मूल है, ऐसे

प्रशान्तमूर्ति वर्तमान गच्छाधिपति प.पू. आचार्य भगवन्त श्रीमद् **विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.** के चरणों में वन्दना ।

पंचांग निर्माण का स्वप्न सृजित करने वाले और इस हेतु सतत प्रेरणा देने वाले दादा गुरुदेव पूज्यपाद आचार्य भगवन्त श्रीमद् **विजयहेमचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.** के चरणों में वन्दना ।

समस्त विषय-वस्तु को जाँचकर अपनी तार्किक प्रज्ञायुक्त कलम से इसका परिमार्जन करने वाले पूज्यपाद आचार्य भगवन्त श्रीमद् **विजयजयसुन्दरसूरीश्वरजी म.सा.** के चरणों में वन्दना ।

प्रवर समिति के अन्तर्गत पंचांग समिति के कार्यवाहक पद का उत्तरदायित्व सुचारु रूप से निभाने वाले प.पू.आचार्य भगवन्त श्रीमद् **विजयभाग्येशविजयसूरीश्वरजी म.सा.** के चरणों में वन्दना ।

भवोदधितारक गुरु और विद्यागुरु के रूप में उभय उत्तरदायित्व वहन करके सतत मार्गदर्शक बनने वाले पूज्यपाद आचार्य भगवन्त श्रीमद् **विजय संयमबोधिसूरीश्वरजी म.सा.** के चरणों में वन्दना ।

संयम जीवन ग्रहण करने की सहमति देकर सतत निर्मल जीवन जीने और सार्थक शासन सेवा करने की प्रेरणा देने वाली प.पू. बापजी म.सा. के समुदाय की सा. **श्री ज्योतिरत्नाश्रीजी म.सा.** की शिष्या सा. **श्री गुप्तित्रयाश्रीजी** (पू.माँ म.सा.) सा. **श्री नम्राशयाश्रीजी** (पू. बहन म.सा.) के चरणों में वन्दन ।

मेरे संयम जीवन में सतत सहकार, सौहार्द और स्नेह की पूर्ति करने वाले बड़े बन्धु **पू. मुनिराजश्री जिनबोधि म.सा.**, लघु बन्धु **पू. मुनिराजश्री तारक, परार्थ, धन्य और शासनबोधि म.सा.** और शिष्य **मुनिश्री वर्धमानबोधिविजयजी म.सा.** का भी कृतज्ञभाव से स्मरण ।

पंचांग डेटा हेतु सहयोगी बनने वाले **मीत** (कृष्णनगर), मुमुक्षु **केनोल** को भी धन्यवाद ।

इस ग्रन्थ में उपलब्ध सामग्रियों और साक्षीपाठ द्वारा चिन्तनामत्क लेख लिखा गया है, **जो अन्तिम निष्कर्ष नहीं, बल्कि टोस विचारणा है ।** अतः सभी अधिकृत निष्पक्ष गीतार्थ इस लेख को पढ़ें, विचारें और अपनी सूक्ष्म प्रज्ञा के द्वारा अधिक सत्य-शास्त्र सापेक्ष बनाते हुए मुझे एवं श्रीसंघ को मार्गदर्शन दें, ऐसी करबद्ध प्रार्थना है ।

—मुनि कृपाबोधिविजय

दीवाली बाग, भा.व. ०))

(श्री नेमिनाथ केवलज्ञान कल्याणक)

## अनुक्रमणिका

क्रम	विषय	पेज
१.	तिथि मीमांसा .....	१
२.	ज्योतिष-खगोलीय ग्रन्थों में तिथि की मान्यता .....	३
३.	तिथि विषय के जैन पंचांग का विच्छेद मानें या नहीं ? .....	१३
४.	संशोधन: पूर्वाचार्यों की विद्वता पर शंका या श्रद्धा ? .....	१७
५.	“जैन पंचांग विच्छेद” मान्यता एक विचारणा/परिशीलन ..	२१
६.	प्रघोष वाचक उमास्वाति जी का या किसी अन्य का ? .....	२५
७.	तिथि-उत्पत्ति की सत्यता के विषय में तुलनात्मक विचारणा:- .....	३२.
८.	दोनों के बीच समन्वय ( <b>समाधान-१</b> ) .....	४५
९.	आराधना का नियामक कौन ? स्थूल गणित या सूक्ष्म गणित ? .....	६०
१०.	<b>समाधान-२</b> क्या 'क्षये पूर्वा, वृद्धौ तथा उत्तरा' का अर्थ ऐसा कर सकते हैं ? .....	६३
११.	<b>समाधान-३</b> सूर्यप्रज्ञप्ति और टाणांग सूत्र की अन्य एक तिथि गणना पद्धति और वैदिक काल के साथ इसका समन्वय ...	६८
१२.	अधिक मास की निष्पत्ति .....	८२
१३.	नूतन पंचांग निर्माण प्रक्रिया .....	८९
१४.	परिशिष्ट-१, २, ३, ४. ....	९६ से १२७

**पू. मुनिराज श्री कृपाबोधिविजयजी म.सा. द्वारा**  
**लिखित / सम्पादित खगोल विषयक ग्रन्थ**

- ❁ जैन आगमिक गणित आधारित पंचांग प्रक्रिया
- ❁ मण्डल प्रकरण (पदार्थ प्रकाश भाग-25)
- ❁ नक्षत्र मीमांसा
- ❁ तिथि मीमांसा
- ❁ संस्कारयुक्त जैन पंचांग (प्रेस में)

चित्र-१

A

AMAVAS



Bottom View

रहू के कारण ढकने से वद-१ से सुद-पूनम तक बन रही तीथियाँ।



Top View

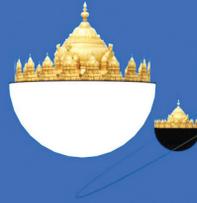
B

SUD AATHAM



Bottom View

रहू के कारण ढकने से वद-१ से सुद-पूनम तक बन रही तीथियाँ।



Top View

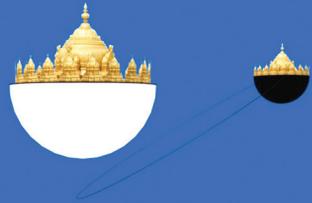
C

PUNAM



Bottom View

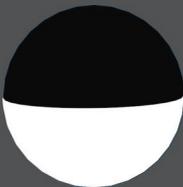
रहू के कारण ढकने से वद-१ से सुद-पूनम तक बन रही तीथियाँ।



Top View

D

VAD AATHAM



Bottom View

रहू के कारण ढकने से वद-१ से सुद-पूनम तक बन रही तीथियाँ।



Top View

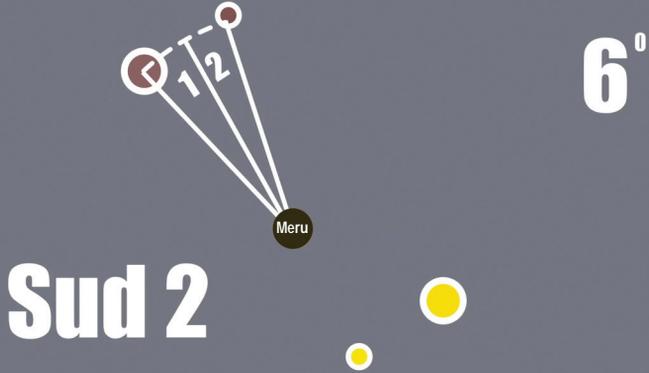
## चित्र-२

A

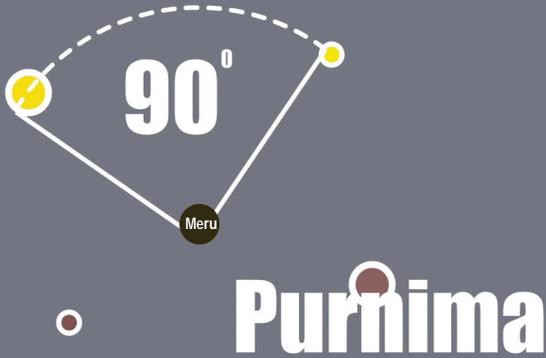
प्रथम सूर्य  प्रथम चन्द्र  दूसरा चन्द्र  दूसरा सूर्य

# अमास

B



C



D



A

**वद-अमास**

01:10:24

विभिन्न उँचाई पर रहे हुए सूर्य, चन्द्र, आरलेषा नक्षत्र में, कर्क राशि में एक साथ आए उसे अमास कहते हैं।

B

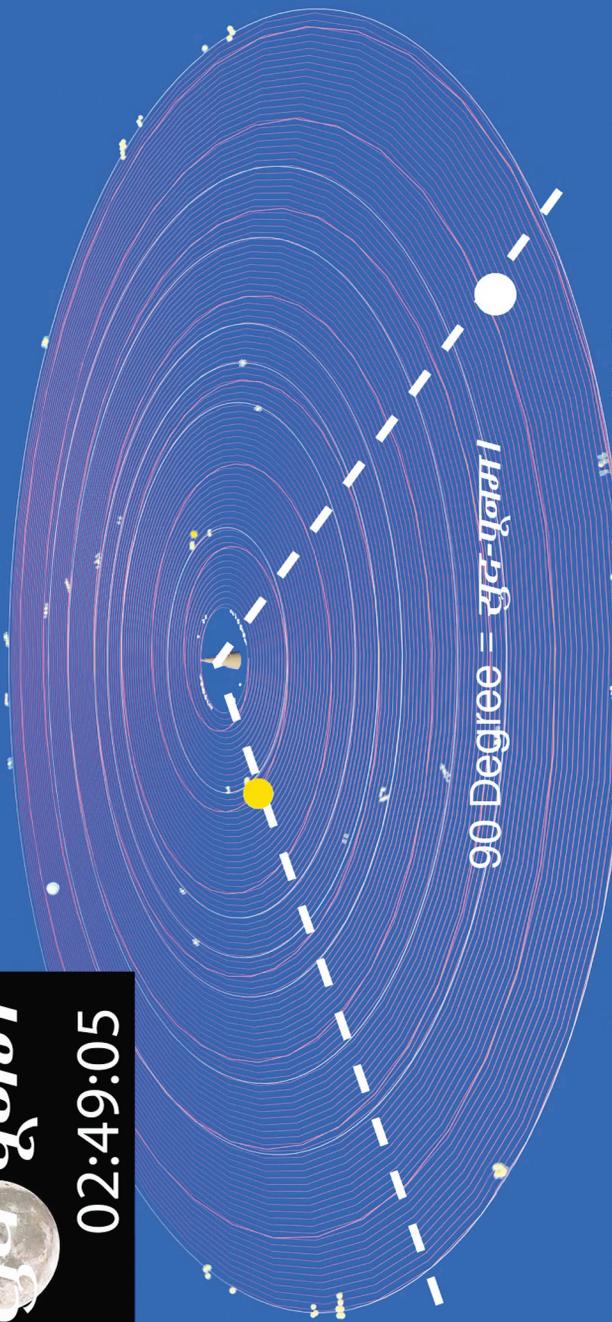
**सुद-9**

11:26:24

नित्य राहु से ढकने ओर खोलने से बन रही तिथियां



 **मूढ-पूणम**  
02:49:05



सूर्य - चन्द्र का बीच के मरु (केंद्र के साथ) स्थाना 90 Degree = सुद-पूणम।

नमो नमः श्री गुरु प्रेम-भुवनभानुसूरीशेभ्यः

## तिथि मीमांसा

(जैन ग्रन्थों के आधार पर तिथि से सम्बन्धित टोस चर्चा-विचारणा)  
**ज्योतिषचक्र का व्यक्ति-समुदाय पर होने वाली असर का रहस्य**

विश्व के सभी पदार्थ भले वह जीव हो या जड़, सभी पर द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव की एक निश्चित असर होती दिखाई देती है। कैमैस्ट्री के सूत्रों के अनुसार  $O_2 =$  ऑक्सीजन (प्राणवायु),  $O_3 =$  ओजोन (जहरीली वायु) होती है। विज्ञान के अनुसार मात्र एक व्यावहारिक परमाणु द्रव्य की इतनी ताकत है कि वह प्राणवायु को प्राणघातक वायु में रूपान्तरिक कर देता है। सर्वज्ञ भगवन्त तो कहते ही हैं, कि प्रत्येक द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपनी विशेष असर होती है, जो कभी लाभदायी तो कभी हानिकारक होती है। ये असर समष्टिगत या व्यक्तिगत, दोनों प्रकार से होती है। इस प्रकरण में काल द्रव्य का विशिष्ट चिन्तन किया गया है।

वर्तमान में भरत क्षेत्र में जब हुण्डा अवसर्पिणी काल चल रहा है, तो काल का अधिकतम नकारात्मक असर समष्टिगत रूप से हो रहा है। यहाँ प्रश्न उठता है, कि जीव और जड़ सृष्टि पर एक साथ ऐसी नकारात्मक असर डालने वाले तत्व क्या है ? उसका स्वरूप कैसा है ? वास्तव में काल के प्रवाह में हर पदार्थ या वस्तु के अलग-अलग स्वरूप, पर्याय या अवस्थाओं का सर्जन, विसर्जन या रूपान्तरण होता रहता है। छः द्रव्यों में जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल का समावेश होता है। काल का समावेश अजीव के उत्तरभेद में होता है। **प्रस्तुत निबन्ध में काल के (और इसकी शुभाशुभ असरों में) परिवर्तन का स्वरूप ज्योतिष के विविध भेद, सूर्य, चन्द्र, राहु (नक्षत्र और ग्रहों) के विमानों की गति से (जो भिन्न-भिन्न रत्नों से बने हैं) और उनके द्वारा निर्मित होने वाली तिथि के गणित के अनुसार समझाया गया है।**

<sup>1</sup>इन रत्नों के प्रकाश की विशिष्ट असर मध्यलोक के सभी पदार्थों पर होती है। यहाँ विशेष रूप से यह बात उल्लेखनीय है कि काल के साथ ज्योतिष चक्र में होने वाले परिवर्तनों के कारण ज्योतिष चक्र के विविध प्रकार

१. स्यणियर-दिणयराणं नक्खत्ताणं च महागहाणं ।

चारविसेसेण भवे सुहदुक्खविही मणुस्साणं ॥ (देविंदत्थओ पयत्ता-गा.१३९)

के विमानों की सतह के रत्नों के तेज की ऊर्जा की असर भी समस्त ढाई द्वीप के क्षेत्र में परिवर्तन प्राप्त करती रहती है। ढाई द्वीप के एक क्षेत्र में, अलग-अलग क्षेत्रों में, एक काल या अलग-अलग काल में ये असर अच्छी या खराब हो सकती है। ढाई द्वीप के बाहर स्थित असंख्य द्वीप और समुद्रों के आकाश में स्थित ज्योतिष विमान स्थिर या अचल होने के कारण वहाँ इस प्रकार की परवर्तित असर देखने को नहीं मिलती। इसलिए ढाई द्वीप से जुड़े काल की ज्योतिष विमानों द्वारा होने वाली अशुभ असर से बचने या शुभ असर का अधिक लाभ पाने के लिए ज्योतिष चक्र के परिवर्तित होने वाले शुभ-अशुभ मुहूर्त और सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, ग्रह आदि के चाल के विशिष्ट सामंजस्य<sup>१</sup> से बनने वाले शुभ-अशुभ योगों की शास्त्रों में सूक्ष्मता और विस्तार से विचारणा की गई है। ढाई द्वीप में सूर्य, चन्द्र आदि के स्थान सतत बदलते रहते हैं। तारों, ग्रहों और नक्षत्रों के भी परस्पर योग होने के उपरान्त भी (१) कल्पवृक्ष वाले युगलिक क्षेत्र में इस ऊर्जा का असर नहीं होता, (२) महाविदेह में भी अल्प असर होता है, किन्तु (३) भरत-ऐरवत क्षेत्र में अधिकतम प्रभाव होता है, इसलिए विशेष परिवर्तन वहाँ ही होता है।

उपरान्त आगमों में बताए अनुसार खगोलीय घटनाओं को दो विभागों में बाँटा जा सकता है। (१) **नित्य घटना, और (२) नैमित्तिक घटना**। अतः खगोलीय घटना की असर भी उपरोक्त दो प्रकार से होती है— (१) **नित्य असर** = सूर्य, चन्द्र, राहु और नक्षत्रों के दैनिक स्थान के आधार पर निश्चित होती है, और (२) **नैमित्तिक असर** = सूर्य-चन्द्रग्रहण और निश्चित नक्षत्रों का ग्रह, सूर्य और चन्द्र के साथ हुए योगों से होने वाली असर। जैन आगमों में तो सूर्य और चन्द्र की दैनिक गति और स्थान आदि का सूक्ष्म रूप से निरूपण दिखाया गया है, और उसके आधार पर गौण रूप से तिथि की व्यवस्था की गई है। साथ ही साथ **चन्द्र के साथ सतत घूमते नित्यराहु की बात बताकर तिथि निर्माण का मुख्य कारण राहु की गति को दिखाया गया है**। इस प्रकार राहु के रत्नों का प्रकाश और चन्द्र के रत्नों का प्रकाश—ये दोनों अलग-अलग पद्धति से रोज आकाश में एकत्र होते हैं, इसलिए इनकी असर ढाई द्वीप की जीवसृष्टि पर पड़ती है। **इसलिए तिथि का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है।**

१. रयणियर-दिणयराणं नकखत्ताणं च महागहाणं च ।

चारविसेसेण भवे सुहदुक्खविही मणुस्साणं ॥ (देविंदत्थओ पयन्ना-गा.१३९)

# ज्योतिष-खगोलीय ग्रन्थों में

## तिथि की मान्यता

(जैन एवं अन्य साहित्य की दृष्टि से)

सूर्यप्रज्ञप्ति उपांग सूत्र ४८/४९ में प्रभु से प्रश्न पूछा गया, कि दिन और रात्रि कितने हैं और वे कौन-कौनसे हैं ? प्रभु इसका उत्तर देते हुए कहते हैं, कि **पक्ष के** १५ दिन और १५ रात्रियाँ होती है, प्रथम दिवस, द्वितीय दिवस... पन्द्रहवां दिवस, इसी प्रकार प्रथम रात्रि, द्वितीय रात्रि...पंद्रहवीं रात्रि ।

<sup>१</sup>ता कहां ते दिवसा आहियत्तिवड्ज्जा ? , ता एगमेगस्स णं **पक्खस्स** पनरस **दिवसा** पं.तं.-पडिवादिवसे बितियदिवसे जाव पण्णरसे दिवसे, ता एतेसि णं पण्णरसण्हं दिवसाणं **पन्नरस** नामधेज्जा पं.तं. <sup>१</sup>पुव्वंगे <sup>२</sup>सिद्धमणोरमे य ततो <sup>३</sup>मणोरहे (हरे) चेव । <sup>४</sup>जसभद्दे य <sup>५</sup>जसोधर <sup>६</sup>सव्वकामसमिद्धेति य ॥१॥ <sup>७</sup>इंद <sup>८</sup>मुद्धाभिसित्ते य सोमणस धणंजए य बोद्धव्वे । अत्थसिद्धे <sup>९</sup>अभिजाते <sup>१०</sup>अच्चासणे य <sup>११</sup>सतजए ॥२॥ <sup>१२</sup>अग्गिवेसे=उवसमे दिवसाणं नामधेज्जाइं । ता कहां ते **रातीओ** आहिताति वदेज्जा ? , ता एगमेगस्स णं **पक्खस्स** पण्णरस्स **राईओ** पण्णत्ताओ, तं जहा पडिवा राई बिदिया राई जाव पण्णरसा राई, ता एतासि णं पण्णरसण्हं राईणं पण्णरस नामधेज्जा पण्णत्ता, तं <sup>१</sup>उत्तमा य <sup>२</sup>सुणक्खत्ता, <sup>३</sup>एलावच्चा <sup>४</sup>जसोधरा । <sup>५</sup>सोमणसा चेव तथा <sup>६</sup>सिरिसंभूता य बोद्धवा ॥१॥ <sup>७</sup>विजया य <sup>८</sup>विजयंता <sup>९</sup>जयंति <sup>१०</sup>अपराजिया य <sup>११</sup>गच्छा य । <sup>१२</sup>समाहारा चेव तथा <sup>१३</sup>तेया य तथा य <sup>१४</sup>अतितेया ॥१॥ <sup>१५</sup>देवाणंदा=निरती रयणीणं णामधेज्जाइं ॥ (सूत्रं-४८) दसमस्स पाहुडस्स चउद्दसमं पाहुपाहुडं समत्तं ॥

दूसरा प्रश्न पूछा गया, कि तिथि किसे कहते हैं ? तो प्रभु उत्तर देते हैं, कि तिथि दो प्रकार की है, दिन की तिथि और रात्रि की तिथि । फिर उनके नाम दिखाए गए हैं ।

ता कहां ते **तिही** आहिता ति वदेज्जा ? तत्थ खलु इमा **दुविहा तिही** पण्णत्ता, तं जहा दिवसतिही राईतिही य, ता कहां ते दिवसतिही आहितेति

1. ता कए ते दिवसाणं नामधेज्जा आहिता ति वदेज्जा ।—चंद्रप्रज्ञप्ति-सूत्रम्

वदेज्जा ? , ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस २ दिवसतिही पण्णता , तं-<sup>१</sup>णंदे , <sup>२</sup>भद्दे <sup>३</sup>जए <sup>४</sup>तुच्छे <sup>५</sup>पुण्णे पक्खस्स पंचमी पुणरवि <sup>६</sup>णंदे <sup>७</sup>भद्दे <sup>८</sup>जए <sup>९</sup>तुच्छे <sup>१०</sup>पुण्णे पक्खस्स दसमी पुणरवि <sup>११</sup>णंदे <sup>१२</sup>भद्दे <sup>१३</sup>जये <sup>१४</sup>तुच्छे <sup>१५</sup>पुण्णे पक्खस्स पण्णरसी , एवं ते तिगुणा तिहीओ सव्वेसिं दिवसाणं , कहां ते **राईतिही** आहितेति वदेज्जा ? एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस राईतिही पं . , तं-<sup>१</sup>उग्गवती <sup>२</sup>भोगवती <sup>३</sup>जसवती <sup>४</sup>सव्वसिद्धा <sup>५</sup>सुहणामा पुणरवि <sup>६</sup>उग्गवती <sup>७</sup>भोगवती <sup>८</sup>जसवती <sup>९</sup>सव्वसिद्धा <sup>१०</sup>सुहणामा पुणरवि <sup>११</sup>उग्गवती <sup>१२</sup>भोगवती <sup>१३</sup>जसवती <sup>१४</sup>सव्वसिद्धा <sup>१५</sup>सुहणामा , एते तिगुणा तिहीओ सव्वसिं रातीणं (सूत्रं ४९) दसमस्स पाहुडस्स पण्णरसमं पाहुडपाहुडं समतं ॥

अब सबसे पहले जिज्ञासा होती है , कि दो प्रश्न पूछे गए और प्रभु ने दो बार उत्तर दिया । तो क्या दिन और तिथि , इन दोनों के बीच कोई भेद है या नहीं ? दोनों एक ही हैं या अलग-अलग हैं ? इसका निर्णय होना चाहिए ।

एक पक्ष = १५ दिन + १५ रात्रि , और

१५ तिथि = १५ दिवस तिथि + १५ रात्रि तिथि होती है ।

एक और दो प्रश्न पूछे गए और दो उत्तर दिए गए , इसलिए लगता है कि दोनों के बीच भेद अवश्य होगा , उपरान्त टीकाकार इस बात का समर्थन भी करते हैं ।

**ता कहां ते दिवसा आहियत्तिवइज्जा ? (सूत्र ४८)**

**ता कहां ते तिही आहिता ति वदेज्जा ? (सूत्र ४९)**

टीका में प्रश्न उठाया गया है , कि **ननु दिवसेभ्यस्तिथीनां कः प्रतिविशेषः येन एताः पृथक् पृच्छयन्ते ?** (टीका)

तथा काल लोक प्रकाश के सर्ग-२८ में कहा हैः

**अहोरात्र तिथीनां च विशेषोऽयमुदीरितः ।**

**भानूत्पन्ना अहोरात्रास्तथयः पुनरिन्दुजाः ॥७४८॥**

तो दूसरी ओर दोनों के बीच अभेद होगा , ऐसा लगता है ,

क्योंकि तिथि के दो प्रकार बताए हैं—दिन की तिथि और रात्रि की तिथि । इसलिए १५ दिन की तिथि और १५ रात्रि की तिथि एक महीने में बताई गई । (अहोरात्र यानि , एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का कुल

समय) अब यदि तिथि अहोरात्रि के माप जितनी हो, यानि कि **अहोरात्रि और तिथि समान माप के हो, या अहोरात्रि और तिथि के बीच अभेद हो, तो ही ३० अहोरात्रि में ३० तिथि समान रूप से पूर्ण होगी**। अहोरात्रि के दिवस में दिन की तिथि होगी और अहोरात्रि की रात्रि में रात्रि की तिथि होगी, इसलिए दोनों के बीच भेद नहीं रहेगा। **किन्तु यदि तिथि का माप अहोरात्रि से छोटा या बड़ा हो**, उपरान्त दिन की तिथि और रात्रि की तिथि, इस प्रकार **तिथि के दो भेद माने गए होने के कारण** तथा एकम, द्वितीया आदि किसी तिथि का माप छोटा (बड़ा) माना होने के कारण (a) कभी पहले दिन में और फिर रात में, (b) कभी पहले रात में और बाद में दिन में आती है। इसलिए यदि तिथि का माप अहोरात्रि से छोटा हो, तो (१) दिन की तिथि और रात्रि की तिथि पूर्ण हो फिर भी अहोरात्रि (एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का अन्तराल) पूर्ण नहीं होगी, और उसी अहोरात्रि की रात्रि के अन्तिम भाग में दूसरी अहोरात्रि के प्रारम्भ में शुरु होने वाली दिन की तिथि चालू होने की आपत्ति आएगी। यदि तिथि बड़ी होगी, तो अहोरात्रि पूर्ण होने के बाद भी प्रथम अहोरात्रि की रात्रि की तिथि बाकी बचने पर दूसरे अहोरात्रि के दिन (सुबह) में उस पूर्व के अहोरात्रि की रात्रि की तिथि के इकट्ठा होने का दोष आएगा।

**उदाहरण :-** दिन की तिथि के नाम क्रमशः नन्दा, भद्रा, जया आदि हैं, और रात की तिथि के नाम उग्रवती, भोगवती, यशवती आदि हैं।

अहोरात्रि	दिन की तिथि का नाम	रात्रि की तिथि का नाम	तिथि
प्रथम	नंदा	उग्रवती	प्रतिपदा
द्वितीय	भद्रा	भोगवती	द्वितीया
तृतीय	जया	यशवती	तृतीया
चतुर्थ	तुच्छा	सर्वसिद्धा	चतुर्थी
पंचम	पूर्णा	शुभनामा	पंचमी
षष्ठ	नन्दा	उग्रवती	षष्ठी
सप्तम	भद्रा	भोगवती	सप्तमी
अष्टम	जया	यशवती	अष्टमी
नवम	तुच्छा	सर्वसिद्धा	नवमी

दशम	पूर्णा	शुभनामा	दशमी
एकादश	नन्दा	उग्रवती	एकादशी
द्वादश	भद्रा	भोगवती	द्वादशी
त्रयोदश	जया	यशवती	त्रयोदशी
चतुर्दश	तुच्छा	सर्वसिद्धा	चतुर्दशी
पंचदश	पूर्णा	शुभनामा	पूर्णिमा/अमावस्या

अब उदाहरण के रूप में, प्रथम अहोरात्रि में सूर्योदय के साथ दिन में नन्दा तिथि, सूर्यास्त के साथ रात में उग्रवती तिथि होती है। अब प्रश्न यह है, कि नन्दा और उग्रवती तिथि छोटी होने से पूर्ण होकर भी प्रथम अहोरात्रि अब तक पूर्ण नहीं हुई हो (थोड़ा भाग बाकी हो) तो उस समय उस शेष भाग वाली प्रथम अहोरात्रि में कौनसी तिथि होगी ?

**उत्तर :** दूसरे दिन की भद्रा तिथि होगी, क्योंकि रात्रि की तिथि पूर्ण हुई, अर्थात् प्रतिपदा पूर्ण हुई माने फिर भी उग्रवती तिथि चल रही है, ऐसा माने तो यह नहीं बैठेगा (क्योंकि रात्रि की तिथि छोटी होने के कारण पूर्ण हो चुकी है)। और प्रथम अहोरात्रि की रात की शेष में उग्रवती तिथि द्वितीया (भद्रा) तिथि है, ऐसा मानेंगे तो भी नहीं चलेगा, क्योंकि यदि सभी ऐसा समझते होंगे कि, भद्रा तिथि तो दूसरे दिन के सूर्योदय से ही चालू होती है, तो मुश्किल होगी। इस प्रकार अहोरात्रि और तिथि के बीच भेद मानें (अर्थात् तिथि को अहोरात्रि से छोटी मानें) तो नन्दा आदि तिथियों में मेल करना कठिन होगा। इसलिए अहोरात्रि और तिथि के बीच अभेद मानना चाहिए। यह एक आपाततः निष्कर्ष निकला, किन्तु अब यदि ऐसा मानें तो अहोरात्रि का क्या तात्पर्य हुआ ? और तिथि का क्या अर्थ हुआ ? ये दो प्रश्न क्यों पूछे गए ? इस बात का भ्रम होता है, इसलिए इस प्रश्न का समाधान पाना मुश्किल है। दोनों का समन्वय किस प्रकार करें, यह प्रश्न उठता है। इस प्रश्न का प्रत्युत्तर देने से पूर्व **सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र-५७** की गहराई में जाते हैं।

**ता पमाणसंवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते, तं :- नक्खत्ते, चंदे, उडू, आइच्चे, अभिवड्ढिए ॥**

संवत्सर के अनेक प्रकार हैं, उनमें एक का नाम **प्रमाणसंवत्सर** है,

यह प्रमाणसंवत्सर भी पांच प्रकार का है—नक्षत्र संवत्सर, चंद्र संवत्सर, ऋतु संवत्सर, आदित्य संवत्सर और अभिवर्धित संवत्सर। इन पांच में से ऋतु संवत्सर व्यवहार में निरंश (पूर्णांक) होने के कारण प्रसिद्ध है। सूर्यप्रज्ञप्ति, ज्योतिष करण्डक आदि शास्त्रों में बताया है, कि :-

१११ कम्मो निरंसयाए मासो ववहारकारणो लोए ।

सेसाओ संसयाए ववहारो दुक्करो घित्तु ॥१११

(ज्योतिष करण्डक ४ था प्राभृत-गाथा १४/१५,  
और सूर्यप्रज्ञप्ति सू. ५७ की टीका में उद्धरण)

बाकी के संवत्सर का माप अपूर्णांक होने के कारण व्यवहार में ग्रहण करना कठिन होता है। इन पांचों संवत्सर का प्रमाण इस प्रकार है :-

**प्रमाण संवत्सर के पांच प्रकारों का नाम :-**

माप (दिन में)	चंद्र	सूर्य	नक्षत्र	अभिवर्धित	ऋतु
	(Lunar Year)	(Solar Year)			
	३५४ $\frac{१२}{६२}$	३६६	३२७ $\frac{५१}{६७}$	३८३ $\frac{४४}{६२}$	३६०
	(अहोरात्रि)	(अहोरात्रि)	(अहोरात्रि)	(अहोरात्रि)	(अहोरात्रि)

अब व्यवहार में उपयोगी ऋतुमास हेतु सूर्यप्रज्ञप्ति के सूत्र ५७ की टीका में बताया है।

तथा चोक्तं :- “वे नालिया मुहुतो सट्ठी उण नालिया अहोस्तो ।  
पन्नरस अहोस्ता पक्खो तीसं दिणा मासो ॥१॥  
संवच्छरो उ बारस मासा पक्खाय ते चउवीसं ।  
तिन्नेव सया सट्ठा हवंति राइंदियाणं तु ॥२॥

१. काललोक प्रकाश सर्ग-२८, पृ.५७/५८. ऊपर दिए गए श्लोक ३६६ के बाद भिन्न-भिन्न मास के प्रयोजन (संवत्सर=१२ मास, ऋतु संवत्सर का मास जो ऋतु मास है) के अन्तर्गत ऋतुमास का प्रयोजन दिखाते हुए कहा है, कि ऋतुमास परिपूर्ण ३० अहोरात्रि स्वरूप निरंश (पूर्णांक) होने के कारण लोकव्यवहार कारक है। इसीलिए इस ऋतुमास को शास्त्रों में कर्ममास भी कहा है। अर्थात् पूर्ण ३० दिवस का होने के कारण ब्याज आदि की गिनती इत्यादि लोकव्यवहार चलने में कर्म (=ऋतु) मास का ज्ञान उपयोगी है।

**तिथि मीमांसा**

एसो उ कमो भणिओ निअमा संवच्छरस्स कम्मस्स ।  
कम्मोति सावणोत्ति य उउ इत्तिय तस्स नामाणि ॥३॥

दो नालिका (=घड़ी)=मुहूर्त, ६० नालिका/३० मुहूर्त=१ अहोरात्रि

१५ अहोरात्रि = १ पक्ष, २ पक्ष या ३० दिन = १ मास

१२ मास / २४ पक्ष = १ वर्ष

१ वर्ष = ३६० दिन, अर्थात् ऋतु या कर्म या सावन संवत्सर को १ वर्ष कहते हैं। जैसे ३६० दिन = १ कर्मवर्ष और ३६० दिन ÷ १२ = ३० दिन का एक कर्ममास या ऋतुमास या सावनमास कहलाता है, तथा ३० दिन ÷ ३० = १ कर्मदिवस होता है। इसी प्रकार :

१ चंद्र वर्ष (Lunar year) =  $३५४ \frac{१२}{६२}$  दिन, तथा

$३५४ \frac{१२}{६२}$  दिन ÷ १२ =  $२९ \frac{३२}{६२}$  दिन, अर्थात् पूरे २९ दिन + एक दिन के ६२ भाग में से ३२ भाग = १ चन्द्र मास (Lunar month) होता है।

या  $२९ \frac{३२}{६२} = २९ \times ६२ + ३२ = १७८९ + ३२ = \frac{१८२०}{६२}$

इस प्रकार  $\frac{१८२०}{६२}$  अहोरात्रि = १ चन्द्र मास (Lunar month) तथा

$२९ \frac{३२}{६२}$  दिन ३० =  $२९ \frac{३२}{६२}$  मुहूर्त का एक चन्द्र दिन =(Lunar day) होगा।

इस प्रकार चन्द्र का १ दिन (Lunar day) या चन्द्र की १ तिथि दोनों एक ही चीज है। इसी प्रकार १ सूर्य वर्ष से एक सूर्य दिवस या १ सूर्य तिथि दोनों एक ही है। एक कर्मवर्ष से एक कर्म दिवस (सावन दिवस) अर्थात् एक कर्म (सावन) तिथि प्राप्त होती है।

हिन्दू परम्परा में तो एक मान्यता ऐसी है, कि दिन और तिथि दोनों एक ही हैं। दिन से अलग तिथि की कोई परम्परा वैदिक काल में नहीं थी। इस सन्दर्भ में शिवराज कौडिन्य की व्याख्या सहित लगधमुनि कृत "वेदांग ज्योतिषम्" नामक ग्रन्थ में व्याख्याकार ने अन्य प्राचीन ग्रन्थों के सूत्रों के आधार पर सावन दिन और तिथि, दोनों एक ही हैं ऐसा बताया है।

**अहोरात्रेभ्यः स्वाहाऽर्धमासेभ्यः स्वाहा, मासेभ्यः स्वाहा ऋतुभ्यः स्वाहाऽऽर्तवेभ्यः स्वाहा संवत्सराय स्वाहा इति [माध्यन्दिनीयवाजसनेयि-शुक्लयजुर्वेदमंत्र संहितायाम् (२२/२८)]**

और इस सूत्र का अर्थघटन व्याख्याकार ने जो किया, वो उनके ही शब्दों में इस प्रकार है :-

वैदिकपरंपरायां खलु सामान्यतया **तिथिरहोरात्रात्मकः सावनदिना-त्मको** वाऽपि स्वीक्रियते इति स्फुटतयाऽवगम्यते । तत्र वेदमंत्रसंहिता ब्राह्मणग्रंथेषु **अहोरात्राऽर्धमास-मासादीनां** क्रमबद्धतया उल्लेखस्य दर्शनात् तत्र **तिथिनामहो-रात्रात्मकतायाः स्वीकृतत्वमवगम्यते ॥**

इसके उपरान्त उसमें बताया है कि "वैदिकवाङ्मये **तिथिशब्दप्रयोग** एव दुर्लभः तिथिशब्दप्रयोगयोग्येषु स्थलेषु तथाऽ**हशब्दस्यैव** प्रयोगो दृश्यते । एतेनाऽपि वैदिक परंपराया **तिथेरहोरात्रात्मकत्वं** स्वीकृतमिति गम्यत एव ।"

उपरान्त जिनमत में भी कल्पसूत्र में ही भगवान के ५ कल्याणकों के सूत्रों में, यानि कुल २० स्थानों में कहीं तिथि शब्द का उपयोग नहीं है, किन्तु अहोरात्रि, पक्ष, दिवस आदि शब्द ही प्रयुक्त हुए हैं ।

"तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जे से गिम्हाणं चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे आसाढसुद्धे तस्स णं आसाढसुद्धस्स **छट्ठी पक्खेणं...**" (च्यवन का सूत्र) इसी प्रकार जन्म के सूत्र में "तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जे से गिम्हाणं पढमे मासे दुच्चे पक्खे चित्तसुद्धे तस्स णं चित्तसुद्धस्स **तेरसीदिवसेणं** नवण्हं मासाणं बहुपडिपुत्राणं अद्धट्ठमाणं राइंदिआणं विइक्कंताणं..." इसी प्रकार बाकी के प्रभु श्री ऋषभ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ के ५-५ कल्याणकों और वीर प्रभु के शेष ३ कल्याणकों के यानि कुल १८ सूत्रों में भी **कहीं भी तिथि शब्द** का उल्लेख नहीं हुआ ।

प्रभु का नाम	कल्याणक का नाम		ऋतु	महिना	पक्ष	विशेष
महावीर स्वामी	च्यवन	छट्ठी पक्खेणंति	ग्रीष्म	४	८	अ.सु. ६ की रात्रि (पक्ष)
	गर्भ संक्रम	तेरसी पक्खेणं	वर्षा	३	५	आ.व. १३ की रात्रि
	जन्म	तेरसी दिवसेणं	ग्रीष्म	१	२	चै.सु. १३ का दिवस
	दीक्षा	दशमी पक्खेणं	हेमन्त	१	१	मा.व. १० पक्ष दिवस-साँझ

	केवल निर्वाण	दशमी पक्खेणं पण्णरसी पक्खेणं	ग्रीष्म वर्षा	२ ४	४ ७	वै.सु. १० पक्ष दिवस-साँझ का.व. की चरम रात्रि
नेमिनाथ भगवान	च्यवन जन्म दीक्षा केवल निर्वाण	बारसी पक्खेणं पंचमी पक्खेणं छट्टी पक्खेणं पण्णरसी पक्खेणं अट्टमी पक्खेणं	वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा	४ १ १ ३ ४	७ २ २ ५ ८	का.व. १२ का दिवस (रात्रि) श्रा.सु. ५ का दिवस श्रा.सु. ६ का दिवस आ.व. ०) दिवस (रात्रि) अ.सु. ८ का दिवस
पार्श्वनाथ भगवान	च्यवन जन्म दीक्षा केवल निर्वाण	चउत्थी पक्खेणं दसमी पक्खेणं इक्कारसी पक्खेणं चउत्थी पक्खेणं अट्टमी पक्खेणं	ग्रीष्म हेमन्त हेमन्त ग्रीष्म वर्षा	१ २ २ १ १	१ ३ ३ १ २	चै.व.-४ का दिवस पो.व. १० का दिवस पो.व. ११ का दिवस (सुबह) चै.व. ४ का दिवस (प्रभात) श्रा.सु.-८ का दिवस
ऋषभदेव भगवान	च्यवन जन्म दीक्षा केवल निर्वाण	चउत्थी पक्खेणं अट्टमी पक्खेणं अट्टमी पक्खेणं इक्कारसी पक्खेणं तेरसी पक्खेणं	ग्रीष्म ग्रीष्म ग्रीष्म हेमन्त हेमन्त	४ १ १ ४ ३	७ १ १ ७ ५	अ.व.-४ का दिवस चै.व.-८ का दिवस चै.व.-८ का दिवस (साँझ) फा.व. ११ का दिवस (प्रभात) मा.व.-१३ का दिवस

उपरान्त सभी भगवन्तों का जो गर्भकाल दिया है, उसकी भी गिनती प्रायः ऋतु वर्ष (सावन वर्ष) के दिन के अनुसार की हुई लगती है, क्योंकि कहीं भी चन्द्र तिथि का उल्लेख नहीं है।

१) आषाढ़ सुदी ६ + ८२ दिन (गर्भ संक्रमण के दिन) = आसोज वदी-१३, यहाँ चन्द्र तिथि मानें तो आसोज वदी १३ आती ही नहीं। क्योंकि ८२ दिन में साधिक ८३ तिथि समाविष्ट होती है, जिससे आसोज वदी-१३ की जगह आसोज वदी अमावस्या मानने की आपत्ति आती है।

२) तित्थोगाली पयत्रा की ४१५वीं गाथा में १० क्षेत्रों के २४ तीर्थकरों के केवलज्ञान उत्पत्ति के वर्णन में मास-पक्ष के बाद दिन का उल्लेख है, वहाँ भी तिथि शब्द न लेकर दिवस शब्द लिया गया है। **एतो दिवसे पवक्खामि ॥४१५॥**

३) इसके अलावा जूनागढ़ के प्राचीन शिलालेखों का उल्लेख "जैन परम्परा का इतिहास भाग-१" में पृ. २७५ पर किया गया है, उसमें भी उस शिलालेख में तिथि शब्द के स्थान पर दिवस शब्द प्रयुक्त हुआ बताया गया है, जो निम्नलिखित है :-

**"चैत्र शुक्लस्य दिवसे पञ्चमे ५ गिरिनगरे-देवासुरनागयक्षरा-क्षसेन्द्र"**

**४a) पाइअसद्महण्णय मां तिहि** = १५ चन्द्र कलाओं से युक्त काल, **दिवस**, **तारीख** अर्थ लिखा है। चन्द्रप्रज्ञप्ति प्राभृत-१० इसका सन्दर्भ स्थान बताया गया है। और,

**४b) पक्ख = १) १५ दिन-रात (ठाणांग सूत्र) २) सुदी-वदी पक्ष (जीवसमास में से) लिया है। उपरान्त भगवद् गोमण्डल में "पक्ष = १५ सूचक सांकेतिक शब्द"** का अर्थ बताया है।

इस प्रकार, व्याकरण की द्रष्टि से भी तिथि=१५ दिवस अर्थ होता है और पक्ष का अर्थ कर्म मास और चन्द्र मास दोनों का समर्थन करता है। इसलिए **"व्याख्यातो विशेषप्रतिपत्तिः"** न्याय से अर्थघटन नहीं करना चाहिए ?

यानि सूत्र में जो मास-दिन (तिथि) दिए गए हैं, वे सावन दिन हैं नहीं कि चन्द्र दिन, या सावन दिन (सावन तिथि) है, न कि चन्द्र दिन = (चन्द्र तिथि...) क्या ऐसी विचारणा नहीं कर सकते ?

सूत्र का जो अर्थ हम कर रहे हैं-आषाढ़ सुदी-६ की तिथि को या चैत्र सुदी-१३ की तिथि को उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में चन्द्र का योग हुआ, तब प्रभु का च्यवन या जन्म हुआ। इसके स्थान पर आषाढ़ के शुक्ल पक्ष के **छठे दिन (रात)** या चैत्र के शुक्ल पक्ष के **तेरहवें दिन** उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में चन्द्र का योग हुआ तब प्रभु का च्यवन या जन्म हुआ-क्या ऐसा अर्थ नहीं किया जाना चाहिए ? इसलिए **यहाँ महत्त्व चन्द्र और तिथि के योग का नहीं लेकर चन्द्र और नक्षत्र के योग का है, और यह योग सावन वर्ष के जिस महीने के जिस पक्ष के जिस दिन हुआ, उसे इस सूत्र के द्वारा दिखाया गया है।**

अब मूल बात पर आते हैं, कि तिथि और अहोरात्रि के बीच भेद को सूचित करने वाले दो प्रश्न पूछे गए, उनका ऐसा लें कि जो नन्दा, भद्रा आदि तिथियों के नाम हैं, वे और वर्तमान में जो प्रतिपदा, द्वितीया आदि तिथियों के नाम हैं, ये दोनों अलग-अलग हैं। प्राचीन काल में नन्दा-भद्रा

आदि तिथियाँ थी, जिनका वर्तमान में प्रचलन नहीं है और अहोरात्रि शब्द से चन्द्र दिवस, सूर्य दिवस, ऋतु दिवस—इस प्रकार से जब जिसकी विवक्षा हो वह समझे, किन्तु प्रस्तुत सूत्र में (कल्याणक के सूत्र में) ऋतु दिवस, यानि सावन दिवस की ही बात की गई है ऐसा लगता है, क्योंकि वही लोक व्यवहार में उपयोगी है।

या फिर तिथि प्रारम्भ=दिन प्रारम्भ, और तिथि अन्त=रात्रि अन्त, यानि दिन का प्रारम्भ कभी भी हो, नन्दा तिथि का प्रारम्भ ही दिन का प्रारम्भ हो। और रात्रि का अन्त कभी भी हो, उग्रवती तिथि का अन्त रात्रि का अन्त हो, ऐसा अर्थघटन करना चाहिए। और

• यदि कल्याणक तिथियाँ कर्म वर्ष का अनुसरण करती हैं तो बाकी की पर्व तिथियाँ चन्द्र वर्ष का अनुसरण करेगी या कर्म वर्ष का ? आयुष्यबंध चन्द्रतिथि पर आधारित है या कर्मतिथि पर ?

• बृहदकल्पभाष्य के सूत्र—६ (मासकल्प अधिकार) के श्लोक नं. ११२८/२९/३० में :—

कप्पइ निग्गंथाणं हेमंत-गिम्हासु एगं मासं वत्थए ॥ पगयं पुण कम्ममासेणं ॥११३०॥

दिखाया है, अर्थात् मासकल्प कर्म मास से है, आलोचना कर्म मास से है, तो आयुष्य बंध चन्द्र तिथि के आशय से है या कर्म तिथि के ?

अब इस तरफ काल लोकप्रकाश में

• सर्वे कालविशेषा ये, ख्याता वर्षशतादयः ।

पूर्वाङ्ग पूर्वप्रमुखाः, पत्यवाद्धर्यादयोऽपि च ॥२८७॥

• कर्मणां स्थितयः सर्वा, आयुष्यखिलदेहिनाम् ।

सूर्यवर्ष प्रमाणेन, ज्ञेयान्येतानि धीधनैः ॥२८८॥ सर्ग—२८

यदि सभी जीवों का आयुष्य सूर्य वर्ष के अनुसार मापना होता, तो आयुष्यबंध भी सूर्य वर्ष के अनुसार ही हो सकता है न ?

तो फिर यही प्रश्न उठता है कि, आयुष्य बंध कैसे होगा ? चन्द्र तिथि के अनुसार, कर्म तिथि के अनुसार या सूर्य तिथि के अनुसार होता है ?

क्या इस सन्दर्भ में निष्पक्ष बनकर संशोधनात्मक विचारणा नहीं होनी चाहिए ?

## तिथि विषयक :- जैन पंचांग का विच्छेद मानें या नहीं ?

तिथि विषय के जैन पंचांग का विच्छेद हुआ है या नहीं, इस विषय में चर्चा करने से पूर्व इतिहास की ओर थोड़ा दृष्टिपात करते हैं।

(१) दिवाली (आसोज वदी अमावस्या) शास्त्रीय (कार्तिक वदी अमावस्या) के स्वाति नक्षत्र में प्रभु वीर का निर्वाण।

(२) प्रभु निर्वाण का ३ वर्ष  $८\frac{१}{२}$  महीने, अर्थात् वीर सम्वत् चौथे में पांचवें आरे की शुरुआत।

(३) अत्यन्त गहन, गम्भीर पदार्थों से युक्त कालिकसूत्र सूर्यप्रज्ञप्ति और चन्द्रप्रज्ञप्ति की रचना प्रायः इसी समय की है।

(४) वी.सं. १७० के आस-पास चौदहपूर्वधर श्री भद्रबाहुस्वामीजी द्वारा सर्वप्रज्ञप्ति सूत्र पर निर्युक्ति की रचना, अर्थात् उपांग होने पर भी वी.सं. १७० पूर्व ही सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र रचित हुआ। उपरान्त कालिकसूत्र में सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र और चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र का समावेश किया गया है, यही सूचित करता है कि यह अति गम्भीर और रहस्यपूर्ण सूत्र है।

(५) सूर्यप्रज्ञप्ति और चन्द्रप्रज्ञप्ति के मूल सूत्र में सूर्य, चन्द्र और नक्षत्रों से सम्बन्धित सिद्धान्तों की समझ दी गई है, और साथ ही साथ उनके मूल सूत्र में अतिरात्रि, अवमरात्रि, चन्द्रदिन, चन्द्रमास, चन्द्र संवत्सर, अधिक मास, अधिक वर्ष आदि की जानकारी मिलती है।

(६) इसके उपरान्त अन्य दर्शन के **लगधमुनि** कृत **वेदांग ज्योतिष** के ग्रन्थ में (जो अति प्राचीन माना जाता है), जिसमें यजुर्वेद, ऋग्वेद, अथर्ववेद आदि के पाठों का उपयोग हुआ है, उसमें प्राप्त अधिकतर तिथि की जानकारी या अधिक मास की जानकारी भी **सूर्यप्रज्ञप्ति** और **चन्द्रप्रज्ञप्ति** ग्रन्थ की मान्यता को पुष्ट करती है, जो इस प्रकार है :-

**उदाहरण १ : सूर्य वर्ष का प्रमाण – दिवस, ऋतु, अयन और युगका माप यजुर्वेदपाठीका वेदांगज्योतिषः गाथा १८**

**त्रिंशत्यहनां सषट्षष्टिरब्दःषट् चर्तवोऽयने ।**

**मासा द्वादश सूर्याः स्युरेतत् पंचगुणं युगम् ॥**

३६६ दिन, ६ ऋतुएँ, २ अयन, १२ माह का सूर्य संवत्सर होता है, उसका पांच गुना (५ सूर्य वर्ष) का एक युग होता है।

**सूर्यप्रज्ञप्ति-चन्द्रप्रज्ञप्ति सू. ५७ की टीका में** (१० वां प्राभृत, २० वां प्राभृत प्राभृत)

• "छप्ति उऊपरियद्वा एसो संवच्छरो उ आइच्चो" (ज्योतिषकरण्डक प्रकीर्णम्-४१) = ६ ऋतुओ का परावर्तन सूर्य संवत्सर होता है।

• **तित्र अहोरत्तसया छावद्वा भक्खरो हवइ वासो** = सूर्य संवत्सर में ३६६ अहोरात्रि होती हैं।

• **युगं-पञ्च संवत्सरात्मकं मासानधिकृत्य प्रमीयते, तत्र युगं-प्रागुदित स्वरूपं यदि सूर्यमासैर्विभज्यते ततः षष्टिः सूर्यमासा युगं भवन्ति** = ५ वर्ष आत्मक युग मास की अपेक्षा से मापा जाता है। उपरोक्त स्वरूप वाले युग को सूर्य मास से विभाजित करें तो (१२ मास x ५ वर्ष) = ६० सूर्य मास = १ युग होता है।

**उदाहरण २ : सूर्य, चन्द्र और सावन (ऋतु) का प्रमाण - वेदांग ज्योतिष, गा-३१।**

**सावनेन्दुस्तृमासानां षष्टिः सैकाद्विसप्तिका।**

**द्युत्रिंशत् सावनः सार्द्धः सूर्यः स्तृणां स पर्ययः ॥**

टीकार्थ : स्तृ=नक्षत्र। **स्तृणां** नक्षत्राणां च परावृत्तिरेव स्वकं दिनमित्युक्तं भवति। टीकार्थ-३१ गाथा।

(युग में) सावन मास ६१, चन्द्र मास ६२, नक्षत्र मास ६७ होते हैं, सावन मास ३० दिन का, सूर्य मास  $३०\frac{१}{२}$  दिन का, नक्षत्रमास  $२७\frac{२१}{६७}$  दिन का है।

सूर्यप्रज्ञप्ति सू ५७ की टीका	चन्द्रप्रज्ञप्ति १० वें प्राभृत का २० प्राभृत-प्राभृत
• युगमध्ये सूर्यमासाः षष्टिरिति स्थितं	• षष्टिः सूर्यमासा युगे भवन्ति।
• सावनस्य तु मासा एकषष्टिः।	• युगं यदि कर्ममासैर्विभज्यते ततः एकषष्टिकर्ममासा भवन्ति।

• चन्द्रमासा द्विषष्टिरिति ।

• यदि चंद्रमासैस्तदैव युगं विभज्यते

तदा द्वाषष्टिचंद्रमासा भवन्ति ।

• नक्षत्रमासाः सप्तषष्टिः ।

• युगे सप्तषष्टिनक्षत्रमासा भवन्ति ।

इसके उपरान्त अलग-अलग सूत्र में, टीका में उन महीनों का माप दिन के प्रमाण में ऊपर बताए अनुसार दिखाया गया है ।

### उदाहरण ३ : अधिक मास की निष्पत्ति

**द्वयूनं द्विषष्टिभागेन हेयं सौर्याच्च च पर्वणः ।**

**यत्कृतावुपजायेते मध्येऽन्ते चाऽधिमासकौ ॥३७॥ यजुर्वेदीय वेदांग ज्योतिष**

सूर्य दिवस से पार्वण (चंद्र) दिन बासठ भाग में से (दो) भाग न्यून होता है, इसलिए पांच वर्ष के युग के मध्य और अन्त में अधिक मास उत्पन्न होता है ।

अब सामने **सूर्यप्रज्ञप्ति सू. ५६ की टीका और ज्योतिष करण्डक प्राभृत ३ में** अधिक मास की निष्पत्ति के सन्दर्भ में ऐसा ही कुछ लिखा है :-

**चंदस्स जो विसेसो आइच्चस्स य हविज्ज मासस्स ।**

**तीसइगुणिओ संतो हवइ हु अहिमासगो एक्को ॥**

सूर्य मास और चन्द्र मास के फर्क को ३० से गुणा करें तो एक अधिक मास होता है ।

**सड्डीए अइयाए हवइ हु अहिमासगो जुगद्धंमि ।**

**बावीसे पव्वसए हवइ य बीओ जुगद्धंमि ॥**

चन्द्र के ६० पर्व / पक्ष व्यतीत हो, तब युगार्ध में एक अधिक मास आता है, और कुल १२२ पर्व / पक्ष (६० पर्व + १ अधिक मास + ६० पर्व) व्यतीत होने पर दूसरे युगार्ध में दूसरा अधिक मास आता है ।

इस प्रकार सूर्यप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति, ज्योतिष करण्डक आदि ग्रन्थों के साथ वेदांग ज्योतिष की काफी साम्यता है ।

(७) वी.सं. १८० में हुई वल्लभीपुर की वाचना में मौखिक ज्ञान पुस्तकारुद्ध हुआ । उस समय लिखे गए आगमों में भी तिथि से सम्बन्धित

प्राप्त सारा ज्ञान वर्तमान की प्रचलित मान्यताओं से, अर्थात् आज के लौकिक ज्ञान से भिन्न प्राप्त होता है ।

(८) त्यारबाद वी.सं. १४८६ में श्री हर्षभूषणगणि द्वारा रचित 'पर्युषण स्थितिविचार' में तिथि से सम्बन्धित जानकारी को केन्द्र में रखते हुए जैन टिप्पणक का विच्छेद बताया है । ना कोई गच्छाधिपति, ना कोई आचार्य, ना कोई आचार्य मण्डल और ना ही गीतार्थ-सम्मेलन द्वारा, किन्तु सर्वप्रथम एक व्यक्तिरूप मुनिप्रवर द्वारा दिखाए गए 'जैन पंचांग का विच्छेद' के विचार पर तटस्थ बुद्धि से कष, छेद और ताप की कसौटी द्वारा विचार करने का क्या जैन संघ को अधिकार नहीं है ?

(९) तत्पश्चात् पू. उपाध्याय विनयविजयजी द्वारा रचित लोकप्रकाश ग्रन्थ में तिथि के सन्दर्भ में पूर्वोक्त प्राचीनकाल की ही जानकारी मिलती है ।

क्या उपरोक्त जानकारी तिथि से सम्बन्धित गणित जानने के लिए आज भी जैन ग्रन्थों में स्पष्टता है, यह बताने हेतु पर्याप्त मानी जाएगी या नहीं ?

क्या सूर्यप्रज्ञप्ति आदि लोकोत्तर ग्रन्थ और वेदांग ज्योतिष आदि लौकिक ग्रन्थ तिथि परम्परा का जो ज्ञान देते हैं, उसे देखते हुए उस ज्ञान-परम्परा का विच्छेद मानना उचित है या नहीं ?

# संशोधन: पूर्वाचार्यों की विद्वत्ता पर

## शंका या श्रद्धा ?

उपरोक्त ठोस शास्त्रपाठ उपलब्ध होने के बावजूद भी वर्तमान लौकिक पंचांगों में पाई जाने वाली तिथि से सम्बन्धित जानकारी उन शास्त्रपाठों से भिन्न है, और शास्त्रों को किनारे रखकर शास्त्रों से भिन्न लौकिक स्वरूप को हमने स्वीकार किया है, तो अब प्रश्न यह उठता है कि (१) लोकोत्तर शास्त्रों और तदनुसारी वेदांग ज्योतिष आदि लौकिक ग्रन्थों से भी भिन्न परम्परा आज क्यों चल रही है ? इसका कोई शास्त्रोक्त या तर्कसंगत कारण है भी या नहीं ? । और यह (आधुनिक) परम्परा निश्चित रूप से कब से स्वीकृत हुई ?

(२) अन्य धर्म के विद्वान 'वेदांग ज्योतिष' ग्रन्थ की टीका में कुन्दनलाल शर्मा द्वारा प्रकाशित 'वैदिक वाङ्मय का बृहद इतिहास' पुस्तक का आधार देते हुए लिखते हैं, कि जो शक वंश बाहर से आया था, और उसके बाद उनके जैसे जो अन्य लोग आए, उनके द्वारा या विक्रम की (१ली) ही शताब्दी में ग्रीक यवन संस्कृति का आक्रमण हुआ, और उस समय वैदिक परम्परा के कुछ विद्वानों ने अपनी परम्परा छोड़कर पाश्चात्य परम्परा स्वीकार की ।

किन्तु जैनाचार्यों ने अन्त तक अपनी शास्त्रोक्त परम्परा नहीं छोड़ी थी । तो फिर आज जैन परम्परा का विच्छेद मानकर लौकिक पाश्चात्य परम्परा हमने स्वीकार की है, उसका कोई प्रामाणिक समझा जा सके, ऐसा कोई कारण भी है या नहीं ?

(३) वैदिक काल का अधिक मास का आयोजन भी हमारी जैन मान्यता से मेल खाता है, और नेपाल के शिलालेखों की जानकारी इसका प्रमाण देती है, जिसकी बात हमने पहले भी की है ।

(४) 'लोक प्रकाशकार' भी यदि अपने शास्त्रों में हमारी शास्त्रोक्त परम्परा का ही उल्लेख करते हैं, तो फिर लौकिक पाश्चात्य का स्वीकार हमने कब से किया ? क्यों किया ?

इन चार प्रश्नों का समाधान पाने के लिए पूर्वग्रह रहित बनकर (उपलब्ध निर्दोष सामग्रियों द्वारा) संशोधन-सम्पादन करना क्या पूर्वाचार्यों की आशातना कहलाएगी ? प्राचीनकाल में टेक्नोलॉजी के अभाव में इतने सूक्ष्म गणित की परम्परा नहीं थी, उस समय बाल जीवों को ज्ञान प्राप्त हो, इस हेतु गणित की सरलता के लिए ही स्थूल व्यवस्था की गई होगी। इसमें **प्रत्यक्ष के साथ मेल करने के लिए निश्चित समयान्तर में संस्कार किए जाते थे**, उस परम्परा का लोप हुआ होगा, क्या ऐसा हो सकता है ? वैसे, सभी पाठ तो आज भी उपलब्ध हैं। किन्तु आश्चर्य इस बात का होता है, कि **अन्य धर्म की परम्पराएँ सूर्यप्रज्ञप्ति आदि जैन ग्रन्थों को अतिप्राचीन और महत्त्वपूर्ण मानते हैं, विश्वासपात्र मानते हैं, तो ऐसी स्थिति में हम उसका विच्छेद किस आधार पर मान रहे हैं ?** उपरोक्त सम्बन्ध में निश्चय ही न हो, तब तटस्थ बुद्धि से की जाने वाली कषादि कसौटी जैसे संशोधन-सम्पादन को पूर्वाचार्यों की आशातना स्वरूप मानना (या उनके गौरव में वृद्धि करने रूप मानना ?) यह लौकिक प्रवाह में सोचे-समझे बिना बह जानें जैसा है, इसलिए यह मिथ्यात्व की पुष्टि करने वाला बनेगा, क्या ऐसा नहीं लगता ? "प्राचीन काल की तुलना में आज का लौकिक तिथिगणित भिन्न है, फिर भी यदि बीच के समय के विद्वान महापुरुषों ने इसकी कषादि कसौटी नहीं की, तो हम क्यों करें ? क्या हम उन पूर्वाचार्यों से अधिक बुद्धिशाली हैं ?" ऐसा कुतर्क देकर "सद्भाए मेहाए..." (श्रद्धा + तर्क = उभयगम्य) परम्परा के वाहक स्याद्वादियों की कषादि कसौटीरूप संशोधन वृत्ति को तोड़ने का यह प्रयास क्या सत्य तत्त्व तक पहुँचने में विघ्नभूत नहीं है ?

(५) एक मान्यता ऐसी चल रही है, कि पूर्वाचार्य अपनी आत्मलक्षी और निवृत्तिप्रधान आचार मर्यादा को ध्यान में रखते हुए स्वयं पंचांग आदि की प्रवृत्ति नहीं करते थे, किन्तु लोक में प्रचलित सूक्ष्म पंचांग के आधार पर तिथि-मुहूर्त जानकर धर्मशास्त्रों के आधार पर आराधना करने का आदेश देते होंगे, तो

(a) लौकिक पंचांग तो राहु के हिसाब से नहीं, बल्कि मात्र सूर्य और चन्द्र के अन्तर से तिथि मानता है। क्या पूर्वाचार्यों की मान्यता सूर्य-चन्द्र के अन्तर से ही तिथि की गिनती करने की थी ?

(b) तो फिर पूर्वाचार्यों द्वारा सूर्यप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति, भद्रबाहु संहिता जैसे ग्रन्थों की रचना क्यों की गई ? तीर्थकरों और गणधरों ने इस प्रकार के ज्ञान की परम्परा क्यों दिखाई ? वास्तव में ज्ञान हेय-उपादेय नहीं, यह तो ज्ञेय ही है, इसका उपयोग हेय-उपादेय है। पंचांग गणित का आत्मकल्याण के लिए होता उपयोग, उसके योग्य जीव में होने वाला विनियोग उपादेय है, संसार वृद्धि हेतु होने वाला उपयोग या विनियोग हेय है। इसलिए पूर्वाचार्य तिथि मुहूर्त के लिए लौकिक शास्त्रों का उपयोग करते थे ऐसा मानना उन पूर्वाचार्यों की आशातना ही है। सर्वज्ञ का पुत्र तिथि मुहूर्त के लिए लौकिक शास्त्रों का उपयोग करे तो सर्वज्ञ की अपभ्राजना होगी, क्या ऐसा नहीं लगता ? अतः **संशोधन पूर्वाचार्यों की आशातना स्वरूप नहीं, बल्कि तीर्थकर, गणधर और पूर्वाचार्यों के गौरव रूप है।**

इसलिए पूर्वाचार्यों ने जैन पंचांग लुप्त होने के कारण लौकिक पंचांग स्वीकार किया, ऐसा मानना उचित नहीं लगता।

प्राचीनकाल से जैन टिप्पण के आधार पर ही व्यवहार होता होगा, किन्तु वह गणित लोकभोग्य होने के कारण स्थूल था, और इसलिए समयान्तर से निश्चित संस्कार किया जाता होगा, ऐसा मानें तो संस्कार की यह परम्परा किसी कारण लुप्त हुई हो तो आज के टेक्नोलॉजी युग में तैयार मिलने वाले मुद्रित ग्रन्थों के आधार पर क्या उनका संशोधन करने की मेहनत नहीं की जानी चाहिए ? टेक्नोलॉजी का स्वयं उपयोग किए बिना भी टेक्नोलॉजी द्वारा तैयार किए गए और प्रकाशित किए गए संशोधनों के उपयोग द्वारा तथा सहयोगी संशोधन द्वारा उसका पुनः प्रकटीकरण करना 900% सम्भव है।

(६) जैनाचार्य अतिविशिष्ट कारण के बिना ज्योतिष के फलादेश विभाग का कथन नहीं करते, यह बात सत्य है, किन्तु **इसका यह अर्थ नहीं है, कि जैनाचार्यों को इसका ज्ञान ही नहीं होता।** हो सकता है कि पूर्वाचार्यों ने काल के प्रभाव की जीवों पर होती असर देखकर ज्योतिष ज्ञान के दुरुपयोग होने की सम्भावना के कारण यह परम्परा गुप्त रखी होगी। इसलिए ज्योतिष ज्ञान में अत्यन्त आवश्यक ग्रहाचार का ज्ञान गुप्त रह गया होगा, किन्तु **आराधना हेतु आवश्यक तिथि गणित को गुप्त रखने का**

**प्रश्न ही नहीं है ।** इसीलिए नारचन्द्र ज्योतिष, आरम्भ सिद्धि, यन्त्रराज आदि ग्रन्थ आज भी उपलब्ध हैं । उपलब्ध आगम शास्त्रों में भी ज्योतिष फलादेश से सम्बन्धित ज्ञान भले ही कम मिलता हो, किन्तु तिथि, नक्षत्र और चन्द्र से सम्बन्धित ज्ञान तो मिलता ही है । इसलिए **आराधना से जुड़े पंचांग का विच्छेद कैसे माना जाए ?** मानना ही हो तो ज्योतिष फलादेश से सम्बन्धित या ग्रह-गणित से सम्बन्धित पंचांग का विच्छेद फिर भी माना जा सकता है ।

एक व्यापक प्रश्न चर्चा में है, कि आधुनिक विज्ञान टेलिस्कोप, सेटेलाइट आदि के द्वारा आज की दुनिया जिस प्रकार दिखती है, वह जैन भूगोल से बहुत भिन्न है, तो जैन खगोल का मेल आज के खगोल से कैसे हो ? इस प्रश्न का सन्तोषप्रद जवाब तो 'तत्त्वं तु केवलीगम्य' है, किन्तु यह बात तय है, कि **शास्त्रीय सूर्य, चन्द्र और तिथि का गणित, लौकिक सूर्य, चन्द्र और तिथि के गणित से अधिकांश रूप से एक सरीखा है,** जिसका विवरण आगे के प्रकरण में है । इस बात से यह निश्चित रूप से समझ आता है, कि वर्तमान में आकाश में दिखने वाले सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रादि वे ही हैं जो शास्त्रों में बताए गए हैं, या शाश्वत सूर्यादि की जो गति है, उसके परिभ्रमण की कक्षाओं, मण्डलों का जो गणित है, उस गणित को ही आज के सूर्य, चन्द्रादि Follow करते हैं । इसलिए दृश्यमान और शास्त्रीय सूर्यादि दोनों एक न भी हो, तो भी **शास्त्रीय सूर्यादि के गणित से ही आज के प्रश्नों का समाधान अधिकांश रूप से मिल जाता है । खुद नासा की Website भी जैन और हिन्दू गणित की पद्धति को Follow करती है ।** इसलिए यदि हम ही **शास्त्रीय गणित की उपेक्षा** करते हैं, तो क्या हमारे सम्यग्दर्शन में शंका, विचिकित्सा आदि दोष लगेंगे या नहीं ?

बस, तटस्थ संशोधन करने से पूर्व इतनी जानकारी पर्याप्त है । तो चलते हैं केवलज्ञान में प्रतिबिम्बित होने वाले आकाश की सफर पर, श्रुतज्ञान रूपी उपग्रह के द्वारा...

# “जैन पंचांग विच्छेद” मान्यता

## एक विचारणा / परिशीलन

विक्रम की दूसरी-तीसरी शताब्दीमें जैन पंचांग  
विच्छेद की सोच कीस लीये ?

9) पंचांग का विच्छेद दूसरी-तीसरी शताब्दी में मानने के कारण :-

a) उच्चनागर शाखा के आ. घोषनन्दीजी के शिष्य वाचक उमास्वाति जी, जो पूर्वधर थे, उनका समय अन्तराल वि.सं. ३६० या वी.नि. सं. लगभग ८३० आता है, और उनके प्रघोष के रूप में “क्षये पूर्वा...” सुना जाता है। इसका सर्वप्रथम उल्लेख वि.सं. १४८६ में रचित “पर्युषण स्थिति विचार” ग्रन्थ में मिलता है, और इससे ऐसी मान्यता प्रसिद्ध हुई कि उमास्वाति जी के समय में जैन टिप्पण का विच्छेद हुआ होगा, और लौकिक टिप्पण में आवश्यक बदलाव करके आराधना के मामले में मार्गदर्शन देने हेतु प्रघोष वाचक उमास्वाति जी ने किया होगा।

b) भारत में विक्रम की पहली शताब्दी में ग्रीक-यवन संस्कृति का आक्रमण हुआ, वेदांग ज्योतिष की मान्यता रखने वालों ने अपना गणित छोड़कर ग्रीक पंचांग के गणित को स्वीकार किया था। कदाचित् इसलिए उस काल में जैन टिप्पण के स्थान पर लौकिक टिप्पण शुरू हुआ होगा, ऐसा माना जाता है।

2) पंचांग का विच्छेद दूसरी-तीसरी शताब्दी में न मानने के कारण:-

9) लगधमुनि प्रोक्त “वेदांग ज्योतिष” नामक पुस्तक में व्याख्याकार “शिवराज आचार्य” ने कुन्दनलाल शर्मा की पुस्तक “वैदिक वाङ्मय का बृहद इतिहास” का उद्धरण दिया है, जिसमें स्पष्ट बताया है, कि जैनाचार्यों ने अपनी पुरानी पद्धति स्थिर रखी थी, जो इस प्रकार है :-

संस्कृत में किया गया। भारतीय पञ्चाङ्गों का भी यूनानियों की सलाह से संशोधन हुआ" (पृ.६६)। कुन्दनलाल शर्मा ने होशियारपुर से प्रकाशित 'वैदिक वाङ्मय का बृहद् इतिहास' नाम के ग्रन्थ के षष्ठ खण्ड में (१९८३ क्रै.) लिखा है "यद्यपि हिन्दू ज्योतिषियों ने वेदाङ्गज्योतिष के सिद्धान्त का परित्याग प्रथम इसवी शती के आरम्भ में करके यूनानी (रोमक) सिद्धान्त को स्वीकार करके अपनी गणनापद्धति में परिवर्तन तथा संशोधन कर लिया था, तो भी जैन ज्योतिर्विदों ने अपनी प्राचीन परम्परा को स्थिर रखा है" (पृ.१४४)। उक्त स्थिति के बावजूद वैदिक ब्राह्मणों में वर्तमान वेदवेदाङ्गग्रन्थों के विशेष प्रकार के नित्य ब्रह्मयज्ञ की<sup>१</sup> (स्वाध्यायाध्ययन की) परम्परा के बल से ३४०० वर्ष पुराना छोटा सा वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थ विविध बाधाओं को पार करता हुआ आजतक अपना अस्तित्व बराबर बनाए हुए है। अब भी वैदिक ब्राह्मण ब्रह्मयज्ञ में (नित्यस्वाध्यायाध्ययन में) लगधप्रोक्त वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थ पढा करते हैं<sup>२</sup>।

२) उपरान्त **Dr. P.L. वैद्य** की उपस्थिति में **पू. सागरजी म.सा.** तथा **पू. रामचन्द्रसूरि म.सा.** की जो तिथि चर्चा हुई, उसमें बताया है कि '**जैन टिप्पण व्युच्छिन्न हुआ है और व्युच्छिन्न काल १२वीं शताब्दी का है और इससे सम्बन्धित स्पष्ट अक्षर उपलब्ध हैं।**' इसमें ऐसा बताया, अर्थात् विक्रम की दूसरी शताब्दी में जैन टिप्पण के विच्छेद की बात उन पूज्यों के मत से भी विश्वसनीय दिखाई नहीं देती।

३) विक्रम की दूसरी-तीसरी शताब्दी के बाद से १३वीं शताब्दी तक हुए अनेक समर्थ ग्रन्थकारों ने अपनी **किसी भी कृति में** जैन टिप्पण का विच्छेद हुआ हो, ऐसा उल्लेख नहीं किया। यहाँ तक कि **तत्त्वार्थ सूत्र, प्रवचन सरोद्धार, लोकप्रकाश, योगशास्त्र** आदि में तो जिस तिथि की प्रसिद्ध शास्त्रीय मान्यता है, उसी का निरूपण किया है, कहीं भी जैन टिप्पण के विच्छेद का उल्लेख नहीं है।

सूर्यप्रज्ञप्ति-चन्द्रप्रज्ञप्ति सटीक मूल, ज्योतिष करण्डक सटीक मूल, ठाणांग सूत्र सटीक मूल आदि जैनागमों की प्रसिद्ध मान्यता थी कि **वर्ष में ६ तिथियों का क्षय होता है, वृद्धि तो एक की भी नहीं होती।** उपरोक्त सभी ग्रन्थों में ऐसी ही बात बताई गई है, उपरान्त उनमें ऐसा ही गणित दिखाया गया है।

४) इसके उपरान्त **लच्छवी शासन के राजाओं के नेपाल से प्राप्त शिलालेखों में प्राप्त अधिकमास का** आयोजन ९९% आज के जिनागमों की मान्यता के साथ मेल खाते हैं। उन शिलालेखों में **विक्रम की १५वीं-१६वीं शताब्दी** तक के अधिक मास की जानकारी है। तो वहाँ तक पंचांग का विच्छेद कैसे मान सकते हैं ?

५) कल्पसूत्र की सुबोधिका टीका में **पू.विनयविजय जी म.सा.** बताते हैं कि, 'तत् टिप्पणकं अधुना न सम्यग् ज्ञायते' मतलब वह टिप्पणक सही तरीके से आज ज्ञात नहीं है, अर्थात् हमारे ज्ञान की खोट दिखाई, किन्तु ग्रन्थ में पंचांग गणित के विच्छेद की बात ही नहीं है। उपरान्त लोकप्रकाश में युगप्रधान की पट्टावली में पूज्यश्री ने ३१वीं पाठ पर उमास्वाति जी (वीर नि.सं १११५ से ११९० का समयान्तराल) को दिखाया है, वहाँ भी (उस ग्रन्थ में भी) ऐसा कोई प्रघोष पू. विनयविजय जी ने लिखा हो, ऐसा पता नहीं चलता है।

इसलिए जैन टिप्पण दूसरी-तीसरी सदी में विच्छेदित हुआ ही नहीं, बल्कि विक्रम की **१२वीं-१३वीं शताब्दी के बाद भी अमुक प्रदेशों में उसका उपयोग होता था।** आधुनिक सूक्ष्म गणित का अविष्कार करने वाली टेक्नोलॉजी के प्रादुर्भाव के कारण उस सूक्ष्म गणित का उपयोग व्यापक रूप से बढ़ा, और निश्चित संस्कार करने की प्रथा किसी कारणवश बन्द होने से जैन पंचांग की प्रवृत्ति बन्द हुई। उपरान्त ज्योतिष में उपयोगी ग्रहाचार का भी गणित स्पष्ट न मिलने के कारण जैन गणना पद्धति छोड़ी गई होगी। किन्तु आज टेक्नोलॉजी द्वारा उपलब्ध मुद्रित-प्रकाशित सामग्री के मार्गस्थ उपयोग के द्वारा **उस लुप्त एवं गुप्त संस्कार की पद्धति** को पुनर्जीवित करके आराधना हेतु उसका (जैन टिप्पण का) उपयोग करना सम्भव है। (जैसे कि कुछ वर्षों पूर्व जैन विद्वान मुनि द्वारा यन्त्रराज ग्रन्थ के उपयोग द्वारा महेन्द्र जैन पंचांग निकाला जाता था) जो भूतकाल में (बीच में समय अन्तराल में) वि.सं. १३०० से २००० में **टेक्नोलॉजी के अभाव तथा अतिशय ज्ञान और ज्ञानी की अनुपस्थिति** के कारण (जैन टिप्पण का उपयोग) सम्भव नहीं था। अतः निष्पक्ष रहकर अलग-अलग सम्भावित विकल्पों पर विचारणा करके जैन परम्परा को पुनर्जीवित करना हमारा कर्तव्य है। फिर से बता दें कि महात्माओं को इसमें स्वयं कम्प्यूटर आदि का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं है, बहुत सारा गणित नासा, स्विस

एफेमेरिज आदि संस्थाओं की ओर से तैयार ही मिलता है। उपरान्त वर्तमान के जन्मभूमि आदि पंचांग भी उनके आधार पर ही उनका डेटा लेकर ही तो प्रकाशित होते हैं, इसका उपयोग जन्मभूमि आदि सब पंचांग में हो रहा है। उसी पंचांग का उपयोग हम कर रहे हैं, अर्थात् जैनाचार्य भी वाया-वाया (जन्मभूमि) द्वारा नासा आदि के डेटा का ही उपयोग कर रहे हैं। तो फिर उस प्रिंटेड डेटा का उपयोग साधु नहीं कर सकता, ऐसा कैसे कहा जा सकता है ? इसलिए उस डेटा का उपयोग किया जा सकता है।

किन्तु प्रश्न यह उठता है, कि जब वाचक उमास्वाति जी का प्रघोष मिलता है, तो जैन पंचांग का विच्छेद मानना ही पड़ेगा न ? तो जवाब यह है, कि इसका निर्णय करने से पूर्व ऐतिहासिक तथ्यों को केन्द्र में रखकर विचार किया जाए तो पता चलेगा, कि प्रघोष वाचक उमास्वाति जी का है ? या अन्य समकालीन या उत्तरकालीन उमास्वाति जी का ? या उमास्वाति जी के नाम से अन्य स्थान से लेकर डाला गया है ? अतः इस सन्दर्भ में तटस्थ बुद्धि से संशोधन करके फिर कोई दृढ़ निर्णय पर पहुँचना चाहिए।

# प्रघोष वाचक उमास्वाति जी का ? या किसी अन्य का ?

जैन परम्परा का इतिहास भाग-१, पृ.२९९ से ३०१ पर अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थों के आधार पर बताया गया है, कि उमास्वाति नामक तीन महात्मा हुए हैं, जिनकी जानकारी इस प्रकार है :-

**युगप्रधान आ. सिंहसूरि :**

ये ब्रह्मद्विपीशाखा के आचार्य थे और वीर सं. ७८४ से ८२६ वाचनाचार्य थे । (देखिए पृ. १५३)

**वाचक उमास्वाति जी :**

न्यग्रोधिका गाँव में कौभीषणि गोत्र का स्वाति नामक ब्राह्मण था । उसकी वात्सायन गोत्र वाली उमा नामक पत्नी थी, और उमास्वाति नामक पुत्र था । अनेक इच्छाओं के बाद उन्हें इस बालक की प्राप्ति हुई होगी इसलिए माता-पिता दोनों का नाम जोड़कर बालक का नाम उमास्वाति रखा गया । उमास्वाति रचित श्वेताम्बर ग्रन्थों और दिगम्बर शिलालेखों में उनका नाम 'उमास्वाति' लिखा है, किसी-किसी दिगम्बर ग्रन्थ में उनका नाम 'उमास्वामी' बताया है, किन्तु वह लेखन दोष का परिणाम लगता है । क्योंकि उमा का पुत्र उमास्वामी बिलकुल नहीं हो सकता, उमासुत या उमास्वाति ही होता है ।

उमास्वाति को बचपन से ही पैतृक धर्म संस्कार मिले थे । उन्हें वेद मत पर अत्यन्त श्रद्धा थी, इसलिए वैदिक साहित्य पढ़कर वे उसमें निपुण बने थे ।

किन्तु एक बार उन्हें अचानक ही जिनेश्वर प्रभु की प्रतिमा के दर्शन हुए, देखते ही हर्ष हुआ और वीतरागता का परिचय हुआ । फिर तो उनकी आत्मा धीरे-धीरे विशेष उन्नत होती गई ।

'कल्पसूत्र' के उल्लेख से समझ सकते हैं, कि आ. दिन्नसूरि के मुख्य शिष्य आर्य शान्तिश्रेणिक से उच्चानागर शाखा निकली और उसमें से १. अज्ज सेणिया, २. अज्ज तापसी, ३. अज्ज कुबेरी ४. अज्ज ईसिपालिया; ये चार उपशाखाएँ उत्पन्न हुई । (देखिए पृ.१८३)

इस उच्चानागर शाखा में **शिवश्री** नामक पूर्वज्ञान के धारक और विख्यात वाचनाचार्य हुए थे, उनके पट्टधर का नामक **घोषनन्दि** श्रमण था, जो पूर्वधर नहीं थे, किन्तु ग्यारह अंगों के ज्ञाता थे ।

पण्डित उमास्वाति ने आ . घोषनन्दि से दीक्षा ली और ग्यारह अंगों का अध्ययन किया । उनकी बुद्धि तीक्ष्ण थी, और वे पूर्व का ज्ञान पढ़ने हेतु योग्य थे, इसलिए उन्होंने गुर्वाज्ञा से वाचनाचार्य **श्रीमूल**, जो महावाचनाचार्य **श्रीमुण्डपाद** क्षमाश्रमण के पट्टधर थे, उनके पास जाकर पूर्व का ज्ञान प्राप्त किया ।

वाचक उमास्वाति महाराज ने 'तत्त्वार्थसूत्र' भाष्य-प्रशस्ति में अपना संक्षिप्त परिचय दिया है, जिसमें अपना जन्मस्थान न्यग्रोधिका, पिता कौभीषणि गोत्र वाले स्वाति, माता वात्सायन गोत्र की उमा, दादा गुरु वा .आ . शिवश्री, दीक्षा गुरु आ . घोषनन्दि श्रमण, विद्यागुरु के गुरु महावाचक श्रीमुण्डपाद श्रमण और विद्यागुरु वा . आ . श्रीमूल आदि का स्पष्ट उल्लेख किया, और इस प्रकार यह बातसे अपने गणधर वंश को तथा वाचक वंश को भी स्पष्ट की है । वे पूर्वधर थे, यह बात अनेक प्रमाणों से तय होती है, जैसे :-

१. पूर्वधरों की पहचान हेतु वादी, क्षमाश्रमण, दिवाकर और वाचक शब्दों का प्रयोग होता था, इसलिए आ . घोषनन्दि श्रमण पूर्वधर नहीं थे, किन्तु वाचक उमास्वाति पूर्वधर थे ।

२. अपने गुरु से ११ अंगों का अध्ययन करके वाचनाचार्य श्रीमूल से पूर्व का श्रुत पढ़ा, इसलिए वे पूर्वधर बने थे ।

३. नगरतालु के दिगम्बरीय शिलालेख में मुनीश्वर उमास्वाति का "श्रुतकेवलिदेशीय" के रूप में उल्लेख है, जो उनके पूर्वधर होने का प्रमाण है ।

४. उनका समय वीर निर्वाण सं. ७७० प्राप्त होता है, जो पूर्वधरों का युग था, और स्वयं उमास्वाति जी खुद को "उच्च" नगर वाचक के रूप में बताते हैं । इस प्रकार भी उनका पूर्वधर होना तय होता है । वे अपने सत्तासमय के बारे में कुछ भी उल्लेख नहीं करते, और श्वेताम्बर साहित्य में भी उनका समय निर्देश नहीं मिलता, किन्तु उच्चानागर शाखा की उत्पत्ति विक्रम की पहली सदी में हुई थी, और पूर्वधर का काल वि.सं. ५९० तक का है, अर्थात् इस समय में वाचक जी हुए हैं, ऐसा अनुमान किया जा सकता है, किन्तु स्पष्ट निर्णय नहीं मिलता है ।

दिगम्बर साहित्य (विद्वज्जनबोधक) में उनका समय वीर सं. ७७० ,  
अर्थात् वि. सं. ३६० बताया है । उसमें लिखा है :-

**वर्षे सप्तशते चैव, सप्तत्या च विस्मृतौ ।**

**उमास्वातिमुनिर्जातः, कुन्दकुन्दस्तथैव च ॥१॥**

अर्थात् आ. उमास्वाति और आ. कुन्दकुन्द ७७० में हुए थे ।

जैन इतिहास में स्वाति नामक तीन आचार्य हैं :-

१. आर्य महगिरि जी के प्रशिष्य और आर्य बहुल के शिष्य स्वातिसूरि,  
जो लगभग वीर सं. ३३५ में हुए थे । ये स्वातिसूरि वाचनाचार्य थे, किन्तु  
वे उच्चानागर शाखा के नहीं थे । ये पहले स्वातिसूरि हुए ।

२. उच्चानागर शाखा के आ. घोषनन्दि के शिष्य वाचक उमास्वाति  
जी, जो पूर्वधर थे । ये लगभग वि.सं. ३६० में हुए और इन्होंने 'तत्त्वार्थसूत्र'  
आदि की रचना की है ।

३. युगप्रधान उमास्वाति, जिनका युगप्रधान काल वीर सं. १११५  
से ११९० था । अर्थात् ये विक्रम की आठवीं सदी के पहले तीन चरण के  
युगप्रधान थे । (देखिए पृ. १६१)

इन तीनों में से दूसरे, आ. घोषनन्दि श्रमण के पट्टधर ही वाचक  
वाचक उमास्वाति जी हैं ।

कलिकाल सर्वज्ञ आ. हेमचन्द्रसूरिजी 'सिद्धहेम व्याकरण-लघुवृत्ति'  
(अ.२, पा. २, सू. ३९) में **उपोमास्वाति संगृहितारः** लिखकर वाचक  
उमास्वाति जी को समर्थ संग्रहकार के रूप में अंजलि देते हैं । (जैन परम्परा  
का इतिहास भाग-१ से साभार)

अब जाँच करने से पता चलता है, कि यदि प्रघोष वाचकश्री जी का  
है, तो वाचक उमास्वाति जी वि.सं. ३६० या वीर सं. ८३० में हुए थे, और  
उनके बाद देवर्धिगणि क्षमाश्रमण आदि ५०० आचार्यों के काल में, अर्थात्  
**वि.सं. ५१० या वीर सं. ९८०** के आस-पास हुई वल्लभी की वाचना में  
मुखपाठ ग्रन्थ जब अक्षरग्रन्थारूढ हुए, तभी सूर्यप्रज्ञप्ति आदि ग्रन्थ भी लिखे  
गए ही होंगे, फिर उनके साथ ऐसे पंचांग विच्छेद या प्रघोष का उल्लेख क्यों  
नहीं हुआ ?

२) उमास्वाति जी के प्रशमरति, तत्त्वार्थभाष्य, श्रावकप्रज्ञप्ति आदि में तथा उनके अन्य समकालीन आचार्यों के भी वर्तमान में उपलब्ध अन्य ग्रन्थों में इसका (पंचांग विच्छेद या प्रघोष का) उल्लेख क्यों नहीं मिलता ? और खगोल विषय के अन्य कर्ताओं के अन्य ग्रन्थों में भी ऐसे प्रघोष का उल्लेख क्यों नहीं हुआ ? इसके उपरान्त आरम्भसिद्धि, यन्त्रराज या नारचन्द्र ज्योतिष आदि ग्रन्थों में भी ऐसा (प्रघोष आदि का) उल्लेख क्यों नहीं मिलता ?

३) पू. पादलिप्तसूरि म.सा. कृत **ज्योतिष करण्डक** नामक खगोल विषय का ग्रन्थ अत्यन्त प्राचीन माना जाता है। एक मत के अनुसार तो यह ग्रन्थ विक्रम राजा के पहले का है, तो दूसरे मत के अनुसार यह विक्रम की तीसरी-चौथी शताब्दी का है। तो उन्होंने वाचकश्री के इस प्रघोष का उल्लेख क्यों नहीं किया ? या पंचांग के विच्छेद का भी उल्लेख क्यों नहीं किया ? **ज्योतिष करण्डक प्राभृत-४ में श्लोक नं. ९७ से १०५** और उसकी टीका में भी वर्तमान में उपलब्ध जैन तिथि गणित ही दिखाया गया है। कहीं भी पंचांग के विच्छेद या इस प्रघोष का उल्लेख ही नहीं है, इसलिए उमास्वाति जी का ऐसा कोई प्रघोष है भी या नहीं, यह विचारणीय प्रश्न है ऐसा नहीं लगता ?

४) पू. मानतुंगसूरि म.सा. २०वीं पाट परम्परा के आचार्य हैं, तथा वाचक **उमास्वाति जी** उनके समकालीन आचार्य हैं, अर्थात् वाचक उमास्वाति जी २०वीं पाट परम्परा के समकालीन हुए। इसकोर २४वीं पाट परम्परा में समकालीन **संघदासगणि जी** आचार्य थे, जिन्होंने **वसुदेव हिंडी** और **'बृहदकल्प'** पर **लघुभाष्य** और **पंचकल्प** पर **महाभाष्य** की रचना की थी, ऐसा 'जैन परम्परा के इतिहास' भाग-१ (पृ.४०४) में दिखाया गया है। उसमें भी पंचांग की रचना हेतु आवश्यक ५ प्रकार के मास, उनका प्रमाण आदि साहित्य मिलता है, किन्तु कहीं भी पंचांग विच्छेद या प्रघोष का उल्लेख नहीं मिलता। **२०वीं पाट परम्परा के वाचकश्री के प्रघोष का २४वीं पाट परम्परा के आचार्य ने क्यों उल्लेख नहीं किया ?**

५) उनके बाद हुए समर्थ आचार्य **पू.हरिभद्रसूरि म.सा.**, **पू. कलिकालसर्वज्ञ हेमचन्द्रसूरि म.सा.**, **पू. बप्पभटीसूरि म.सा.** आदि के उपलब्ध ग्रन्थों में कहीं भी ऐसे प्रघोष का उल्लेख नजर नहीं आता।

६) निशीथ चूर्ण और पू. नवांगी टीकाकार अभयदेवसूरि म.सा. की आगमों की टीका में, तथा टाणांग के मूल सूत्र-२९ में कहीं भी प्रघोष या जैन टिप्पण के विच्छेद की बात न करते हुए चन्द्रतिथि, चन्द्रमास का प्रमाण  $२९\frac{३२}{६२}$  मुहूर्त और  $२९\frac{३२}{६२}$  दिन क्रमशः बताया ही है।

७) सूर्यप्रज्ञप्ति-चन्द्रप्रज्ञप्ति उपांगसूत्र पर (कलिकालसर्वज्ञ जी के समकालीन) पू. मलयगिरि म.सा. जो लगभग विक्रम की-११-१२वीं शताब्दी में हुए थे, उन्होंने भी कहीं भी टीका में पंचांग का विच्छेद या पू. उमास्वाति जी का प्रघोष बताया हो, ऐसा ध्यान में नहीं आता।

८) वैदिक सम्प्रदाय के शिवरहस्य सौर पुराण में "क्षये पूर्वा..." मिलता है, इसलिए ऐसा भी सुना गया है, कि यह प्रघोष उमास्वाति जी का न होकर किसी अन्य का ही प्रघोष होगा, ऐसा लगता है। माधव नामक ज्योतिषी ने १५वीं शताब्दी में बनाया है, ऐसा पू. जम्बूविजय जी म.सा. बताते थे।

९) भविष्य पुराण मध्यम पर्व के ७वें अध्याय में वृद्धितिथि में उत्तरा और क्षय तिथि में पूर्वा ग्राह्या-ऐसा उल्लेख प्राप्त होता है।

खर्वा दर्पा तथा हिंस्रा तिथिश्च त्रिविधा भवेत्।

खर्वादि लंघयेतुल्या दर्पा भवति वर्द्धिता ॥

हिंस्रा तु क्षयजा ज्ञेया कालभेदेन गृह्यते।

खर्वा दर्पा परे ग्राह्या हिंस्रा ग्राह्या तु पूर्वतः ॥

१०) इस प्रकार "पर्युषणा स्थिति विचार" ग्रन्थ के लेखक ने वि.सं. १४८६ में सर्वप्रथम यह प्रघोष उमास्वातिजी का नाम लेकर लिखा, यह किस प्रकार आरोपण किया गया, यह कहना मुश्किल है, क्योंकि a) ऐसा महत्वपूर्ण प्रघोष जिस पर भविष्य के जिनशासन के समस्त साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं की आराधना का निर्णय निर्भर है, उसका आलेखन पूर्वधर उमास्वाति जी स्वयं एक भी ग्रन्थ में नहीं करते और उनके बाद के १००० वर्ष तक के समय में पर्व तिथि की आराधना तो हर वर्ष, हर माह होती है, फिर भी कोई गीतार्थ इसका उल्लेख भी नहीं करते, यह कैसे सम्भव हो सकता है ?

b) वे ग्रन्थ काल के प्रभाव में लुप्त हो गए होंगे, ऐसा मानना भी गले से नहीं उतरता, क्योंकि जिसका उपयोग प्रतिदिन करना है वह (पूर्वोक्त

ग्रन्थों के लुप्त होने के कारण) लुप्त हो जाए, ऐसा मानना प्रामाणिक नहीं कहा जा सकता। उपरान्त क्या ऐसे महत्वपूर्ण प्रघोष का उस काल के किसी अन्य समर्थ विद्वान ने आत्मसात् करके वी.सं. ९८० में हुए आगम लेखन में उसका समावेश नहीं करवाया होगा ?

११) युगप्रधान स्वातिसूरि ने (उमास्वाति जी जो ३०वीं पाट परम्परा के समकालीन आचार्य थे) **पूनम की पाखी को चतुर्दशी में बदला, ऐसा उल्लेख** किया है तो वहीं "क्षये पूर्वा" का प्रघोष क्यों नहीं लिखा गया ? खरतरगच्छ की पट्टावली से निम्नलिखित उल्लेख प्राप्त होता है :-

**नोंध :-** पूनम की पकखी के समर्थनमें यह बात नहीं है किन्तु खरतरगच्छ की पट्टावली भी पंचांगविच्छेद-प्रघोष की मान्यताको समर्थन नहीं देती है इतना ही सूचित करने के लिए यह बात दीखाई है।

### पारिशीष्टम् —२

**कालिकात्तास्थश्रीतपागच्छसंघप्रथभांडागारस्य श्रीकल्पसूत्रस्थविरा-  
वलीभाषापुस्तकान्ते एता गाथा लिखिताः सन्ति—**

15.

**रहवीरपुरे नयरे सिद्धिगयस्स बीरनाहस्स ।**

**छसै नवहुत्तरीए खिमणा पाखंडिया जाया ॥ १ ॥**

**दुन्भिक्खंमि पण्णट्टे पुणारवि मिलित्त समणसंघाओ ।**

**मिहुराए अणुओगो पवईओ खंदिलो सूरि ॥ २ ॥**

**बारसवाससएसुं पुणिमदिवसाओ पक्खियं जेण ।**

20

**चाउइसी पठवेसुं पक्कपीओ साहिसूरिहिं ॥ ३ ॥**

**पणपण बारसएही हरिभहोसूरि आसि पुवकए ।**

**तेरस बीसअहिए अहए बपभट्टपहू ॥ ४ ॥**

**इति थविरावली समाप्तं ॥ सं० १८५० वर्षे शाके १७१५ प्रवर्त-  
माने मागसिरशुद्धिथशानौ । श्रीनवानगरमध्ये । श्रीसंतनाथजीप्रसादान् । 25  
बृहत्खरतरगच्छे बृहत्खेमशाखायां । पं० रूपचंदमुनिलिखितं । श्रीः ॥**

इसलिए इस सन्दर्भ में व्यवस्थित संशोधन होना ही चाहिए।

भले ही दोनों उमास्वाति जी अलग-अलग होंगे, किन्तु समान विषय को प्रदर्शित करने वाला यह प्रघोष यदि इससे पूर्व रचित हुआ है, या तो वाचकश्री का ही है, तो उसका उल्लेख क्यों नहीं हुआ ?

१२) श्री श्राद्ध दिनकृत्य ग्रन्थ में "आज छः में से कौनसी पर्व तिथि है" ऐसा विचार रखा है, किन्तु जैन टिप्पण के विच्छेद या प्रघोष की कोई बात नहीं की। यह इस प्रकार है :-

इस ग्रन्थ की रचना वि.सं. १४५७ से पहले पूर्ण हो चुकी है, जो इसके ग्रन्थलेखक की प्रशस्ति से स्पष्ट है :-

विश्रुतमहातपागणनाथ श्री देवसुन्दरगुरुणाम् ।

उपदेशादथ मत्वा ज्ञान निस्सिमसुखहेतुम् ॥६॥

दिनकृत्यवृत्तिमेतां साऽलेखयदत्र पुस्तके शस्ते ।

अश्रेषुजलधिसितकरमितवर्षे (१४५७) नन्दताच्चेदम् ॥७॥

अर्थात् पू. हर्षभूषणगणि से कुछ ही वर्ष पूर्व पू.आ. देवेन्द्रसूरि जी ने इस ग्रन्थ की रचना की है, किन्तु उसमें पंचांग विच्छेद या क्षये पूर्वा का कोई उल्लेख नहीं किया। २१वें मूल श्लोक और उसकी टीका में छः तिथियाँ और कल्याणक तिथि की बात की गई है, फिर भी पंचांग से सम्बन्धित कोई निर्देश नहीं किया गया।

छणहं तिहीण मज्झंमि, का तिही अज्ज वासरे ? ।

किं वा कल्लाणगं अज्ज लोगनाहाण संतियं ? ॥२१॥

१३) श्राद्धविधि में भी (रचना वि.सं. १५०६) प्रघोष का उल्लेख "पर्युषणा स्थिति विचार" ग्रन्थ के बाद का है, फिर भी उसमें पू. रत्नशेखरसूरि म.सा. प्रघोष के उल्लेख में वाचक शब्द नहीं बताते, मात्र उमास्वाति जी शब्द का ही उपयोग करते हैं :-

"उमास्वातिवचः प्रघोषश्चैवं श्रूयते ।" इस प्रकार वहाँ भी कौनसे उमास्वाति जी हैं, इसका उल्लेख नहीं है, और वाचक शब्द भी प्रयुक्त नहीं किया।

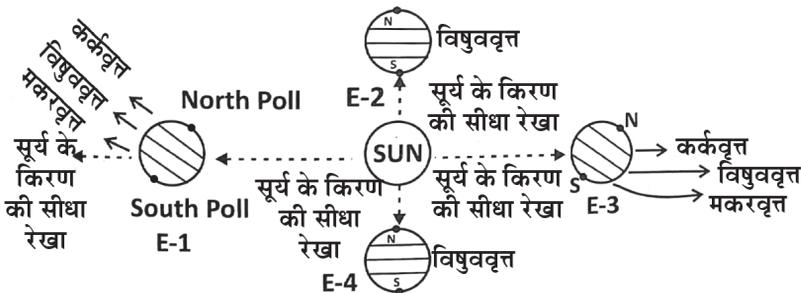
# तिथि-उत्पत्ति की सत्यता के विषय में

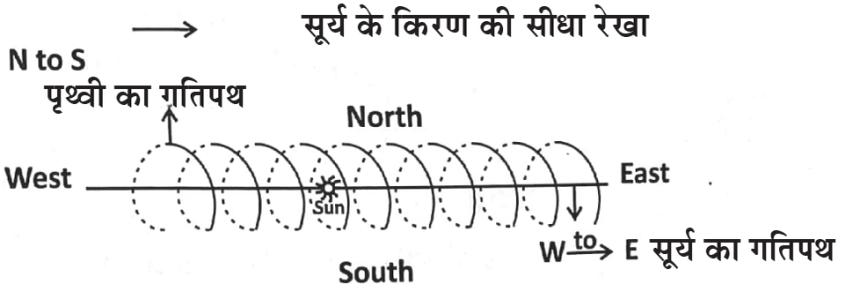
## तुलनात्मक विचारणा

१) वैज्ञानिक दृष्टि से और २) जिनागमों की दृष्टि से

**१) वैज्ञानिक दृष्टि से :-** सूर्य पश्चिम से पूर्व की ओर जाता है, और उसके आस-पास वलयाकार में पृथ्वी घूमती है। इसकी विशेष जानकारी "जैन आगमिक गणित आधारित पंचांग प्रक्रिया" में दी गई है, जो इस प्रकार है :-

**भिन्न-भिन्न ऋतुएँ होना :- (a) आधुनिक खलोगशास्त्र :-** जैसे पृथ्वी अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है, उसी प्रकार सूर्य के आस-पास भी उत्तर से दक्षिण, दक्षिण से उत्तर क्रमशः घूमती रहती है। उपरान्त पृथ्वी की तुलना में सूर्य अधिक बड़ा होने पर भी बहुत दूर है, इसलिए पृथ्वी के दिन-रात छोटे-बड़े होते हैं, और सर्दी, गर्मी, वर्षा आदि ऋतुएँ होती हैं। यहाँ याद रहे कि अक्षांश-रेखांश (Latitude - Longitude) की व्यवस्था त्रैकालिक नहीं है, बल्कि गणित के लिए बनाई गई है, उपरान्त इस मत से  $23\frac{1}{2}$  डिग्री झुककर पृथ्वी उसके (सूर्य के) आस-पास सतत घूमती है। मूल स्थान पर वापिस  $365\frac{1}{4}$  दिन लगते हैं। इसे **सूर्य वर्ष** कहा गया है। इस सूर्य वर्ष का माप भी अनुमानित है, थोड़ा छोटा-बड़ा होना सम्भव है। पहले इस भेद को यूरोप के देशों ने Adjust नहीं किया, इसीलिए उन्हें कैलेंडर से १३ दिन कैसिल करने पड़े। इसके द्वारा उन देशों के कैलेंडर जूलियन से ग्रेगोरियन कैलेंडर में परावर्तित हुए। अभी रशिया में जुलियन कैलेंडर ही चलता है, इसलिए रशिया और ग्रेगोरियन कैलेंडर (भारत, ब्रिटेन, अमेरिका) स्वीकार करने वाले देशों की तारीख में आज भी भेद आता है।





इसके उपरान्त इस पुस्तक के L, M, N और O पेज पर निम्नलिखित जानकारी दी गई है। **चन्द्र बिम्ब** का ढकना और खुलना, या तिथि की नियत व्यवस्था का निर्माण :-

### (a) आधुनिक खगोल का मत :-

चन्द्र पृथ्वी के आस-पास, चन्द्रयुक्त पृथ्वी सूर्य के आसपास सतत भ्रमण करती है। अब पृथ्वी की अपेक्षा से सूर्य और चन्द्र के बीच 92 डिग्री का कोना एक तिथि है, क्योंकि चन्द्र पर प्रकाशित है। चन्द्र के जितने भाग से सूर्य का प्रकाश छूकर परावर्तित होकर हम तक पहुँचता है, उतना भाग हमें क्रमशः दिखाई देता है। पृथ्वी के चारों ओर घूमते चन्द्र पर सूर्य की किरणों का गिरना और उसका परावर्तन होकर पृथ्वी तक पहुँचना और उसके कारण चन्द्र का ढकना-खुलना, यह तिथि (Moon Phase) है। इस प्रकार तिथि जानने के लिए :-

- (1) सूर्य का स्थान
- (2) सूर्य की तुलना में पृथ्वी का स्थान
- (3) पृथ्वी की तुलना में चन्द्र का स्थान
- (4) सूर्य और पृथ्वी की तुलना में चन्द्र का स्थान, इन चार बातों की जानकारी चाहिए।

(यह गणित बहुत कठिन है और अभी पहले की भांति हाथ से गणित करने वाले बहुत कम हैं। लगभग 63 वर्ष पूर्व ई.सं. 1957 में नासा कि स्थापना हुई। उसके बाद नासा ने इस गणित का सॉफ्टवेयर बनाया था,

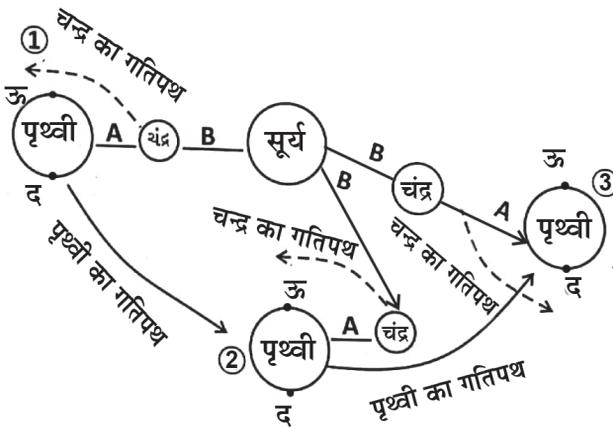
और अभी उस गणित के अनुसार दुनिया के स्टैण्डर्ड टाइम से वह डेटा बनाता है, उस डेटा के गणित से वर्तमान में तैयार होने वाले पंचांग हम अभी उपयोग कर रहे हैं। इस एस्ट्रोनामिकल डेटा के उपयोग की पद्धति अहमदाबाद के इसरो ब्रांच के वैज्ञानिकों को भी पता नहीं है, और नासा वाले इसकी फॉर्मूला नहीं बताते, ऐसा सुना है।)

मुख्य रूप से पृथ्वी, चन्द्र और सूर्य जब सीधी लाइन में आते हैं, तब अमावस होती है, अर्थात् सूर्य और चन्द्र के बीच का कोना शून्य डिग्री हो, वह अमावस है। क्योंकि तीनों के सीधी रेखा में आने के कारण सूर्य द्वारा प्रकाशित होने वाला चन्द्र का भाग सूर्य की ओर होता है, और अप्रकाशित भाग पृथ्वी की ओर होता है, इसलिए पृथ्वी से वह परप्रकाशित चन्द्र दिखाई नहीं देता। जैसे-जैसे पृथ्वी से सूर्य-चन्द्र का कोना १२ डिग्री, २४, ३६ इस प्रकार १८० डिग्री होता है वैसे-वैसे चन्द्र सूर्य की किरणों का पृथ्वी पर अधिक से अधिक परावर्तन करता है और क्रमशः सुदी-१, सुदी-२ से सुदी-१५ होती है। फिर १८१ डिग्री से ३६० डिग्री का कोना बनने से वदी-१, वदी-२ से वदी अमावस्या होती है। उपरान्त **चन्द्र की भ्रमण कक्षा (ORBIT या गतिपथ) कुछ लम्बगोल है। इसके अतिरिक्त पृथ्वी और सूर्य का गुरुत्वाकर्षण चन्द्र को लगता है, इसलिए चन्द्र की गति धीमी या तेज होती है, इसलिए १२ डिग्री का समय निकालने में साधिक २१ घण्टे से साधिक २७ घण्टे लगते हैं, इसलिए तिथि माप निश्चित नहीं है। ३० तिथि=१ चन्द्र मास (Sinodic Month), जिसका वास्तव में माप २९ दिन १२ घण्टे ४४ मिनिट होता है, किन्तु गुरुत्वाकर्षण बल आदि उपरोक्त वर्णित कारणों से यह माप २९ दिन १८ घण्टे तक या २९ दिन ८ घण्टे तक हो सकता है। इस प्रकार **नक्षत्र मास (साइडिरीयल) २७ दिन ७ घण्टे ४१ मिनिट के आस-पास और चन्द्र मास (सायनोडिक) २९ दिन १२ घण्टे ४४ मिनिट के आस-पास का होता है।****

इन दोनों में भेद होने का कारण यह है, कि पृथ्वी के किसी एक निश्चित बिन्दु से तथा सूर्य के साथ किसी निश्चित कोने से चन्द्र का शुरू हुआ परिभ्रमण साधिक २७वें दिन उसी निश्चित बिन्दु पर आता है, किन्तु पृथ्वी भी सूर्य के आस-पास घूमती होने के कारण अपने निश्चित स्थान से आगे बढ़

चुकी होती है, इसलिए पृथ्वी और चन्द्र के निश्चित स्थान साधिक २७वें दिन इकट्ठा होने पर भी तिथि हेतु आवश्यक सूर्य और चन्द्र के बीच के कोने के निश्चित बिन्दु उस समय इकट्ठा न होकर २ दिन बाद एकट्ठा होते हैं, इसलिए तब तक साधिक २९ दिन बीत जाते हैं, जिसे चन्द्रमास कहते हैं। इसकी **काल्पनिक** आकृति (Not to be scaled) इस प्रकार है :-

### आकृति १ : नक्षत्र मास-चन्द्र मास के मध्य भेद



- A = पृथ्वी - चन्द्र का निश्चित बिन्दु = प्रस्तुत में विषुववृत्त = प्रस्तुत में नक्षत्र मास = साधिक २७ दिवस
- B = चन्द्र-सूर्य के कोने का निश्चित बिन्दु = ० डिग्री = प्रस्तुत में चन्द्र मास = साधिक २९ दिवस

### आकृति २ : सूर्य के साथ चन्द्र के कोने, इसलिए बनने वाली तिथियाँ

**नोट :** १) सूर्य के आस-पास पृथ्वी पश्चिम से पूर्व की ओर अपनी धुरी पर घूमती है।

२) चन्द्र भी पृथ्वी के आस-पास पश्चिम से पूर्व घूमता है।

सुद-८

पूनम

पृथ्वी

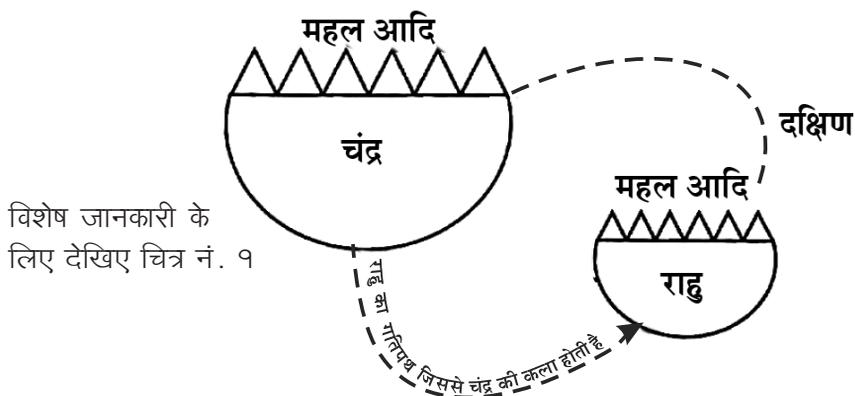
अमावस्या

सूर्य

वद-८

## (b) जिनमत के अनुसार :- तिथि होने से जुड़े मुख्य कारण

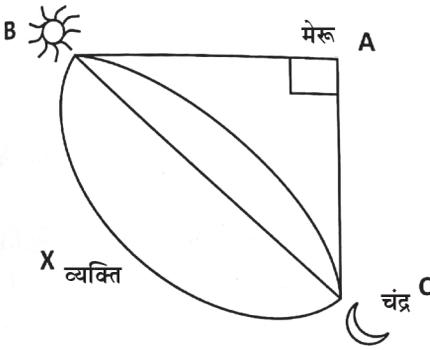
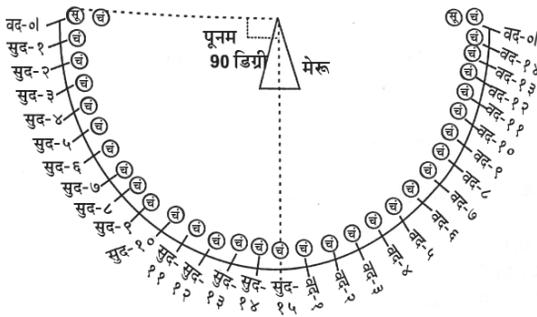
(१) चन्द्र के विमान से ठीक नीचे स्थित कृष्ण प्रभा वाले राहु का विमान चन्द्र के विमान को अपनी कृष्ण प्रभा से ही ढकने और खोलने का कार्य करता है। अर्थापत्ति या अवकाशी निरीक्षण से यह तय है, कि राहु का विमान चन्द्र के दक्षिणी ओर (लवण समंदर की ओर) रहकर पूर्व से पश्चिम को चंद्र के उत्तर ध्रुव से दक्षिण ध्रुव को ढकता है, और पूर्व से पश्चिम चन्द्र के उत्तरध्रुव से दक्षिणध्रुव को क्रमशः खोलने का कार्य करता है ऐसा पृथ्वी पर से दृश्यमान होता है। यह ढकने और खोलने का समय निश्चित है—२३ घण्टे ३६ मिनट। इस प्रकार ३० तिथि पूर्ण होने पर चन्द्र मास = सायनोडिक मास = २९ दिन १२ घण्टे २४ मिनट का समय होता है।



(२) जैसे राहु के विमान की प्रभा से चन्द्र—बिम्ब का ढकने और खुलने का समय तय है वैसे ही इसके साथ ही सूर्य की तुलना में चन्द्र ५१ मिनट धीमे होने के कारण रोज सूर्य—चन्द्र के बीच का अन्तर प्रायः ५१-५१ मिनट बढ़ता रहेगा, जम्बूद्वीप में दो सूर्य-चन्द्र होने के कारण एक सूर्य और एक चन्द्र का कुल विचरण क्षेत्र मात्र १८० डिग्री होता है, इसमें रोज ५१-५१ मिनट = ६ डिग्री का अन्तर बढ़ता रहता है।

इस प्रकार दोनों एक ही मण्डल (ORBIT) में, एक राशि और एक नक्षत्र में आते हैं तब अमावस्या होती है, दोनों के बीच का अन्तर ६ डिग्री बढ़े तो सुदी-१, सुदी-२ आदि होते हैं और दोनों के बीच का अन्तर ९० डिग्री हो तो पूर्णिमा होती है। फिर दोनों का अन्तर ९६ डिग्री, १०२ डिग्री हो तो वदी-१, वदी-२ आदि होते हैं और यह अन्तर १८० डिग्री हो तो

अमावस्या होती है। हाँ ! इसी समय दूसरे सूर्य और पहले चन्द्र, तथा पहले सूर्य और दूसरे चन्द्र के बीच शून्य डिग्री का अन्तर होता है।



उपरोक्त आकृति के अनुसार मेरु पर्वत की (A) अपेक्षा से (B) सूर्य और (C) चंद्र के बीच ९० डिग्री का कोना है। किन्तु प्रकाश क्षेत्र की अपेक्षा से या पृथ्वी के जीयोसेंट्रिक (केन्द्र बिन्दु) की अपेक्षा से X व्यक्ति को B (सूर्य) और C (चन्द्र) के बीच  $\frac{1}{2}$  Round = १८० डिग्री होता है जो आधुनिक खगोल के मतानुसार टैली हो जाता है।

इस प्रकार चन्द्र मास पूर्ण होने में लगभग २९ दिन १२ घण्टे २४ मिनिट का समय लगता है।

आधुनिक खगोलशास्त्र और जिनमत के खगोल के विषय के निर्णयों में कितनी साम्यता है, यह बताने हेतु उपरोक्त जानकारी पर्याप्त है।

—दोनों पक्ष सूर्य—चन्द्र आदि का पृथ्वी के दृष्टिकोण से पूर्व से पश्चिम में उदय होना मानते हैं।

—दोनों पक्ष दिन (अहोरात्रि) को प्रायः २४ घण्टे का मानते हैं ।

—दोनों पक्ष सूर्य—चन्द्र का गतिपथ लगभग ५१० योजन विस्तार में मानते हैं । (जिनागमों में तो यह माप स्पष्ट है, आधुनिक मत से कर्क वृत्त और मकर वृत्त के बीच के अन्तर को उत्सेधांगुल के अनुसार विचार करें तो लगभग ५००-५१० योजन होता है ।)

—दोनों पक्ष सूर्य, चन्द्र और ग्रह का राशि (नक्षत्र) के साथ योग मानते हैं ।

—जिनमत चन्द्र मास को लगभग २९ दिन १२ घण्टे २४ मिनट का मानता है और आधुनिक यूरोपीय मत २९ दिन १२ घण्टे ४४ मिनट का मानता है, इस प्रकार इसमें २० मिनट का भेद माना है ।

—दोनों पक्ष के नक्षत्र मास में लगभग १२ मिनट का ही भेद है ।

• जिनमत २७ दिन ७ घण्ट ३१ मिनट मानता है,

—आधुनिक यूरोपीयन मत २७ दिन ७ घण्टे ४३ मिनट मानता है ।

—दोनों पक्ष सूर्यग्रहण अमावस्या को और चन्द्रग्रहण पूर्णिमा को ही मानते हैं ।

—दोनों पक्षों के सूर्य वर्ष में १८ घण्टे का फर्क है ।

• जिनमत सूर्य वर्ष ३६६ दिन का मानता है और आधुनिक यूरोपीय सूर्य ३६५ १/४ दिन का मानते हैं ।

— मात्र आधुनिक खगोलशास्त्र नक्षत्र के साथ चन्द्र का योग २४ घण्टे के आसपास का मानता है, जो जिनमतानुसार १२ घण्टे, २४ घण्टे और ३६ घण्टे का है । इस कारण जैन मुहूर्त और जैन ज्योतिषशास्त्र आज के मत से काफी अलग हो जाता है ।

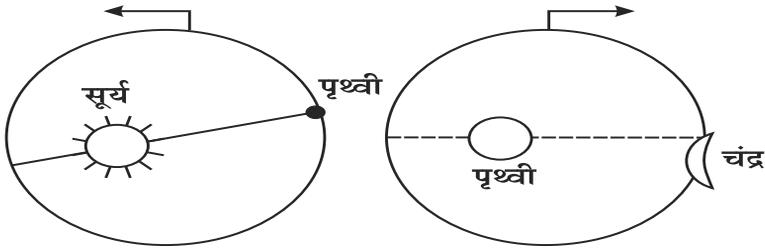
— जिनमत में तिथि का निश्चित माप २३ घण्टे ३६ मिनट का बताया गया है, जबकि आधुनिक मत यह २१ घण्टे से २७ घण्टे तक मानता है, और इसीलिए वृद्धि तिथि आती है । इस कारण संघभेद, आराधना भेद और जिनाज्ञा भेद होता है । गीतार्थों को इन दो बातों में जिनमत का अनुसरण करने का निर्णय करना चाहिए, ऐसी विनती है । (जैन आगमिक गणित आधारित पंचांग प्रक्रिया में से साभार)

◆ इस प्रकार पता चलता है, कि आधुनिक (यूरोपीय) गणित के अनुसार तिथि = **पृथ्वी से चन्द्र और सूर्य का निश्चित कोना** । क्योंकि वे चन्द्र को परप्रकाशित मानते हैं और सूर्य—चन्द्र का कोना रोज बदलने के

कारण चन्द्र पर सूर्य की किरणों का संपात भी बदलता है, इसलिए तदनुसार चन्द्रबिम्ब छोटा-बड़ा होता है और तिथि की रचना होती है। उपरान्त, पृथ्वी सूर्य के आसपास और चन्द्र पृथ्वी के आसपास **लम्बगोल आकार में घूमता है**, और सूर्य एवं पृथ्वी केन्द्र में न रहकर थोड़े Side पर रहते हैं, यानि कि इस प्रकार की आकृति बनती है :- (आकृति अंदाजित है)

१. सूर्य के आसपास पृथ्वी का परिभ्रमण

२. पृथ्वी के आसपास चन्द्र का परिभ्रमण



◆ अतः पृथ्वी जब सूर्य के निकट हो तो गुरुत्वाकर्षण की प्रचुरता से पृथ्वी की गति बढ़ती है और जब सूर्य से दूर जाए तो गति घटती है, इसलिए महीने छोटे-बड़े होते हैं और सूर्य का राशि-नक्षत्र के साथ संयोग भी छोटा-बड़ा होता है।

गति बढ़ने के कारण निश्चित अन्तर जल्दी पार हो जाता है, इसलिए महीना और नक्षत्र के साथ योग भी जल्दी पूरा हो जाता है। गति कम होने के कारण निश्चित अन्तर देरी से तय होती है, इसलिए महीना और नक्षत्र के साथ योग लम्बे समय तक चलता है।

◆ इसी प्रकार चन्द्र भी पृथ्वी के समीप आता है तब गुरुत्वाकर्षण के कारण उसकी गति बढ़ती है, इसलिए १२ अंश का अन्तर जल्दी पूरा हो जाता है, इसलिए तिथि छोटी होती है, और जैसे-जैसे चन्द्र पृथ्वी से दूर जाता है तो गुरुत्वाकर्षण घटने के कारण उसकी गति घटती है, इसलिए १२ अंश का अन्तर धीमे व्यतीत होता है और तिथि बड़ी बनती है।

इसी प्रकार नक्षत्र के साथ चन्द्र का योग भी छोटा-बड़ा होता है।

उदाहरण के लिए, २०१९, २०२० के चन्द्र मास के पर्व में (पूर्णिमा-अमावस्या में) चन्द्र की गति धीमी-तेज होने के कारण होने वाला माप नीचे दिया गया है, जिससे तिथि का छोटा-बड़ा होने वाला माप जाना जा सकता है:-

	सबसे तेज गति कला-विकला	माह	सबसे धीमी गति कला-विकला	माह
१.	४३५-३६	का.व.१२ २३-११-१९	३५५-१८	का.सु.९ ६/११/१९
२.	४२५-४०	मा.व.८ १९-१२-१९	३५५-५४	मा.सु.८ ४/१२/१९
३.	४३६-३२	पो.व.३ १३/१/२०	३५५-५७	पो.सु.७ २/१/२०
४.	४५०-५७	महा.व.१ १०/२/२०	३५५-३२	म.सु.५ ३०/१/२०
५.	४५९-५८	फा.व.१ १०/३/२०	३५५-२९	फा.सु.४ २७/०२/२०
६.	४६०-२६	चै.सु.१४ ७/४/२०	३५४-२१	फा.व.०) २४/३/२०
७.	४५२-४५	वै.सु.१४ ६/५/२०	३५५-३१	चै.व.१३ २०/४/२०
८.	४४०-१५	जे.सु.१२ ३/६/२०	३५५-४०	वै.व.११ १८/५/२०
९.	४२८-२८	आ.सु.९ २९/६/२०	३५६-१६	जे.व.९ १४/६/२०
१०.	४३१-१५	श्रा.सु.४ २४/७/२०	३५६-२३	अ.व.७ १२/७/२०
११.	४४३-४९	भा.सु.३ २१/८/२०	३५५-३९	श्रा.व.६ १०/८/२०
१२.	४५४-४३	अधिक आ.सु.१ १८/९/२०	३५४-४१	भा.व.४ ६/९/२०

१३.	४५९-३०	अधिक आ.व.०)) १६/१०/२०	३५४-३८	अधिक आ.व.२ ४/१०/२०
१४.	४५६-०४	आ.व.१४ १४/११/२०	३५५-२१	आ.सु.१५ ३१/१०/२०
१५.	४४५-१६	का.व.१३ १२/१२/२०	३५५-०३	का.सु.१२ २७/११/२०

• ई.स. २०२० की २१/८ से २०/९ तक की तिथियों का समयान्तराल...

चन्द्र की गति बढ़ने से (तिथि का समयान्तराल) घटता है, चन्द्र की गति घटने से (तिथि का समयान्तराल) बढ़ता है....

उदा.	दिनांक	तिथि	चंद्र की गति सुबह ५.३० बजे		तिथि का समयान्तराल क. मि.	विशेष
			कला	विकला		
१.	२१/८/२०	भा.सु.३	४४३	४९	२०:५१	गति अधिक तिथि छोटी
२.	२२/८/२०	भा.सु.४	४४१	५६	२०:५४	गति कम तिथि बड़ी
३.	२३/८/२०	भा.सु.५	४३६	४५	२१:०७	"
४.	२४/८/२०	भा.सु.६	४२९	२०	२१:२७	"
५.	२५/८/२०	भा.सु.७	४२०	५०	२१:५१	"
६.	२६/८/२०	भा.सु.८	४१२	१३	२२:१८	"
७.	२७/८/२०	भा.सु.९	४०४	०५	२२:४६	"
८.	२८/८/२०	भा.सु.१०	३९६	४४	२३:१३	"
९.	२९/८/२०	भा.सु.११	३९०	१४	२३:३९	"
१०.	३०/८/२०	भा.सु.१२	३८४	२३	२४:०४	"
११.	३१/८/२०	भा.सु.१३	३७९	००	२४:२७	"
१२.	१/९/२०	भा.सु.१४	३७३	५४	२४:५०	"
१३.	२/९/२०	भा.सु.१५	३६९	०३	२५:१३	"

१४.	३/९/२०	भा.व.१	३६४	२९	२५:३५	"
१५.	४/९/२०	भा.व.२	३६०	२५	२५:५७	"
१६.	५/९/२०	भा.व.३	३५७	१०	२६:१४	"
१७.	६/९/२०	भा.व.४	३५५	०७	२६:२८	"
१८.	७/९/२०	भा.व.५	३५४	४४	२६:३२	गति कम तिथि बडी
१९.	८/९/२०	भा.व.६	३५६	२१	२६:२४	गति अधिक तिथि छोटी
२०.	९/९/२०	भा.व.७	३६०	२१	२६:०३	"
२१.	१०/९/२०	भा.व.८	३६६	५८	२५:२९	"
२२.	११/९/२०	भा.व.९	३७६	१३	२४:४५	"
२३.	१२/९/२०	भा.व.१०	३८७	५८	२३:५४	"
२४.	१३/९/२०	भा.व.११	४०१	३८	२३:०२	"
२५.	१४/९/२०	भा.व.१२	४१६	१८	२२:१३	"
२६.	१५/९/२०	भा.व.१३	४३०	३४	२१:३०	"
२७.	१६/९/२०	भा.व.१४	४४२	४७	२०:५८	"
२८.	१७/९/२०	भा.व.०)	४५१	१३	२०:३३	"
२९.	१८/९/२०	अधिक आ.सु.१	४५४	४३	२०:२०	गति अधिक तिथि छोटी
३०.	१९/९/२०	आ.सु.२	४५२	५५	२०:२१	"
३१.	१९/९/२०	आ.सु.३	—		२०:२९	आ.सु.३ क्षय तिथि है । जिसे माप आ.सु.१ तथा आ.सु.२ से बडी है । फिर भी क्षय तिथि है ।
३२.	२०/९/२०	आ.सु.४	४४६	२६	२०:४८	

अब इस सन्दर्भ में आज कोई भी खुद गणित नहीं करता और मात्र **Swiss EPhemeris के data जो L.L.R. System से DE-430, 431 से** (जिसकी **Accuracy 100%** नहीं है, ये बात वे लोग खुद बताते हैं) तैयार होते हैं, उसे **Software के माध्यम लौकिक पंचांग की परिभाषा में convert किया जाता है**, उससे जन्मभूमि, गायत्री, सीमंधर प्रत्यक्ष पंचांग आदि सब पंचांग तैयार होते हैं। यहाँ दीइ हुई उपरोक्त जानकारी भी जन्मभूमि के आधार तैयार की गई है।

d) आश्चर्य तो इस बात का है, कि खुद नासा अपनी Website पर चन्द्र मास की मीन वैल्यू २९.५३०५८७ दिन दिखाता है, जो १२ महीने में से (कार्तिक, मार्गशीर्ष, आसोज) किसी के भी माप के तुल्य नहीं है। कुछ कम-ज्यादा ही सभी महीने होते हैं। उपरान्त उन १२ महीनों की Total को १२ से भाग देने पर भी यह मीन वैल्यू नहीं आती। इसलिए प्रश्न उठता है, कि १२ महीनों का जो माप नासा देते हैं वह सही है या जो मीन वैल्यू देता है वह सही है? मीन वैल्यू गलत होना सम्भव नहीं है, क्योंकि उस पर ही तो गणित चल रहा है।

e) यदि सभी महीने छोटे-बड़े हों, सभी तिथियाँ छोटी-बड़ी हो, क्योंकि चन्द्र का पृथ्वी के आस-पास का गतिपथ प्रतिदिन बदलाता है, तो नासा ३६००० वर्ष का सभी ग्रहों का, सूर्य का, चन्द्र का रोज-रोज का आँकड़ा कैसे दे सकता है?

जो घटना अवकाश में ५, १०, १५ हजार वर्ष के बाद घटने वाली है, उसका अनुमान किसी गणित पर ही तय हो सकता है, अन्यथा नहीं। तो क्या वह Fix गणित है? सब कुछ परिवर्तनशील है, तो Fix गणित नहीं हो सकता, और ३६००० वर्ष का Data भी नहीं हो सकता। किन्तु अभी तो लम्बे समय का Data मिलता है, इसका अर्थ यह है कि गणित Fix है। अन्य पदार्थों के गुरुत्वाकर्षण से भविष्य में जो गति में बदलाव होने वाला है, वह भी Fix ही हुआ। शास्त्र पाठ भी Fix गणित दर्शाते हैं, मात्र उसमें हर ४००/४०० वर्ष में आवश्यक संस्कार करने होते हैं। या फिर वैज्ञानिक परिभाषा में अन्य अवकाशीय पदार्थों के गुरुत्वाकर्षण बल आदि के कारण होने वाले बदलाव को यदि जोड़ा जाए तो सत्य सामने आ सकता है।

f) आधुनिक खगोलशास्त्री बताते हैं, कि गुरुत्वाकर्षण के कारण दिन, तिथि, मास आदि का कोई माप fix नहीं रहता, उसमें घट-बढ़ होती

है, तो फिर ५, १० या १५ हजार वर्षों बाद किसका कितना गुरुत्वाकर्षण लगेगा इसका आज हमें पता ही नहीं, तो फिर ३६००० वर्ष का डेटा swiss Ephemeris ने किस प्रकार दिया ? और यदि गुरुत्वाकर्षण कब, किसका और कितना लगता है, इसका कोई समीकरण हो, तो फिर यह गणित तो Fix ही हुआ, और वे फार्मूला तो तैयार मिलते ही हैं, जिसकी छानबीन करने से हम स्वयं भी यह तय कर ही सकते हैं। यहाँ खास बात याद रहे, कि DE431 के आधार पर होने वाले लम्बी अवधि के खगोलीय डेटा में एक्यूरेसी कम होती है, यह बात वे लोग स्वयं लिखते हैं, जिसकी जानकारी आगे बातएँगे।

## २) जिनागमों की दृष्टि से :

जिनागमों के अनुसार तो तिथि का नियामक सूर्य नहीं, बल्कि राहु और चन्द्र है। तो इन दोनों का (विज्ञान और जिनागम का) समन्वय कैसे करें ?

a) राहु तो चन्द्र का परिभ्रमण  $८८५ \frac{३०}{६२}$  मुहूर्त =  $२९ \frac{३२}{६२}$  दिन में पूर्ण करता है, इसलिए चन्द्र मास उत्पन्न होता है। और उसे ३० से विभाजन करने से **१ तिथि = १ चंद्र दिन = राहु की दैनिक गति आती है।**

ता कहां ते चंदमसो वड्डोवड्डी आहितेति वदेज्जा ? ता **अड्ड पंचासीते मुहुत्तसते तीसं च बावड्डिभागे मुहुत्तस्स**, ता दोसिणापक्खाओ अन्धगारपक्खमयमाणे चंदे **चत्तारि बायालसते छत्तालीसं च बावड्डिभागे मुहुत्तस्स** जाइं चंदे रज्जति तं. पढमाए पढमं भागं बितियाए बितियं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं चरिमसमाए चंदे स्ते भवति, अवसेसे समाए चंदे स्ते य विरते य भवति, इयण्णं अमावासा, एत्थ णं पढमे पव्वेअमावासे, ता अंधकार पक्खोतो णं दोसिणापक्खं अयमाणे चंदे **चत्तारे बाताले मुहुत्तसते छत्तालीसं च बावड्डिभागा मुहुत्तस्स** जाइं चंदे विरज्जति, तं. पढमाए पढमं भागं बितियाए बितियं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं चरिमे समये चंदे विस्ते भवति, इयण्णं पुण्णिमासिणी, एत्थ णं दोच्चे पव्वे पुण्णिमासिणी (सूत्र ७९ सूर्य प्रज्ञप्ति) (चंद्र प्रज्ञप्ति १३ का प्राभृत)।

अतः दोनों का मेल कैसे करें ? एक ओर शास्त्रवचन और दूसरी ओर प्रत्यक्ष आकाश। चन्द्र की निश्चित कला खुलते-ढकते चन्द्र बिम्ब की बढ़त घटत होती है, जो आँखों से दिखाई देती है, तो समान माप वाली जिनागमोक्त तिथि और आधुनिक खगोल की घट-बढ़ के माप वाली आज की तिथि का कैसे मेल किया जाए ?

## दोनों के बीच समन्वय (समाधान-१)

आधुनिक यूरोपिय मतानुसार, यदि  
सूर्य= $a$ , पृथ्वी= $b$ , और चंद्र= $c$  हो, तो...

अतः, चन्द्र ( $c$ ) पृथ्वी ( $b$ ) के आसपास घूमती है और चंद्र ( $c$ ) युक्त पृथ्वी ( $b$ ) सूर्य ( $a$ ) के आसपास सतत घूमती है।

जबकि जिनमत के अनुसार **मेरु पर्वत= $a$ , चन्द्र= $b$ , और राहु= $c$**  हो,

तो राहु ( $c$ ) चंद्र ( $b$ ) के आसपास घूमता है

राहु ( $c$ ) युक्त चंद्र ( $b$ ) मेरु ( $a$ ) के आसपास सतत घूमता है।

अतः आधुनिक मतानुसार  $c =$  **चन्द्र** और

जिनमतानुसार  $c =$  **राहु** है, अतः

आधुनिक मत के अनुसार चंद्र की जो गति **जो गणित या जो गतिपथ बताया गया है, वह जिनमत के अनुसार राहु की गति, राहु का गणित या राहु का गतिपथ हो सकता है** ऐसा मेरा निजी विचार है।

उपरान्त यहाँ खास ध्यान देने की बात यह है कि **जिनमत निश्चित समय (काल) बीतने पर होने वाली चन्द्र बिम्ब की बढ़-घट को तिथि निर्माण मानता है, तो आधुनिक मत निश्चित अन्तर (क्षेत्र) बीतने पर होने वाली चन्द्र बिम्ब की बढ़-घट को तिथि निर्माण मानता है।** किन्तु दोनों में से कोई भी मत चन्द्र बिम्ब की **निश्चित बढ़-घट को तिथि** के रूप में प्रतिपादित नहीं करता।

सूर्यप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, ठाणांग सूत्र आदि में निर्दिष्ट जैन मत की मान्यता के अनुसार:-

- १) तिथि की वृद्धि कभी नहीं होती,
- २) तिथि अहोरात्रि से छोटी ही होती है,
- ३) इसलिए तिथि का क्षय अवश्य आएगा ही (क्योंकि चन्द्र मास – कर्म मास का मेल करना होता है), अतः

जिनमत के पालन हेतु वृद्धि तिथि नहीं आनी चाहिए, और तिथि का माप समान आना चाहिए और वह भी अहोरात्रि से छोटा होना चाहिए।

किन्तु ऐसा करने जाएँ तो प्रत्यक्ष मान्यता वालों के साथ मेल नहीं होता। हर पांच वर्ष में लगभग २० से २१ घण्टे, अर्थात् लगभग एक दिन का फर्क पड़ता है, जो नीचे दिए अनुसार है। (देखिए परिशिष्ट-१, पेज नं.९६ पर पंचांग का नमूना)

जिनमतानुसार	आधुनिक मतानुसार	फर्क
<b>चन्द्रदिन</b> लगभग २३ घ. ३६ मि.	अनिश्चित, २० से २७ घण्टे के बीच	अनिश्चित
<b>चन्द्रमास</b> २९ दिन १२ घण्टे २३ मि.= २९.५१६१ दिन	२९ दिन १२ घण्टे ४४ मि. =२९.५३०५ दिन	लगभग २० मिनट
<b>चन्द्र वर्ष</b> ३५४ दी. ४ घण्टे ३८ मि.= ३५४.९३ दिन	३५४ दी. ८ घण्टे ४८ मि. =३५४.३६७ दिन	२५० मि. =४ घण्टे १० मि.

नोट : उपरोक्त आधुनिक मत के माप भी अनुमानित हैं।

अब, इस चन्द्र वर्ष के लगभग २५० मिनट के फर्क को प्रतिदिवस में Adjust करें, तो रोज की तिथि में लगभग ४२ सेकिण्ड का बढ़ोतरी होगी। और इस प्रकार यह बढ़त रोज जोड़ते जाएँ तो वर्तमान खगोल के साथ वर्षों-महीनों के बाद लगभग टैली हो जाएगा। जिस वर्ष में एक दिन का फर्क पड़ता था और वह आगे से आगे चलता था, वह मात्र कुछ घण्टों का ही हो जाएगा और आगे नहीं बढ़ेगा।

इसलिए जिनमत और आधुनिक खगोल, दोनों का समन्वय हो, तो वृद्धि तिथि नहीं आएगी क्योंकि तिथि का माप

$$२३ घण्टे ३६ मिनट ४६ सेकिण्ड + ४२ सेकिण्ड =$$

$$२३ घण्टे ३७ मिनट २८ सेकिण्ड होगा, जो अहोरात्रि$$

(२४ घण्टे) से छोटा ही है।

इस प्रकार तिथि का माप भी समान हो गया, इस पद्धति से भी समन्वय

हो सकता है। नक्षत्र मीमांसा नामक मेरी पुस्तक के पेज ५७ पर "शास्त्रीय सिद्धान्त के अनुसार और प्रत्यक्ष के साथ मेल करते हुए पंचांग कैसे बनता है?" इस शीर्षक में लिखे मुद्दों में शास्त्रपाठों के सैद्धान्तिक (निश्चय) तथा गाणितिक (व्यवहार) विभाग करके गाणितिक शास्त्रपाठों का संस्कार करना शास्त्रीय है, ऐसा बताया है, वह आप स्वयं पढ़कर जान लें। इस पद्धति के अनुसार पर्व तिथि की समाप्ति में ३-४-५ घण्टे का फर्क आता है, किन्तु "उदयमि जा सा" नियम से व्यवहार में कभी-कभी दिन का फर्क हो सकता है। **नमूने के लिए देखिए परिशिष्ट-२ पेज १०६ पर**

सत्यदेव शर्मा कृत सूर्य सिद्धान्त व्याख्या पुस्तक के पेज १०४ पर भी निश्चित संस्कार का उल्लेख है :-

ऋग्वेद (३/१/१) में ३३३९ देवों द्वारा अग्नि की पूजा करना कहा है। तथा तै. ब्रा. १/५/२ में कहा है कि 'देवगृहा वै नक्षत्राणि'। २७ नक्षत्र में प्रत्येक को १२४ भांशों में विभक्त किया गया है अतः  $27 \times 124 = 3348$  तथा सूर्य एक तिथि में ९ भांग (चरण) भुक्त करता है। अतः  $3348/9 = 372$  तिथियाँ एक वर्ष में होती हैं। प्रतिवर्ष ३७२ तिथियों से पाँच वर्षों का एक युग प्रदर्शित होता है, लेकिन उपरोक्त ऋग्वेद श्लोक में जो ३३३९ संख्या कही है वह इससे भिन्न है। भिन्न नक्षत्र देवों की भांति ही यह माने की वैदिक ऋषि प्रत्येक वर्ष में प्रत्येक भांश के लिए भिन्न देवता मानते थे। वर्ष में तिथियाँ  $3339/9=371$  मानी जाती थी। १९ वर्ष के एक चान्द्र-सौर चक्र में ३७१ तिथियों के वर्ष होते हैं। इसका अर्थ हुआ की वैदिक ऋषि १९ वर्ष का चान्द्र-सौर चक्र जानते थे।

अतः वेदाङ्ग ज्योतिष में ऋग्वेद पाठ में प्रथम क्रान्तिवृत्त को ३३४८ भांश में विभक्त करके उसके पश्चात् ३३३९ भांश में ९ भांश कम करके परिवर्तित किया। वर्ष या क्रान्तिवृत्त संख्या ३३४८ जो २७ नक्षत्र तथा ६ ऋतुओं की संख्या से विभाजित होनी चाहिये को वास्तविक १९ वर्ष के चक्र के लिए उपयुक्त बनाने के लिए, १ तिथि = ९ भांश से उसको कम किया गया। इस गणना का उत्तर ऋग्वेद (३/१/१) से प्राप्त होता है।

तिथि को दिन के १२४ वें भाग का १२२ भाग (गुना) तुल्य माना हैं। एक सावन वर्ष ३६६ दिनों अथवा ३७२ तिथियों का मानने से इनमें शुद्धि करने की आवश्यकता थी जो ९५ वर्ष में की जाती थी जो १९ वर्ष का गुणक है। चान्द्रमास का एक दिन सूर्योदय काल पर स्थित तिथि अनुसार माना है। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय के मध्य में तिथि के आरम्भ होने तथा समाप्त होने पर उसका क्षय माना जाता है। अतः इस पद्धति से चान्द्रदिवस का मान भिन्न होता है।

यहाँ कथित प्रकार से वेदाङ्गज्योतिषानुसार तथा आधुनिक अनुसार शुद्ध तिथि

$$\text{मान में अन्तर } \frac{354.367}{360} - \frac{122}{124} = \frac{5}{10000} \text{ से अल्प है। इससे 5 वर्षों के युग में एक दिवस से अल्प त्रुटि उत्पन्न होती है।}$$

वैदिक ग्रन्थों तथा ज्यामितीय वेदियों के द्वारा सदियों पूर्व जो भारतीय यह जानते थे कि वर्ष 365 दिवस से अधिक तथा 366 दिवसों से अल्प होता है को, वेदाङ्गज्योतिष प्रतिपादित करता है। 1830 दिवस अथवा अधिक शुद्ध 1826 दिवसों का 5 वर्ष का युग जो निश्चित किया गया था उसका कारण यह था कि इसमें 61 का भाग जाता है। इससे

$$\text{यह पूर्वोक्त } \frac{122}{124} = \frac{61}{62} = \text{तिथि मान की तुल्यता अनुरूप सिद्ध होती है। अतः चन्द्रमा}$$

की गति के लिए वेदाङ्गज्योतिष शुद्ध था। 1830 दिवसों के युग में चन्द्रोदय इससे 62 अल्प अर्थात्  $1830-62 = 1768$  कहे हैं जिसे 27 नक्षत्र 67 बार एक युग में भुक्त होते हैं, जो युगदिवसों 1830 से 21 अल्प अर्थात्  $1830-21 = 1809$  हैं। अतः चन्द्रमा के

$$\text{उदय का मध्यम समय } \frac{1830}{1768} = 24 \text{ घंटे } 50.4864 \text{ मिनट होता है।}$$

वैज्ञानिक द्रष्टिकोण से तिथि का माप छोटा-बड़ा होने का मुख्य कारण ग्रैविटी और लम्बवृत्त गतिपथ (=भ्रमणकक्षा) है ।

तो क्या जिनमत द्वारा निर्दिष्ट अवकाशीय पदार्थों की व्यवस्था और आधुनिक वैज्ञानिकों द्वारा निर्दिष्ट अवकाशीय पदार्थों की व्यवस्था में सामंजस्य सम्भव हो सकता है ?

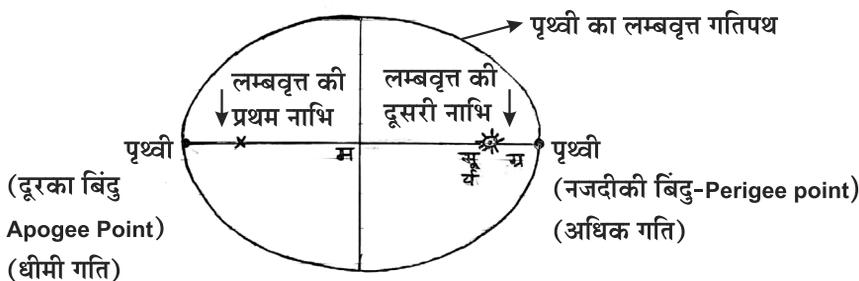
हाँ ! दोनों के बीच अत्यन्त वैज्ञानिक और तर्कपूर्ण तरीके से शास्त्रपाठ का अर्थघटन करके मेल करना १००% सम्भव है । इससे पूर्व कुछ जानकारी ले लेते हैं ।

१) केप्लर नामक खगोलशास्त्री के दूसरे नियम के अनुसार सूर्य या पृथ्वी के आस-पास घूमते अवकाशीय पिण्ड भले ही लम्बवृत्त में, कभी धीमी कभी तेज गति से घूमते हों, किन्तु वे सब अपनी-अपनी भ्रमणकक्ष में एक सरीखे समय में, एक सरीखे विस्तार = क्षेत्रफल = Area तय करते हैं । **Kepler's second Law of Planetary motion. A radius vector joining any planet to the sun sweeps out equal areas in equal lengths of time.** अर्थात् (a) धीमी गति हो, तब १२ डिग्री का अन्तर बिताने में भले ही समय बढ़े, या तेज गति हो तब १२ डिग्री का अन्तर तय करने में भले ही समय घटे, अर्थात् निश्चित समय में यदि गति धीमी हो तो कम डिग्री अन्तर तय होगा और यदि गति अधिक होगी तो अधिक डिग्री अन्तर तय होगा, किन्तु

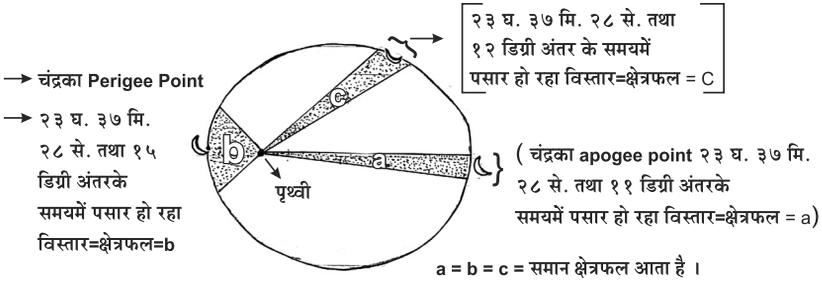
(b) क्षेत्रफल तो निश्चित समय में उतना ही पूर्ण होता है ।

उदाहरण :- निश्चित २४ घण्टे में अन्तर ११ डिग्री या १३ डिग्री तय हुआ होगा, किन्तु दोनों का क्षेत्रफल तो समान ही होगा । इसकी आकृति इस प्रकार है :-

### १. आधुनिक गणित के अनुसार पृथ्वी की सूर्य के आस-पास की लम्बवृत्त भ्रमणकक्षा



## २. पृथ्वी के आस-पास चन्द्र की लम्बवृत्त भ्रमणकक्षा और समान समय में समान क्षेत्रफल की पूर्ति



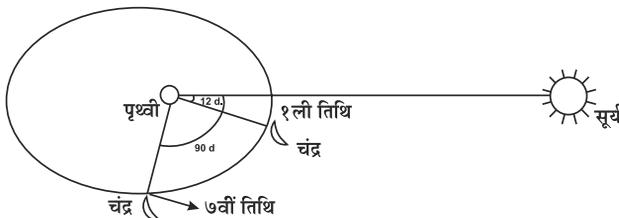
अर्थात् क्षेत्रफल (विस्तार) की दृष्टि से रोज समान अन्तर ही पूर्ण होता है ।

२) इसलिए शास्त्रीय गणित के अनुसार की तिथि के २३ घण्टे ३६ मिनट या २३ घण्टे ३७ मिनट (संस्कारयुक्त) समय में भी पृथ्वी के आस-पास चन्द्र (a) कोई भी दूरी से, या (b) कोई भी गति से भ्रमण करे तो भी क्षेत्रफल समान ही (लम्बवृत्त भ्रमणकक्षा के विस्तार के  $\frac{12}{360}$  भाग तथा जैन मतानुसार  $\frac{12}{62}$  कला = क्षेत्रफल) तय होगा, भले ही सूर्य या चन्द्र के बीच १२ डिग्री का अन्तर पूर्ण हुआ हो या नहीं हुआ हो या अधिक पूर्ण हुआ हो ।

अभी का हिन्दू गणित (नासा के वैज्ञानिक Data तथा Swiss Ephemeris का तिथि के साथ कोई लेना-देना नहीं है) चन्द्र का पृथ्वी के आस-पास के गतिपथ में = भ्रमणकक्षा में = ORBIT = परिधि में=Circumference में सूर्य की अपेक्षा चन्द्र का स्थान जो १२-१२ अंश बढ़ता-घटता है, उसे तिथि मानता है ।

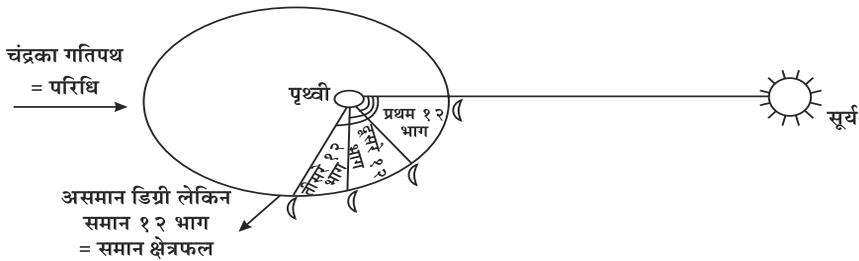
• आकृति:-३

चंद्र का गतिपथ=परिधि पर १२-१२ अंश का बढ़ता या घटता हुआ कोना=तिथि



इस प्रकार चन्द्र का गतिपथ लम्बगोल और ग्रैविटी का फोर्स लगने के कारण **१२ अंश का गतिपथ** पूर्ण होने में २१ से २७ घण्टे का समय लग सकता है, इसलिए तिथि छोटी-बड़ी होती है, वृद्धि तिथि आती है। जबकि **वैज्ञानिक केप्लर** के अनुसार अवकाशीय घटना में मात्र गतिपथ, अर्थात् ORBIT यानि परिधि का जितना महत्त्व है, उससे अधिक महत्त्व उस गतिपथ पर चलने वाले किसी भी ग्रह, उपग्रह द्वारा तय होने वाले विस्तार, क्षेत्रफल यानि Area का है। इसलिए पृथ्वी के आस-पास के गतिपथ, अर्थात् भ्रमणकक्षा = ORBIT = परिधि पर घूमने वाले **चन्द्र, सूर्य की अपेक्षा निश्चित समय में जितना निश्चित स्थान = क्षेत्रफल = Area दूर या करीब जाता है** (उसके अनुसार तिथि का सृजन माना जा सकता है) इस प्रकार कुल **क्षेत्रफल या विस्तार के ३६० हिस्से** करके रोज के १२ हिस्से, इस प्रकार वह ३० दिन में  $१२ \times ३० = ३६०$  हिस्सों का क्षेत्र पूर्ण करता है। अतः ३६० हिस्सों के समकक्ष क्षेत्र वाले **क्षेत्रफल के रोज के १२ भाग, १२ भाग...पूर्ण होते हैं और ये समान क्षेत्रफल वाले होते हैं और समान समय में पूर्ण होने वाले होते हैं।**

• आकृति:—४



अतः **वैज्ञानिक दृष्टिकोण और प्रचलित जन्मभूमि आदि के तिथि-गणित के दृष्टिकोण में फर्क है, यह स्पष्ट होता है।**

३) इधर जिनमत को भी १२ डिग्री के गणित के साथ कोई सीधा सम्पर्क नहीं है। उपरान्त (a) राहु चन्द्र के आस-पास **वृत्त या लम्बवृत्त गतिपथ में घूमता ह**, ऐसा स्पष्ट उल्लेख नहीं है, (b) राहु **समान या भिन्न गति से** चन्द्र बिम्ब को ढकता या खोलता है, इसका कोई उल्लेख मूल आगम पाठ में नहीं है, (c) राहु रोज चन्द्र के **समान विस्तार के ही भाग को खोलता / बन्द करता है**, ऐसा भी उल्लेख नहीं है। हाँ मात्र  $४४२ \frac{४६}{६२}$  मुहूर्त तक चन्द्र बिम्ब को खोलता है और  $४४२ \frac{४६}{६२}$  मुहूर्त तक चन्द्र बिम्ब को ढकता है, इसका वर्णन सूर्यप्रज्ञप्ति के मूल सूत्र ७९ में है,

**तिथि मीमांसा**

जो पहले बता दिया गया है ।

### ता कहां ते चंदमसो...सूत्र ७९ सूर्यप्रज्ञप्ति-चन्द्रप्रज्ञप्ति

अर्थात् प्रथम दिन ( $२९\frac{३२}{६२}$  मु.में) चन्द्र बिम्ब का प्रथम भाग खुलता या ढकता है,

दूसरे दिन ( $२९\frac{३२}{६२}$  मु.में) चन्द्र बिम्ब का दूसरा भाग खुलता या ढकता है,

तीसरे दिन ( $२९\frac{३२}{६२}$  मु.में) चन्द्र बिम्ब का तीसरा भाग खुलता या ढकता है,

१५ वें दिन ( $२९\frac{३२}{६२}$  मु. में) चन्द्र बिम्ब का १५वां भाग खुलता या ढकता है, किन्तु उन सब **चन्द्र बिम्बों के भाग समान ही है**, ऐसा नहीं है ।

किन्तु चन्द्र बिम्ब के प्रत्येक भाग के खुलने / ढकने का **समय** ( $२९\frac{३२}{६२}$  मु.) **समान ही है**, और हाँ, इसलिए प्रत्येक **दिन (तिथि को) खुलने या ढकने वाले भाग का क्षेत्रफल, यानि विस्तार** (राहु के प्रकाश का बढ़ने या घटने वाला रोज का नया क्षेत्र या विस्तार भी) **समान ही होता है ।**

**a)** यदि राहु का गतिपथ वृत्त हो तो चन्द्र बिम्ब के ४-४ भाग को तथा राहु की (भ्रमण कक्षा के) समान प्रमाण के क्षेत्रफल को खोलता या ढकता है । **b)** यदि राहु का गतिपथ लम्बवृत्त हो भ्रमण कक्षा के कुल क्षेत्रफल के समान-समान भागों को रोज खोलता या ढकता है अर्थात् **६२ कला = कुल क्षेत्रफल, ४-४ कला = राहु द्वारा प्रतिदिन आवृत्त किया जाने वाला या खुलने वाला क्षेत्रफल या विस्तार** । (वैज्ञानिक दृष्टि के अर्ध परिधि के १८० भाग को ही यहाँ ६२ भाग या कला कहा गया है) इसी पदार्थ को थोड़ा अच्छे से समझते हैं ।

उपरोक्त कहे अनुसार जिनमत में सूर्य और चन्द्र का अन्तर १२-१२ डिग्री बढ़े, इस मान्यता का तिथि के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है । जिनमत तो राहु द्वारा होने वाली चन्द्र की कला = चन्द्र के बिम्ब को खोलने / ढकने को ही तिथि मानता है ।

**यहाँ कला, यानी मात्र चन्द्र बिम्ब का ही निश्चित भाग नहीं, किन्तु कला यानि राहु बिम्ब का भी एक निश्चित भाग और राहु बिम्ब से चन्द्र बिम्ब तक के अवकाश के निश्चित भाग का भी समावेश है** । इसे गणितीय भाषा में क्षेत्रफल, विस्तार या Area कहते हैं । अर्थात्, (१) आवृत्त करने वाला राहु बिम्ब, (२) नया आवरित होता / या मुक्त होता राहु और चन्द्र बिम्ब के मध्य का अवकाश, और

(३) आवृत या मुक्त होने वाला चन्द्र बिम्ब । इन तीनों का समूह कला, क्षेत्रफल या विस्तार है ।

संक्षेप में, **राहु का प्रकाशक्षेत्र कला है, मात्र चन्द्र बिम्ब का आवृत या मुक्त होना ही कला नहीं है ।**

शास्त्रपाठ भी यही कहता है । यहाँ निश्चित माप की कला की, अर्थात् क्षेत्रफल की बात है । एक दिन में राहुबिम्ब के १५ (निश्चित या अनिश्चित) भाग से चन्द्रबिम्ब के १५ (निश्चित या अनिश्चित कोई भी) भाग क्रमशः खुलते या ढकते हैं । इस प्रकार क्रमशः १५ चन्द्रदिवस में राहुबिम्ब के १५ भाग से चन्द्रबिम्ब के १५ भाग खुलते हैं, फिर १५ चन्द्रदिवस में राहुबिम्ब के १५ भाग से चन्द्रबिम्ब के १५ भाग ढकते हैं।

अर्थात् राहु जब समीप होता है तब गति अधिक होने के कारण चन्द्र बिम्ब अधिक (तेज गति से) ढकता / खुलता है । और जब राहु दूर होता है, तब गति धीमी होने के कारण चन्द्र बिम्ब कम (धीमी गति से) ढकता / खुलता है । किन्तु राहु का प्रकाश क्षेत्र (क्षेत्रफल) तो समान ही होता है ।

इस प्रकार २३ घण्टे, ३६ मि. या २३ घण्टे साधिक ३७ मि. (संस्कारित) के निश्चित समय का १ भाग होता है, और वही तिथि होती है, और कुल ३० भाग लेने पर चन्द्र मास या राहु का चन्द्र के आस-पास का परिक्रमण सम्पूर्ण रूप से पूरा होता है । (राहु के गतिपथ को जानने के लिए देखिए चित्र नं. १)

मण्डल प्रकरण की गाथा-६८ की टीका में जीवाभिगमवृत्ति का पाठ दिया गा है : “**पन्नरसाभागेण य, चंदं पन्नरसमेव तं वरइ ।**

**पन्नरसविभागेण य, तेणेव कमेणऽवक्कमइ ॥१॥”**

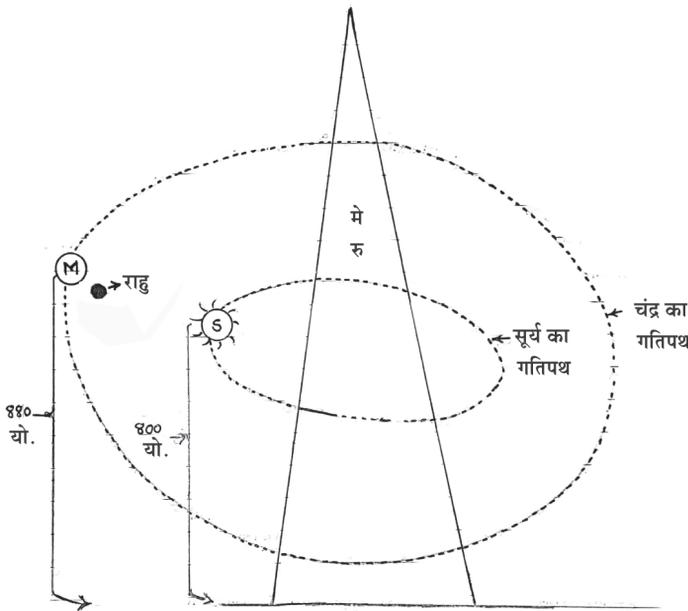
व्याख्या—कृष्णपक्षे प्रतिदिवसं राहुविमानं स्वकीयेन पञ्चदशभागेन तं चंद्रमिति चन्द्रविमानस्य पञ्चदशमेव भागं 'वृणोति' आच्छादयति । शुक्लपक्षे पुनस्तमेव प्रतिदिवसं पञ्चदशभागमात्मीयेन पञ्चदशभागेन 'व्यतिक्रामति' मुञ्चतीत्यर्थः । **जीवाभिगमवृत्तिगतमिदम् ॥**

१२ डिग्री=तिथि, इस अर्थ को छोड़कर **क्षेत्रफल के** (विस्तार के) आधार पर तिथि को मापें तो **जिनमत द्वारा निर्दिष्ट तिथियुक्त अवकाशीय घटना** और **प्रत्यक्ष अवकाशीय घटना** इन दोनों में भेद का कोई स्थान नहीं रहेगा । निष्पक्ष गीतार्थों से इस सन्दर्भ में गम्भीर रूप से विचार करने की नम्र विनती है । अर्थात्पत्ति से ऐसा लगता है, कि राहु का गतिपथ भी लम्बवृत्त होगा, क्योंकि प्रत्यक्ष आकाश में चन्द्रबिम्ब रोज समान Level पर खुलता/ढकता दिखाई नहीं देता । इसकी प्रतिदिन की जानकारी प्रतिशत की दृष्टि से <https://svs.gsfc.nasa.gov/4768> इत्यादि वेबसाइट पर प्राप्त होती है, जो इस प्रकार है :

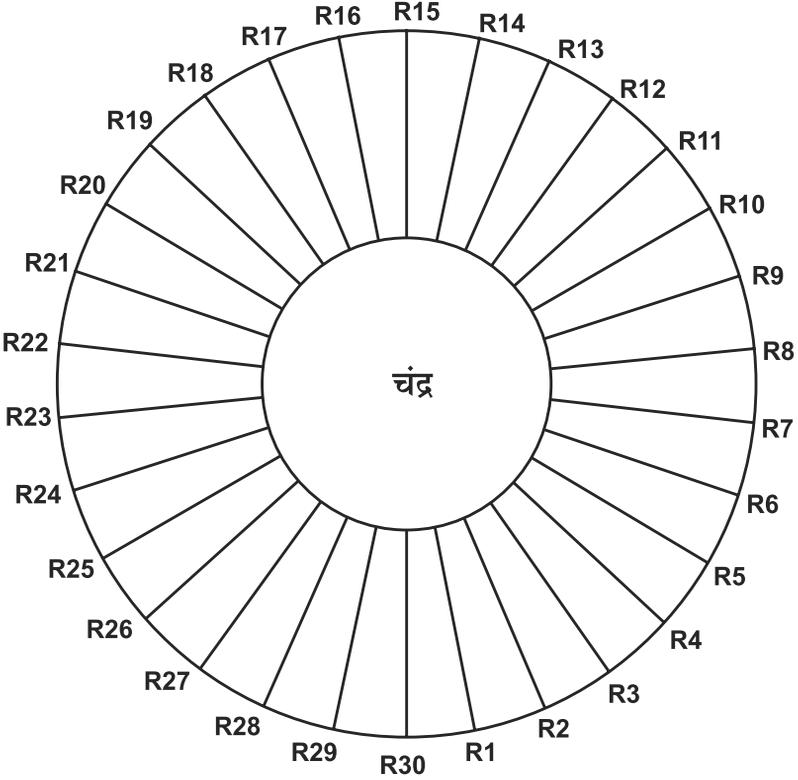
Date	Phase	Distance (KM) Between Moon to Earth
<b>March 2020</b>		
28	11.5%	402772
29	18.3%	399926
30	26.4%	396242
31	35.6%	391743
<b>April 2020</b>		
1	45.6%	386524
2	56.2%	380778
3	66.8%	374806
4	76.9%	369010
5	85.9%	363869
6	93.1%	359880
7	97.9%	357480
8	99.8%	356966
9	98.6%	358426
10	94.6%	361714
11	88%	366486
12	79.7%	372264
13	70.1%	378524
14	59.9%	384771
15	49.7%	390589
16	39.7%	395671
17	30.4%	399823
18	22%	402952
19	14.7%	405054
20	8.7%	406182
21	4.2%	406430
22	1.3%	405904
23	0.2%	404704
24	0.9%	402907
25	3.4%	400563
26	7.8%	397696
27	13.9%	394316
28	21.6%	390433

इसके उपरान्त चन्द्र ८८० योजन नीचे होने के कारण राहु के श्यामवर्ण वाले विमान पर (८८० यो. से ४ अंगुल नीचे नित्य राहु है) ८०० यो. ऊँचाई पर स्थित चन्द्र से ८० योजन नीचे स्थित सूर्य की किरणें गिर सकती हैं। शास्त्रों में सूर्य का उर्ध्व प्रकाश १०० योजन बताया गया है, इसलिए **राहु की परछाई चन्द्र बिम्ब पर गिरती होगी, ऐसा वैज्ञानिक कारण भी हो सकता है।** जिनमतानुसार तो राहु के रत्नों का श्याम वर्ण का प्रकाश ही चन्द्र को खोलता / ढकता है। उपरान्त **चन्द्र-राहु का स्थान और सूर्य का स्थान सतत घूमता होने के कारण प्रकाश के प्रक्षेपण परावर्तन की दिशा और अन्तर में भी बदलाव होता है,** इसलिए भी चन्द्र बिम्ब प्रति तिथि को (प्रतिदिन) थोड़ा-बहुत खुलता या ढकता है। किन्तु प्रति तिथि को समान क्षेत्रफल तय करने में राहु को कोई नहीं रोक सकता, उपरान्त इस दृष्टिकोण को जिनागम और वैज्ञानिक दृष्टि का समर्थन होने के कारण तिथि का पाप Fix ही रहता है। उपरोक्त पदार्थ को समझने हेतु नीचे दी गई आकृतियाँ ध्यान से देखिए :

**आकृति : १) मेरु के आस-पास भिन्न-भिन्न ऊँचाई पर एवं अपनी-अपनी भ्रमण कक्षा में सतत घूमते सूर्य, चन्द्र और राहु के विमान**



आकृति : २a) : १) वृत्त पथ पर चन्द्र के आस-पास घूमता राहु का विमान और इस कारण होने वाली चन्द्र की कलाओं=तिथि का निर्माण (यह काल्पनिक आकृति है)

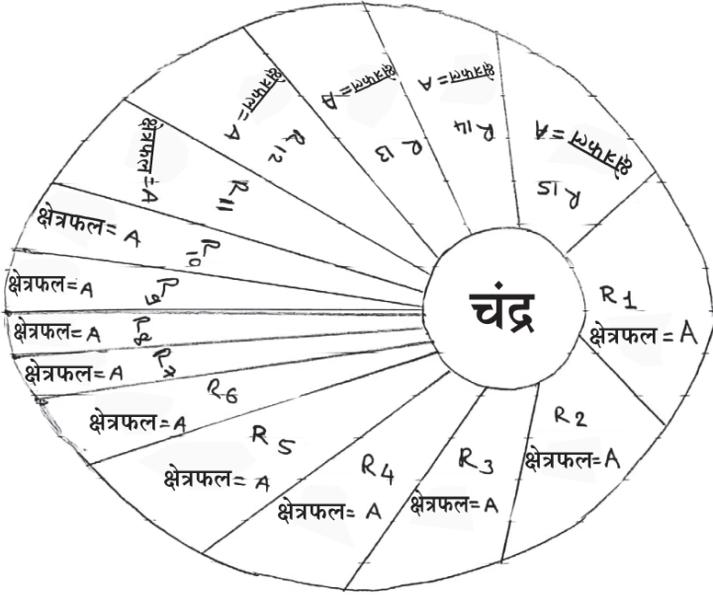


आकृति की समझ :-

- $R1 = R2 = R3 \dots = R30 =$  राहु द्वारा खोली / ढकी जाने वाली चन्द्र की कलाएँ=तिथि=२३ घ. ३७ मि. २८ से तिथि का माप ।
- समान विभाग = समान क्षेत्रफल द्वारा तिथि का निर्माण ।
- $\square =$  बढ़ता या घटता राहु का प्रकाश क्षेत्र = समान विभाग ।
- $R =$  राहु का विमान ।
- $R1 =$  वद-1,  $R1 + R2 =$  वद-2,  $R1 + R2 \dots R15 =$  वद अमावस ।
- $R1 \dots + R15 - R16 =$  सुद-1,  $R1 + R15 - R16 \dots + R30 =$  सुद पूनम् ।

तिथि मीमांसा

आकृति : २b) : २) लम्ब वृत्त पथ पर चन्द्र के आस-पास घूमता राहु का विमान और इस कारण होने वाली चन्द्र की कलाओं=तिथि का निर्माण



आकृति की समझ :-

- $R_1 = R_2 = R_3 \dots = R_{30}$  = राहु द्वारा खोली / ढकी जाने वाली चन्द्र की कलाएँ=तिथि=२३ घ. ३७ मि. २८ से. तिथि का माप ।
- $R$  = राहु का विमान ।
- $\square$  = राहु का प्रकाश क्षेत्र = असमान विभाग ।
- असमान विभाग = समान क्षेत्रफल =  $A$  द्वारा समान समय की तिथि का निर्माण ।
- e,f) = आकृति २a अनुसार

नोंध : जगह के अभाव से इधर १५ तिथियाँ ही दीखाई है ।

ऐसा ही प्रतिपादन ज्योतिष करण्डक के ४ थे प्राभृत में है—एतावता

हि कालेन चंद्रमंडलगतः पूर्वोदितप्रमाणः षोडशो भागो हानिं वृद्धिं चोपगच्छति वर्द्धते च, तत एतावनेव तिथेः परिमाणकालः ।

तिथि मीमांसा

अतः ज्योतिष करण्डक के अनुसार भी निश्चित कला खुलने / ढकने में लगने वाला अनिश्चित समय तिथि हो, ऐसा नहीं है, किन्तु निश्चित समय में खुलने या ढकी जाने वाली अनिश्चित कला (प्रचलित अर्थानुसार चन्द्र बिम्ब का भाग) तिथि है। जितना भाग खुलता या ढकता है, उतने परिमाण वाली अर्थात् चन्द्र बिम्ब के भाग या कलाओं जितनी निश्चित परिमाण वाली प्रत्येक तिथि बनती है।

इसके अलावा जिनागामों के अनुसार सूर्य-चन्द्र ग्रहण के लिए भी नित्यराहु और पर्वराहु की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

१) चन्द्रग्रहण : सदैव पूर्णिमा के दिन ही चन्द्र ग्रहण होता है।

a) वैज्ञानिक मान्यता : चन्द्र पर-प्रकाशित होने के कारण प्रकाश का मूल स्तोत्र सूर्य, और उससे प्रकाशित होने वाले चन्द्र के मध्य जब पृथ्वी आ जाए तब सूर्य का प्रकाश चन्द्र पर नहीं पहुँच पाता, और पृथ्वी की परछाई चन्द्र पर गिरती है, इसलिए चन्द्रग्रहण होता है।

b) आगमिक मान्यता : चन्द्र स्व-प्रकाशित होने पर भी पर्वराहु का विमान पृथ्वी और चन्द्र के बीच आता है, तब पर्वराहु के कारण चन्द्र बिम्ब ग्रस्त हो जाता है, और चन्द्रग्रहण होता है। चन्द्र के आस-पास घूमता नित्यराहु का विमान पूर्णिमा के दिन सम्पूर्ण चन्द्र बिम्ब को मुक्त करता है, इसलिए नित्यराहु, चन्द्र बिम्ब और पृथ्वी के बीच उपस्थित नहीं होता, और पर्वराहु बीच में आने के कारण चन्द्रग्रहण होता है।

उपरान्त पूर्णिमा के दिन सूर्य और चन्द्र लगभग  $920^\circ$  (आमने-सामने) की दूरी पर होते हैं, यह बात आगमिक और वैज्ञानिक, दोनों मान्यताओं से सिद्ध होती है। और चन्द्रग्रहण उत्कृष्ट से  $3\frac{1}{2}$  वर्ष में और सूर्यग्रहण ४८ वर्षों में होता है, और जघन्य से दोनों ६ महीनों में होते हैं, ऐसा शास्त्र कहते हैं। (गा. ७७ मण्डल प्रकरण)

इस बात का भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ तथा प्रत्यक्ष के साथ मेल होता है।

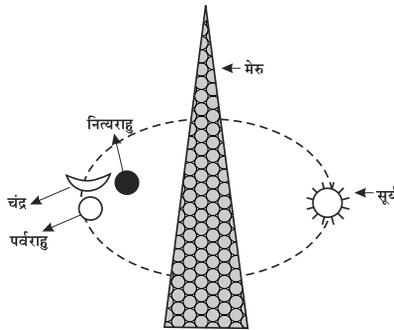
उदाहरण : १) ता. १०/१/२०२० पो.सु.-१५ (पूर्णिमा), २) ता. ५/६/२०२० जे.सु.१५, ३) ता. ५/७/२०२० अ.सु.-१५ पहले पांच महीनों में और बाद में एक महीने के अन्तर से ही चन्द्रग्रहण हुआ, किन्तु ये सब मांघ चन्द्रग्रहण हैं, जिसमें चन्द्र बिम्ब मात्र अधिक Dark बनता है। कहीं भी लेशमात्र भी ग्रसित नहीं होता, या ज्योतिष के अनुसार इसकी कोई असर नहीं होती। इसलिए एक के बाद एक ग्रहण होने पर भी (ग्रस्ति ग्रहण में) जघन्य से ६ महीनों का नियम नहीं टूटता।

२) **सूर्यग्रहण** : सूर्यग्रहण सदैव अमावस्या के दिन ही होता है ।

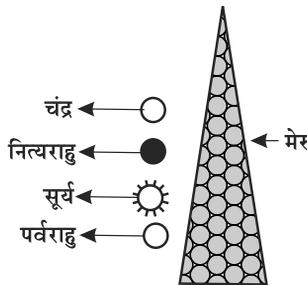
**वैज्ञानिक मान्यता** : सूर्य और पृथ्वी के बीच चन्द्र आने से सूर्य ढक जाता है । चन्द्र पृथ्वी से नजदीक है, इस तुलना में सूर्य पृथ्वी से काफी दूर है । जैसे नजदीक स्थित छोटा व्यवधान भी (अन्तरायकारक पदार्थ) दूर स्थित बड़े द्रव्य (पदार्थ) को ढक देता है, वैसे ही छोटा चन्द्र भी पृथ्वी के निकट होने के कारण सूर्य को आच्छादित कर देता है । यही सूर्यग्रहण है ।

**आगमिक मान्यता** : सूर्य के नीचे घूमते पर्वराहु के विमान से सूर्यग्रहण होता है । अमावस्या होने के कारण चन्द्र नित्यराहु से और सूर्य पर्वराहु से ग्रसित होता है । वैज्ञानिक मान्यता के अनुसार अमावस को सूर्य, चन्द्र और पृथ्वी, तथा आगमिक मान्यता के अनुसार चन्द्र, नित्यराहु, सूर्य और पर्वराहु एक ही राशि-नक्षत्र में होते हैं, और सबके मध्य  $0^\circ$  का कोना होता है ।

**आकृति a) चन्द्रग्रहण : पूर्णिमा के दिन**



**आकृति २) सूर्यग्रहण : अमावस्या के दिन**



# आराधना का नियामक कौन ?

स्थूल गणित या सूक्ष्म गणित ?

पच्चक्खाण ग्रहण या प्रतिक्रमण ?

पूर्वकालीन प्राचीन ग्रन्थकारों के ग्रन्थ या

मध्यकालीन ग्रन्थकारों के ग्रन्थ ?

वैज्ञानिक दृष्टिकोण को गौण करके मात्र धार्मिक दृष्टि से विचार करें, तो नीचे दी गई पद्धति से समाधान मिलता है। यहाँ एक बात ध्यान रहे कि एक मान्यता की इतनी व्यापक चर्चा है कि वर्तमान जैन टिप्पण में स्थूल गणित है, अतः इसे उपादेय नहीं माना जा सकता। और वर्तमान के पंचांग सूक्ष्म गणित वाले हैं, इसलिए वे उपादेय हैं। जो कि ऐसा मानना या कहना तो सर्वज्ञ प्रभु या उनके अनेक विद्वान आचार्यों को तुच्छ समझने जैसी आशातना नहीं तो और क्या है ? ऐसा मानने वालों से प्रश्न करने की इच्छा होती है, कि सूक्ष्म गणित वाले जन्मभूमि आदि पंचांगों में अष्टमी की वृद्धि होती हो, तो दूसरी अष्टमी वाले दिन देवसि प्रतिक्रमण आदि आराधना करें तो उस दिन तो प्रतिक्रमण के समय तिथि तो नवमी हो चुकी होती है। अर्थात् आराधना हेतु तो स्थूल गणित ही प्रयुक्त हुआ। **आराधना हेतु स्थूल गणित वाला जैन टिप्पण नहीं चलता, ऐसा कहने वालों ने आराधना हेतु सूक्ष्म लौकिक गणित को स्थूल बनाकर ही तो स्वीकार किया है।** इसलिए वृद्धि तिथि, जो शास्त्रोक्त नहीं है और आर्य संस्कृति को स्वीकार्य नहीं है, उसे माना जा रहा है। इस कारण जिनाज्ञा भंग हो रही है, संघभेद और संक्लेश की वृद्धि होने जैसे अनिष्ट इस परम्परा में खड़े हो रहे हैं। तो इसकी बजाय आराधना हेतु प्रत्यक्ष के साथ विशेष बाधा न आए और जिनागमों की सापेक्षता भी बनी रहे, ऐसा मार्ग अपनाने में क्या आपत्ति है ?

१) एक मान्यता ऐसी है कि मुहूर्त शुद्धि के लिए सूक्ष्म गणित होता है, आराधना के लिए तो स्थूल गणित ही होता है। इस बात को स्वीकार करने में विवेक है, सत्य है और शास्त्र सापेक्षता भी है, क्या ऐसा नहीं लगता ?

२) अब एक प्रश्न यह भी है कि स्थूल या सूक्ष्म गणित, इन दोनों से तैयार होने वाले पंचांगों का हम आराधना के लिए उपयोग करते हैं, अब आराधनाएँ तो बहुत हैं और पूरे दिन भी चलती हैं। सुबह के प्रतिक्रमण से रात के संथारा पोरिसी तक की कौन-कौन सी आराधनाएँ उस पर्व तिथि में होनी चाहिए ? **कौनसी आराधना निश्चय तिथि में, कौनसी आराधना व्यवहार तिथि में हो तो चलेगा ?** इसका विचार और निर्णय करना होगा। श्राद्धविधिकार ने पहले तो सुबह के पच्चक्खाण के समय में जो तिथि सूर्योदय के समय की हो उसे प्रमाण मानने का बताया, और फिर पूजा, प्रतिक्रमण आदि सूर्योदय की वेला में जो तिथि हो उस तिथि में करना बताया है। अर्थात् सांध्य प्रतिक्रमण करते समय वह तिथि न भी हो, मात्र सूर्योदय के समय ही वह पर्व तिथि हो तो भी उस सूर्योदय के समय की तिथि को पूरा दिन मानकर आराधना करनी चाहिए। जैसे अष्टमी की आराधना, जैसे यदि निश्चय से अन्य तिथि (नवमी) हो किन्तु सूर्योदय के समय अष्टमी हो तो उस दिन पर्व तिथि (अष्टमी) अखण्ड रूप से माननी तथा उसकी ही आराधना करनी चाहिए। तपागच्छ की परम्परा में आज भी इसका प्रचलन है :

**“पूआ पच्चक्खाणं, पडिकमणं तहय नियमगहणं च,  
जीए उदेह सूरु, तीइ तिहीए उ कायव्वं ॥१॥”**

अन्य गच्छ इस परम्परा को महत्त्व नहीं देते और संवत्सरी प्रतिक्रमण के समय जब निश्चय से चतुर्थी (या पंचमी) हो उस दिन को संवत्सरी मानते हैं और आराधना करते हैं। अर्थात् “उदयंमि जा सा” इस श्लोक को न मानते हुए, उन परम्पराओं में निश्चय तिथि को महत्त्व दिया गया है। जबकि तपागच्छ आराधना हेतु पहले से ही व्यवहार तिथि को ही महत्त्व देता है, इसलिए स्थूल गणित को नियामक मानता है, सूक्ष्म गणित को नहीं।

वास्तव में तो निष्पक्ष गीतार्थों को आराधना के नियामक के रूप में १. स्थूल गणित रखना या सूक्ष्म गणित ? २. व्यवहार तिथि माननी या निश्चय तिथि ? ३. श्राद्धविधि के शास्त्रपाठ मानने या सूर्यप्रज्ञप्ति आदि के ? इन मामलों में ठोस चर्चा-विचारणा करनी चाहिए, क्या ऐसा नहीं लगता ?

यदि कोई यह कहे, कि "क्षये पूर्वा" के प्रघोष का क्या ? तो प्रश्न यह है, कि ऐसा कोई प्रघोष शास्त्रीय है या नहीं ? यह प्रघोष पू.उमास्वाति वाचक का है या नहीं, यह पता ही न हो, तो इसके कारण **सर्वज्ञभाषित शास्त्रीय पंचांग के सत्य की उपेक्षा कैसे की जा सकती है ?** अन्य सभी स्थानों पर यदि शास्त्र को ही मुख्य माना जाता है, तो इस सन्दर्भ में शास्त्रों की अवज्ञा क्यों की जा रही है ? उपरान्त प्रघोष का क्या अर्थ है ? जिसे आजकल **किंवदन्ति** कहा जाता है, यही या कुछ और ? शास्त्र की अवज्ञा करके किंवदन्ति को कितना महत्त्व दिया जाए ? **कटु सत्य यह है**, कि वर्तमान के हमारे पंचांग में गणित या पर्व तिथि आराधना के नियामक के रूप में जितना महत्त्व:

१) मध्यकालीन "पर्युषणा स्थिति विचार" तथा प्रस्तुत तिथि गणित में इसका अनुसरण करने वाले "श्राद्धविधि" ग्रन्थ के "क्षये पूर्वा" वाले प्रघोष को, तथा "उदयमि जा सा" जैसे पराशर आदि लौकिक मान्यता को प्रदर्शित करने वाले श्लोकों को दिया गया है, तथा

२) उपरोक्त दोनों ग्रन्थों के रचयिता **पू. हर्षभूषण गणिवर** तथा **पू. रत्नशेखर वि.म.सा.** को जितना महत्त्व दिया है, उसके सामने...

१) "सूर्यप्रज्ञप्ति-चन्द्रप्रज्ञप्ति" जैसे उपांग सूत्रों, **ज्योतिष करण्डक** जैसे अतिविश्वसनीय और प्राचीन ग्रन्थों तथा **टाणांग सूत्र** जैसे मूल अंग सूत्र और आगमों और इन ग्रन्थों के तिथि-गणित का प्रतिपादन करने वाले **सूत्र ४८, ४९, ७५, ७९ आदि** (सूर्यप्रज्ञप्ति-चन्द्रप्रज्ञप्ति),

—→ **प्राभृत ३, ४ आदि** (ज्योतिष करण्डक),

—→ **सूत्र २९ आदि** (टाणांग सूत्र), को तथा

२) उन ग्रन्थों के तथा अंग-आगमों के रचयिता **गणधर भगवन्तो, १४ पूर्वधरो, बहु श्रुतधरो** को उतना महत्त्व नहीं दिया जाता, यह इनकी आशातना है, क्या ऐसा नहीं लगता ?

कदाचित् मान लें कि "क्षये पूर्वा" का प्रघोष शास्त्रीय है, पू. उमास्वाति जी का है, फिर भी नीचे दिए अनुसार विचार करें, तो कोई संघर्ष नहीं होगा और शास्त्रीय पंचांग अक्षुण्ण रहेगा ।

## समाधान-२

### क्या 'क्षये पूर्वा, वृद्धौ तथा उत्तरा' का अर्थ ऐसा कर सकते हैं ?

(उदयमि जा सा के नियम के अनुसार) उदित तिथि प्रमाणभूत है, फिर भी जब भी:

- कोई पर्व तिथि उदित तिथि न बने तो क्या किया जाए ?
- कोई पूर्व तिथि दो बार उदित तिथि बने तो क्या किया जाए ?

**इसका अपवाद सूत्र** बताते हुए "क्षये पूर्वा वृद्धौ उत्तरा" बताया गया है, वर्तमान में **इस अनुसार** अर्थघटन होता है ।

a) अब ६१वीं चन्द्र तिथि "उदयमि जा सा" के नियम से ६१वीं कर्म तिथि (कर्म दिवस) के सूर्योदय को स्पर्श करती है, इसलिए ६१वीं चन्द्र तिथि को ६१वीं कर्म तिथि (कर्म दिवस) में मनाएँगे । किन्तु ६२वीं चन्द्र तिथि का अंश मात्र भी ६२वीं कर्म तिथि (कर्म दिवस) के सूर्योदय को स्पर्श नहीं करती, इसलिए ६२ वीं चन्द्र तिथि न तो :

६१वीं कर्म तिथि (कर्म दिवस) में, और न ही

६२ वीं कर्म तिथि (कर्म दिवस) में मनाई जाएगी, किन्तु

यदि ६२वीं चन्द्र तिथि १२ पर्व तिथि में से कोई पर्व तिथि हो तो उसकी अखण्डता बनाए रखनी चाहिए और उसकी आराधना का लोप न हो, इस हेतु:

६१वीं चन्द्र तिथि उदित तिथि होने के बावजूद, ६१वें कर्म दिवस में इसे गौण करके ६२वीं चन्द्र तिथि उदित तिथि न होने पर भी ६१वें कर्म दिवस में ६२वीं चन्द्र तिथि अखण्ड रूप से माननी चाहिए तथा आराधना करनी चाहिए, यही 'क्षये पूर्वा' है । (P.L. वैद्य के निर्णय में इस प्रकार लिखा है ।)

b) और यदि कोई पर्व तिथि दो बार उदित तिथि बने, यानि ६१वीं चन्द्र तिथि ६१ और ६२ दोनों कर्म तिथियों (कर्म दिवस) को स्पर्श करे, अर्थात् दोनों दिवस की उदित तिथि हो, तो ६१वीं चन्द्र तिथि ६१ या ६२ में से कौनसे कर्म दिन को मानें और आराधना करें ? तो इसका उत्तर है, 'वृद्धौ तथा उत्तरा ।'

इस प्रकार 'उदयमि जा सा' का अपवाद सूत्र 'क्षये पूर्वा वृद्धौ तथा उत्तरा' है। किन्तु यदि आज जिनमतानुसार पंचांग निर्माण करना सम्भव हो, तो वृद्धि तिथि होगी ही नहीं, इसलिए 'वृद्धौ तथा उत्तरा' अपवाद सूत्र ही निर्विषयक बन जाता है, यह बात भूलनी नहीं चाहिए। फिर भी इस अपवाद सूत्र का उपयोग चालू रखा तो आज्ञाभंग, विराधना, अनवस्था, मिथ्यात्व आदि दोषों का कारक बन जाएगा।

अब मिथ्यात्वादि दोषों को लाने वाला यह प्रघोष (a) पू. वाचकश्री जी का नहीं होगा, ऐसा मानकर इसे छोड़ना पड़े, या फिर (b) पू. वाचकश्री जी का है, ऐसा ही मानना हो तो इसका अर्थघटन नीचे लिखे अनुसार करें, तो मिथ्यात्वादि के दोषों का पोषक नहीं बनेगा :

(a) प्रघोष पू. वाचक उमास्वाति जी का है और शास्त्रीय है, ऐसा मानकर विचार करें **तो भी** उमास्वाति जी के समय में लौकिक पंचांग के साथ सम्बन्ध ही नहीं था, इसलिए...

प्रघोष **लौकिक पंचांग में बदलाव के लिए नहीं किया गया, बल्कि जैन टिप्पण के अनुसार ही उस-उस तिथि-पर्व को कब मानना और उसकी आराधना कब करनी ?** इसके निर्णय हेतु किया गया, ऐसा मानना उचित लगता है।

(b) लोक व्यवहार में कर्म मास (ऋतु मास या सावन मास) महत्त्वपूर्ण होता है, इसलिए लोक व्यवहार में उसी का सविशेष उपयोग होता है।

**आराधना की तिथि भले ही चन्द्र मास से बनती हो, ऋतु का निर्णय भले ही सूर्य मास से होता हो, किन्तु प्ररूपणा या भाषा में या लोक व्यवहार में विनियोग तो कर्म मास से ही होता है।**

(c) अब कर्म मास की प्ररूपणा करनी हो तो चन्द्र मास—सूर्य मास का समावेश कैसे किया जाए ?

जैसे, राजस्थानी महीने (शास्त्रानुसारी) की चन्द्र तिथि के अनुसार आज चै.सु.१३-१४ है, अर्थात् चै.सु.१३ सुबह के ११:४७ तक है, उसके बाद चै.सु. १४ है। इसी समय कर्म (सावन) तिथि के अनुसार चै.सु.१३ है, अर्थात् चैत्र महीने के शुक्ल पक्ष का तेरहवां दिन है।

अर्थात् निश्चय से आकाश में ११:४७ तक चन्द्र मास की चै.सु. १३ है, और बाद के समय से चै.सु.१४ है, किन्तु लोक व्यवहार में ऐसा ही कहा

जाएगा कि आज चैत्र महीने के शुक्ल पक्ष का तेरहवां दिन या कर्म तिथि है । **याद रहे कि कर्म मास की तिथि भी शास्त्रीय सत्य ही है ।** शास्त्रों में अनेक स्थानों पर इसका व्यवहार है ही, जैसे, ``३६० राइंदिआणं'' आदि । अब यदि चन्द्र तिथि के अनुसार चै.सु. १४ को, अर्थात् मध्य रात्रि को परमात्मा महावीर देव का उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में जन्म कल्याणक है, तो भी लोक व्यवहार में ऐसा ही बोला जाएगा, कि चैत्र महीने के शुक्ल पक्ष के तेहरवें दिन (तिथि) को उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में जब चन्द्र का योग हुआ, उस समय प्रभु वीर का जन्म हुआ । इस प्रकार कल्याणक का वर्णन चन्द्र तिथि न मानते हुए कर्म तिथि मानना अधिक तर्कसंगत लगता है । कई बार ऐसा भी होता है कि चन्द्र तिथि और कर्म तिथि एक ही हो । (यह दृष्टान्त मात्र समझने के लिए दिया है, प्रस्तुत कल्याणक में ऐसा बना है, यह निश्चय नहीं है ।)

१४ पूर्वधर पू. भद्राबाहुस्वामी जी भी कल्पसूत्र के मूल सूत्रों में इसी पद्धति से कल्याणकों की प्ररूपणा करते हैं, इसीलिए यह पद्धति शास्त्रीय है, और उस काल के लोक व्यवहार की पद्धति रही होगी, ऐसा प्रमाणित हो सकता है ।

वस्तुतः लोक में और जैनों में प्ररूपणा की भाषा कर्म मास से जुड़ी हुई थी ऐसा लगता है । ऐसा भी लगता है कि चन्द्र तिथि की प्ररूपणा व्यवहार तिथि से होती है तथा नक्षत्र की प्ररूपणा निश्चय तिथि से होती है, क्योंकि आज भी जन्म-मरण तिथि व्यवहार (उदित) तिथि से और नक्षत्र निश्चय से ही दिखाई दिए जाते हैं ।

फिर भी इस मामले में गहराई और तटस्थता से संशोधन होना चाहिए, कि कल्याणकों का वर्णन (a) चन्द्र तिथि से या कर्म तिथि से करें ? (b) व्यवहार से या निश्चय से करें ? (c) 'उदयमि जा सा' नियम की तिथि से है या कल्याणक के वास्तविक समय की तिथि से ?

- उपरान्त १) प्ररूपणा कर्म तिथि से—आराधना चन्द्र तिथि से
- २) प्ररूपणा कर्म तिथि से—आराधना कर्म तिथि से
- ३) प्ररूपणा चन्द्र तिथि से—आराधना कर्म तिथि से
- ४) प्ररूपणा चन्द्र तिथि से—आराधना चन्द्र तिथि से

उपरोक्त चतुर्भंगी में से कौनसा भंगा शास्त्रीय है, क्या इस मामले में संशोधन नहीं किया जाना चाहिए ?

**नोट : कर्म तिथि = व्यवहार तिथि = उदयमि जा सा नियमयुक्त तिथि है । चन्द्र तिथि = निश्चय तिथि = वास्तविक समययुक्त तिथि है ।**

**(d) अब क्षये पूर्वा का अर्थ :-**

हमें यह पता ही है, कि मुख्य रूप से कर्म मास की अपेक्षा चन्द्र मास की तिथि का ही क्षय होता है। या चन्द्र तिथि का कर्म मास में क्षय (अवम रात्रि) होता है। उपरान्त सूर्य मास ( $30\frac{1}{2}$  दिन का होने के कारण २ सूर्य मास ६१ दिन) की अपेक्षा से कर्म मास (३० दिन का होने के कारण २ कर्म मास = ६० दिन, यानि दो सूर्य मास से १ दिन कम) और चन्द्र मास ( $29\frac{3}{4}$  दिन का होने से दो चन्द्र मास  $59\frac{2}{4}$  दिन होते हैं, अतः सूर्य मास से  $1\frac{6}{4}$  दिन कम) की तिथि का क्षय होगा, तथा कर्म मास की अपेक्षा से चन्द्र मास (२ कर्म मास की अपेक्षा से  $60 - 59\frac{2}{4}$  दिन =  $\frac{60}{4}$  दिन, लगभग १ दिन) की तिथि का क्षय आएगा। **प्रस्तुत में कर्म मास और चन्द्र मास की तुलना में क्षय होने वाली क्षय तिथि की बात है।**

क्योंकि एक कर्म वर्ष में ३६० तिथि या ३६० दिन होते हैं।

**१ चन्द्र वर्ष = ३६० चन्द्र तिथि, और १ कर्म वर्ष = ३६० कर्म तिथि (दिन) होते हैं।** अब ३६० चन्द्र तिथि बीतने में कर्म दिन के माप से **३५४ दिन ४ घ. ३८. मि. ४३ से.** का समय लगता है।

१ ली चन्द्र तिथि की गणना – १ले कर्म दिवस को होती है,

२ री चन्द्र तिथि की गणना – २रे कर्म दिवस को होती है,

६१वें चन्द्र तिथि की गणना – ६१वें कर्म दिवस को होती है,

**६२वीं चन्द्र तिथि की गणना भी ६१वें कर्म दिवस को होती है,**

६३वें चन्द्र तिथि की गणना – ६२वें कर्म दिवस को होती है,

**३६०वे चन्द्र तिथि की गणना – ३५४वें कर्म दिवस को होती है,**

अब ध्यान से देखने पर पता चलेगा कि जब ६२वीं चन्द्र तिथि का क्षय आएगा तब यदि वह बारह में से कोई एक पर्व तिथि हो तो ६१वीं तिथि का क्षय गिनना चाहिए, ६२वीं चन्द्र तिथि को ६१ वें कर्म दिन में मानना चाहिए और उस दिन आराधना करनी चाहिए।

**अर्थात् ६२वीं चन्द्र तिथि का क्षय होने से यदि वह पर्व तिथि हो, तो पिछली ६१वीं तिथि का क्षय मानकर उस दिन, यानि ६१वें दिन ६२वीं तिथि माननी चाहिए तथा ६२वीं तिथि की ही आराधना करनी चाहिए, यह क्षये पूर्वा हुआ।** इस प्रकार ६२वीं चन्द्र तिथि का क्षय होने

के कारण यदि वह पर्व तिथि हो तो ६९वीं चन्द्र तिथि का क्षय करके ६९वें कर्म दिन को ही ६२वीं चन्द्र तिथि का स्वीकार करना और उसकी आराधना भी ६२वें कर्म दिन को न करके पिछले ६९वें कर्म दिन को ही करना है ।

(e) **वृद्धौ तथा उत्तरा** : जैन शास्त्रानुसार वृद्धि तिथि आती ही नहीं, फिर भी स्याद्वाद शैली से किसी अपेक्षा से माननी हो तो यह कर्म मास की अपेक्षा से सूर्य मास में (अलबत व्यवहार में अभी ऐसा कहीं नहीं होता) आएगी ।

हमें पता है कि आधुनिक यूरोपीय गणित के अनुसार आने वाली वृद्धि तिथि वास्तव में तो जैन शास्त्रों के अनुसार **कर्म मास की अपेक्षा सूर्य मास में** आती है, चन्द्र मास की तिथि में बिलकुल नहीं । क्योंकि ३६० सूर्य तिथि (दिन) बीतने में कर्म दिवस की अपेक्षा से ३६६ कर्म दिन होते हैं ।

१ली सूर्य तिथि की गणना—१ले कर्म दिवस को होती है,

२री सूर्य तिथि की गणना—२रे कर्म दिवस को होती है,

६०वीं सूर्य तिथि की गणना—६९वें कर्म दिवस को होती है,

३६०वीं सूर्य तिथि की गणना—३६६वें कर्म दिवस को होती है,

कर्म मास ३० दिन का है, जबकि सूर्य मास  $३०\frac{१}{२}$  दिन का है ।

दो कर्म मास ६० के होते हैं और दो सूर्य मास ६९ दिन के होते हैं ।

इसलिए कर्म मास और सूर्य मास को एक करने के लिए दो सूर्य मास (६९ दिन) के साथ दो कर्म मास मिलाने के बाद एक दिन बढ़ाना पड़ेगा ।

अर्थात् ६०वीं सूर्य तिथि की गणना ६९वें कर्म दिन करनी है । यानि ६०वीं सूर्य तिथि की वृद्धि होने के कारण उस तिथि की गणना ६० या ६९ में से कौनसे **कर्म दिवस** में करनी ? (क्योंकि दोनों कर्म दिवस को स्पर्श करती है) **तो उत्तर है, 'वृद्धौ तथा उत्तरा'** अर्थात् ६०-६९ दोनों दिन ६०वीं सूर्य तिथि उपस्थित हो तो दोनों में से जो बाद का (उत्तर) दिन है, उस दिन **६०वीं सूर्य तिथि का व्यवहार करना है ।**

सूर्य दिवस (तिथि) का महत्व ऋतु की गणना तथा सूर्य के उत्तरायण और दक्षिणायन की गणना करने में होता है ।

उपरोक्त तरीकों से '**क्षये पूर्वा-वृद्धौ तथा उत्तरा**' का अर्थ क्यों नहीं ले सकते ? इस प्रकार निष्पक्ष शुद्ध विचारणा न की गई तो 'वृद्धौ तथा उत्तरा' का सही अर्थघटन किस प्रकार होगा ? क्योंकि जैन शासन में वृद्धि तिथि आती ही नहीं । गीतार्थों से इस सन्दर्भ में निष्पक्ष विचार करके मार्गदर्शन देने की मेरी विनती है ।

## समाधान-३

### सूर्यप्रज्ञप्ति और टाणांग सूत्र की अन्य एक तिथि गणना पद्धति और वैदिक काल के साथ इसका समन्वय

यह चर्चा करनेसे पहले मेरा एक विचार प्रेरक मत बताना चाहूँगा:

“कम्मो निरंसयाए मासो ववहार कारणो लोए ।

सेसाओ संसयाए ववहारो दुक्करो घित्तुं ।”

(ज्योतिष करण्डक चौथा प्राभृत गाथा १४/१५ और सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र ५७ की टीका में उद्धरण)

— इधर काल लोकप्रकाश के सर्ग २८, श्लोक नं. २८७-२८८ में ‘सर्वकाल विशेषा...धीधनैः ॥’ द्वारा काल की गणना, आयुष्य की गणना, कर्मबंध की गणना आदि में सूर्य मास की प्रधानता और प्रयोजन दिखाया गया है ।

— तो मुहूर्तशुद्धि, आराधना आदि में हमें परम्परा में चन्द्र मास का प्रयोजन मिला हुआ ही है । अतः **सूर्य, चन्द्र और कर्म – इन तीनों मास का प्रयोजन भिन्न होने के बावजूद ये परस्पर जुड़े हुए हैं ।**

इसलिए १) चन्द्र मास – कर्म मास, २) सूर्य मास – कर्म मास, ३) सूर्य मास – चन्द्र मास का परस्पर संयोग होता है, इस हेतु शास्त्रों में अत्यन्त सुन्दर व्यवस्था दिखाई गई है, जो इस प्रकार है:

**१) चन्द्र मास – कर्म मास :** इस दोनों महीनों का मेल करने हेतु ‘‘अवमरात्रि’’ का शास्त्रपाठ सूर्यप्रज्ञप्ति के सू.७५ और चन्द्रप्रज्ञप्ति के सूत्र (१२वां प्राभृत) में दिखाया गया है ।

**२) सूर्य मास – कर्म मास :** इन दोनों महीनों का मेल करने हेतु ‘‘अतिरात्रि’’ का शास्त्रपाठ सूर्यप्रज्ञप्ति के सू.७५, और चन्द्रप्रज्ञप्ति के सूत्र (१२ वां प्राभृत) में दिखाया गया है ।

**३) सूर्य मास – चन्द्र मास :** इन दोनों महीनों का मेल करने हेतु सूर्यप्रज्ञप्ति के सू. ५६, और ज्योतिष करण्डक प्राभृत-३ में ‘‘अधिक मास’’ के आयोजन की व्यवस्था की गई है ।

१) कर्म मास में अवमरात्रि और अतिरात्रि की विचारणा क्रमशः चन्द्र मास तथा सूर्य मास की अपेक्षा से करनी है, और वह अवमरात्रि क्षय तिथि से है, और अतिरात्रि वृद्धि तिथि से पहचानी जाती है । उपरान्त,

निशीथचूर्णि के २०वें उद्देश में (पृ. २२७ पर) दिखाया है, कि तत्रादित्यसंवत्सरे षड्दिनानि ऋतुसंवत्सरापेक्षयाऽधिकानि चंद्रसंवत्सरे ऋतुवर्षापेक्षयैव न्यूनानि ।

एक ओर सूर्यप्रज्ञप्ति का सू. ७५ और इसकी टीका यह दर्शाती है, कि **कर्म मास में** अवम रात्रि और अतिरात्रि **चन्द्र मास और सूर्य मास की अपेक्षा से** आती है, जबकि निशीथचूर्णि **कर्म मास की अपेक्षा से चन्द्र मास और सूर्य मास में** अवमरात्रि और अतिरात्रि दर्शाता है । क्या इन दोनों जिनागमों का अर्थ परस्पर विरोधी नहीं लगता ? तो इसका उत्तर है—नहीं । मुख्य रूप से सूर्यप्रज्ञप्ति के सू. ७५ का अर्थ अधिक तर्कसंगत लगता है और निशीथचूर्णि इसी अर्थ को अलग नय से बताता है, जो इस प्रकार है :

कर्म मास की तुलना में चन्द्र मास छोटा होने के कारण दोनों का मेल करने के लिए **कर्म मास में ६ अवमरात्रि आती है** इसलिए साधिक ५९ और इससे आगे साधिक ३५४ कर्म दिवस में क्रमशः ६० और ३६० चन्द्र तिथि पूर्ण होती है, इसलिए १ कर्म दिवस में २ चन्द्र तिथि रहेगी । अब **इन दो चन्द्र तिथियों में से एक को निश्चित कर्म दिवस वाले दिन पर मानना है और दूसरी को गौण करना है** । इस प्रकार कर्म मास की अपेक्षा से चन्द्र मास में १ तिथि मुख्य और १ तिथि गौण करनी है — यह निशीथचूर्णि का अभिप्राय हुआ । इसी प्रकार सूर्य मास और कर्म मास की तुलना भी समझ लें ।

२)  $\frac{६१}{६२}$  का गणित सूर्य वर्ष और चन्द्र वर्ष की तुलना करके अधिक मास के आयोजन हेतु है, जिसकी विशेष जानकारी पहले दी गई है । किन्तु हमने  $\frac{६१}{६२}$  का **गणित क्षय तिथि के लिए लिया था, इसलिए प्रश्न उद्भव होता है** । अब मूल बात पर लौटने से पहले फिर से स्पष्टता कर लें, कि :—

- सूर्य मास और सूर्य वर्ष का प्रमाण क्रमशः ३० सूर्य दिवस (तिथि) और ३६० सूर्य दिवस (तिथि) होता है,
- चन्द्र मास और चन्द्र वर्ष का प्रमाण क्रमशः ३० चन्द्र दिवस (तिथि) और ३६० चन्द्र दिवस (तिथि) होता है,
- कर्म मास और कर्म वर्ष का प्रमाण क्रमशः ३० कर्म दिवस (तिथि) और ३६० कर्म दिवस (तिथि) होता है,

किन्तु चन्द्र मास या चन्द्र वर्ष की ३० और ३६० तिथियाँ पूर्ण होने में क्रमशः २९.५१६१ कर्म दिन और ३५४.१९३ कर्म दिन लगते हैं, और सूर्य मास और सूर्य वर्ष की ३० और ३६० तिथियाँ पूर्ण होने में क्रमशः ३०.५ कर्म दिन और ३६६ कर्म दिन लगते हैं । इसलिए (a) मुहूर्तशुद्धि

और आराधना हेतु चन्द्र तिथि का उपयोग होने पर भी व्यवहार में तो कर्म तिथि ही चलती है, इसलिए साधिक ३५४ कर्म दिवस में ही ३६० चन्द्र तिथि समाप्त हो जाती है, अतः कर्म वर्ष में से लगभग ६ दिन न्यून करें, या फिर ३६० चन्द्र तिथि का साधिक ३५४ कर्म दिवस में समावेश करें तो ही चन्द्र मास और कर्म मास का मेल होगा। इन ६ दिनों को कर्म मास से न्यून (अवम) करना अवमरात्रि है। इस प्रकार ५९, ११८, १७७, २३६, २९५ और ३५४वें कर्म दिवस में क्रमशः ५९-६०वीं चन्द्र तिथि, ११९-१२०वीं चन्द्र तिथि, १७९-१८०वीं चन्द्र तिथि, २३९-२४०वीं चन्द्र तिथि, २९९-३००वीं चन्द्र तिथि और ३५९-३६०वीं चन्द्र तिथि समा जाती है। इस प्रकार वास्तविक तिथि (चन्द्र तिथि) को व्यवहार में किस प्रकार प्रस्तुत करना, पहचानना और व्यावहारिक तिथि को (कर्म तिथि) वास्तविक तिथि के रूप में किस प्रकार करना, मानना और आराधना करना आदि का स्पष्ट मार्गदर्शन, यही 'अवमरात्रि' और 'क्षये पूर्वा' की विचारणा है।

सर्वप्रथम जिनागमों ने कर्म मास में चन्द्र मास की अपेक्षा से ६ अवमरात्रि और कर्म मास में सूर्य मास की अपेक्षा से ६ अतिरात्रि मानी है। अर्थात् ३५४ कर्म दिवस में ३६० चन्द्र दिवस (तिथि) पूर्ण होती है, इसलिए ६ (कर्म तिथियाँ) अवमरात्रि के रूप में मानी जाती है। क्योंकि ६ कर्म दिवस चन्द्र तिथि से रहित रह जाते हैं, और ३६० सूर्य दिवस पूर्ण करने में ३६६ कर्म दिवस पूर्ण होते हैं, यानि ६ (कर्म दिवस में) अतिरात्रि आती है। संक्षेप में कहें तो नए ६ कर्म दिवस बढ़ाने पड़ेंगे, क्योंकि प्रत्येक सूर्य ऋतु के अन्त में एक-एक करके कुल ६ सूर्य तिथियाँ कर्म दिवस से रहित न रहे, इस हेतु प्रत्येक ऋतु के अन्त की एक-एक करके कुल ६ सूर्य तिथियों को २-२ कर्म दिवस के साथ जोड़ने के लिए ६ कर्म दिवस बढ़ाने पड़ेंगे।

यह अवमरात्रि और अतिरात्रि (कर्म वर्ष) ऋतु वर्ष के कौनसे पर्व में आती है, इसकी बात सूर्यप्रज्ञप्ति के सूत्र ७५, चन्द्रप्रज्ञप्ति के सूत्र (१२ वां प्राभृत) में बताई है, जो इस प्रकार है :-

“तत्थ खलु इमे छ ओमरता पण्णत्ता । तं-ततिए पव्वे, सत्तमे पव्वे, एक्कारसमे पव्वे, पन्नरसमे पव्वे, एगुणवीसतमे पव्वे, तेवीसतिमे पव्वे, तत्थ खलु इमे छ अतिरत्ता पण्णत्ता-तं-चउत्थे पव्वे, अड्डमे पव्वे, बारसमे पव्वे, सोलसमे पव्वे, वीसतिमे पव्वे, चउवीसतिमे पव्वे । छच्चेवय अइरत्ता आइच्चाओ हवंति माणाहि छच्चेव ओमरत्ता चंदाहि हवंति माणाहिं ॥ सु.७५॥”

सूर्यप्रज्ञप्ति सू. ७५में बताता है कि—सकले तु कर्मसंवत्सरे षट् अवमस्ताः, कर्मसंवत्सरे चंद्रसंवत्सरमधिकृत्य व्यवहारतः खल्विमे वक्ष्यमाणक्रमाः षट् अवमरात्राः प्रज्ञप्ताः

उपरान्त वहीं टीका में लिखा है कि—आदित्यमपेक्ष्य कर्ममासचिंतायां प्रतिवर्ष षट् अतिरात्रा भवन्ति इति माणाहिं—जानीहि ।

अर्थात् a) कर्ममास के ३, ७, ११, १५, १९, २३ वें पर्व में अवमरात्रि आती है, और कर्ममास के ४, ८, १२, १६, २०, २४ वें पर्व में अतिरात्रि आती है । या

कर्ममास का ३रा, ७वां, ११वां, १५वां, १९वां, २३वां पर्व अवमरात्रि बनता है, और कर्ममास का ४था, ८वां, १२वां, १६वां, २०वां, २४वां पर्व अतिरात्रि बनता है ।

क्योंकि तृतीये, सप्तमे आदि शब्दों का अर्थ प्रथम या सप्तमी विभक्ति से हो सकता है ।

कर्ममास की तुलना में सूर्यमास का प्रमाण अधिक है । वास्तव में ऋतु की गणना सूर्यमास से (६१ दिन से) होती है, किन्तु लोकव्यवहार में ऋतु ६० दिन से गिनी जाती है, इसलिए ऋतुवर्ष पहले समाप्त होता है, नया शुरू भी पहले होता है । जबकि सूर्य वर्ष बाद में समाप्त होता है और शुरू भी बाद में होता है । इसलिए

- a) चन्द्र मास की अपेक्षा से कर्म मास में ३रे पर्व में १ली अवमरात्रि, सूर्य मास की अपेक्षा से कर्म मास में ४थे पर्व में १ली अतिरात्रि, चन्द्र मास की अपेक्षा से कर्म मास में ७वें पर्व में २री अवमरात्रि, सूर्य मास की अपेक्षा से कर्म मास में ८वें पर्व में २री अतिरात्रि, चन्द्र मास की अपेक्षा से कर्म मास में ११वें पर्व में ३री अवमरात्रि, सूर्य मास की अपेक्षा से कर्म मास में १२वें पर्व में ३री अतिरात्रि, चन्द्र मास की अपेक्षा से कर्म मास में १५वें पर्व में ४थी अवमरात्रि, सूर्य मास की अपेक्षा से कर्म मास में १६वें पर्व में ४थी अतिरात्रि, चन्द्र मास की अपेक्षा से कर्म मास में १९वें पर्व में ५वीं अवमरात्रि, सूर्य मास की अपेक्षा से कर्म मास में २०वें पर्व में ५वीं अतिरात्रि, चन्द्र मास की अपेक्षा से कर्म मास में २३वें पर्व में ६ठी अवमरात्रि, सूर्य मास की अपेक्षा से कर्म मास में २४वें पर्व में ६ठी अतिरात्रि, आएगी।
- b) चन्द्र मास की अपेक्षा से कर्म मास का ३रा पर्व = १ली अवमरात्रि, चन्द्र मास की अपेक्षा से कर्म मास का ७वां पर्व = २री अवमरात्रि, चन्द्र मास की अपेक्षा से कर्म मास का ११वां पर्व = ३री अवमरात्रि,

चन्द्र मास की अपेक्षा से कर्म मास का १५वां पर्व = ४थी अवमरात्रि,  
चन्द्र मास की अपेक्षा से कर्म मास का १९वां पर्व = ५वीं अवमरात्रि,  
चन्द्र मास की अपेक्षा से कर्म मास का २३वां पर्व=६ठी अवमरात्रि बनेगी, तथा  
सूर्य मास की अपेक्षा से कर्म मास का ४था पर्व = १ली अतिरात्रि,  
सूर्य मास की अपेक्षा से कर्म मास का ८वां पर्व = २री अतिरात्रि,  
सूर्य मास की अपेक्षा से कर्म मास का १२वां पर्व = ३री अतिरात्रि,  
सूर्य मास की अपेक्षा से कर्म मास का १६वां पर्व = ४थी अतिरात्रि,  
सूर्य मास की अपेक्षा से कर्म मास का २०वां पर्व = ५वीं अतिरात्रि,  
सूर्य मास की अपेक्षा से कर्म मास का २४वां पर्व = ६ठी अतिरात्रि बनेगी,  
अब ध्यान से अवमरात्रि के बारे में विचार करने से पता चलेगा कि :-  
a) के अनुसार ३रे, ७वें, ११वें, १५वें, १९वें और २३वें पर्व में, और  
b) के अनुसार ३रा, ७वां, ११वां, १५वां, १९वां और २३वां पर्व  
अवमरात्रि बनता है ।

**अर्थात् दो अवमरात्रि के बीच ३ पर्व = प्रायः दो माह बीत जाते हैं ।** इसलिए

a) के अनुसार १ अवमरात्रि आने के बाद ३ पर्व निकलते हैं, और ४थे पर्व में दूसरी अवमरात्रि आती है, या फिर

b) के अनुसार १ अवमरात्रि आने के बाद ३ पर्व बीतते हैं, फिर उसकेबाद का ४ था पर्व ही २री अवमरात्रि बनता है ।

इस प्रकार एकान्तर महीने में = ३ पर्व छोड़कर ४थे पर्व में अवमरात्रि आती है ।

अतः एक कर्म मास ३० दिन का और दूसरा कर्म मास २९ दिन का होगा । या १५ दिन के तीन पक्षों (पर्वों) के बाद वाला ४ था पक्ष (पर्व) १४ दिन का होगा । क्योंकि ४ थे पर्व में अवमरात्रि आती है । टाणांग सूत्र भी (वदान्त पक्ष की लौकिक मान्यतानुसार) यही कहता है:-

आसाढे णं मासे एगूणतीसं रातिंदियाइं रातिंदियग्गेणं पण्णत्ते ।  
भद्ववते णं मासे एगूणतीसं रातिंदियाइं रातिंदियग्गेणं पण्णत्ते ।  
कत्तिए णं मासे एगूणतीसं रातिंदियाइं रातिंदियग्गेणं पण्णत्ते ।  
पोसे णं मासे एगूणतीसं रातिंदियाइं रातिंदियग्गेणं पण्णत्ते ।  
फग्गुणे णं मासे एगूणतीसं रातिंदियाइं रातिंदियग्गेणं पण्णत्ते ।  
वइसाहे णं मासे एगूणतीसं रातिंदियाइं रातिंदियग्गेणं पण्णत्ते ।

सूत्र २९ टाणांग

अतः १ तिथि अवम होने से, और वह भी पर्व तिथि होने से उसके पूर्व की तिथि का क्षय (अवम) करके उस पर्व तिथि को पिछली अपर्व तिथि के स्थान पर मानते हुए वहीं आराधना करनी चाहिए। इस प्रकार दोनों तिथियाँ एक ही दिन में समा जाने के कारण एक माह ३० दिन का और उसके बाद का माह २९ दिन का दिखाया गया है।

इसका सीधा अर्थ यह है, कि इस पद्धति के अनुसार २ अवमरात्रि के बीच ६० दिन से अधिक अन्तर बिल्कुल नहीं होता, इसलिए :-

१)  $\frac{६१}{६२} = ६१$  वें दिन ६२ वीं तिथि के क्षय वाला गणित क्षय तिथि के लिए न लेकर चन्द्रमास और सूर्यमास की समानता के लिए लेना चाहिए। क्योंकि ६१वां दिन = सूर्यऋतु की समाप्ति है और इसमें ६२वीं तिथि सम्पूर्ण समा चुकी है। इसलिए १ सूर्यऋतु पर साधिक पौने दो तिथि युक्त चन्द्र की १ चन्द्रऋतु बीतती है, और कर्ममास का १ दिन बढ़ा। इस प्रकार ५ वर्ष में कर्ममास के ३० दिन बढ़ेंगे, इसे जोड़ने से कर्ममास और सूर्यमास का भेद दूर होगा।

और इस तरह साधिक पौने दो तिथि  $\times १५$  ऋतु ( $२\frac{१}{२}$  वर्ष में) = चन्द्र की ३० तिथियाँ =  $२९\frac{३२}{६२}$  दिन बढ़ेंगे, जो अधिक मास बनेगा।

२) अधिक मास के लिए चन्द्रमास और सूर्यमास का फर्क (प्रत्येक ऋतु में लगभग पौने दो दिन) लें, ताकि  $२\frac{१}{२}$  वर्ष में  $२९\frac{३२}{६२}$  दिन बढ़े। फिर  $२\frac{१}{२}$  वर्ष में  $२९\frac{३२}{६२}$  दिन बढ़े, इस प्रकार पांच वर्ष में चन्द्र के मास में २ अधिक मास आएँगे, जिसकी विशेष चर्चा आगे आएगी। इस प्रकार  $\frac{६१}{६२}$  की विचारणा अधिक मास हेतु है, यह तर्कसंगत लगता है।

३) क्षय तिथि हेतु कर्म मास और चन्द्र मास के भेद को बताने वाले गणित को ही लेना चाहिए, ताकि साधिक ५९ कर्म दिवस में =  $५९.०३२२५८३३३ = ५९$  दिन ४६ मि. २७ से. कर्मदिवस में चन्द्र की ६० तिथि समाप्त हो जाए।

अर्थात् a) के अनुसार ५९वें कर्मदिवस को **५९ और ६०वीं** चन्द्र तिथि दोनों संयुक्त रूप से होगी। सदैव ६०वीं तिथि पूर्णिमा या अमावस्या

= पर्व तिथि ही होगी याद रहे प्राचीनकालमें वैदिकधर्म की परंपरा में पूनम-अमावस को ही पर्व मानते थे । इसलिए ५९वें दि ५९वीं तिथि न मानते हुए ६०वीं तिथि माननी और आराधना करती है । ३५४वें दिन ३५९वीं तिथि न मानते हुए ३६०वीं तिथि माननी और आराधना करनी है । यह मान्यता प्राचीन काल में और अन्य परम्परा में भी थी । और यह मानें तो ही कर्म मास-चन्द्र मास का फर्क बैठेगा । अतः ६०वीं तिथि का पर्व ५९वें दिन मानकर आराधना करनी चाहिए । जो युगारम्भ के ३रे, ७वें, ११वें, १५वें, १९वें और २३वें पर्व में आया, इस प्रकार ६ अवमरात्रि बनती है ।

कर्मऋतु से चन्द्रऋतु जल्दी समाप्त होने के कारण ६०वें कर्म दिवस को चन्द्र की ६०वीं तिथि का मात्र २/६२ भाग ही मिलता है, अतः ६०वां कर्म दिवस - ६०वीं चन्द्र तिथि से बहुधा खाली रहता है, इसलिए ६०वें कर्म दिवस का (कर्मऋतु का अन्तिम दिवस) अवम बनता है, और ५९वें कर्म दिवस में ५९/६० उभय चन्द्र तिथि का भाग आता है । अब ६०वीं चन्द्र तिथि पर्वात्मक (पर्व तिथि) होने के कारण इसका अस्तित्व और आराधना अखण्ड होनी चाहिए, इसलिए ५९वीं चन्द्र तिथि को गौण करना है, उसका क्षय करना है और ५९वें कर्म दिवस को ६०वीं चन्द्र तिथि मानकर आराधना करनी है । अतः

- ६०वां कर्म दिवस अवमरात्रि बनता है,
- ५९वीं चन्द्र तिथि क्षय तिथि बनती है,
- ६१वां कर्म दिवस अतिरात्रि बनता है, और
- ६०वीं सूर्य तिथि वृद्धि तिथि बनती है । ऐसा ही आगे की तिथियों में भी समझें ।

b) के अनुसार ३, ७, ११, १५, १९ और २३वां पर्व, यानि ३ पर्व छोड़कर ४था पर्व अवम बनता है । तात्पर्य यह, कि ३रे (वैसे ४थे) पर्व में (पक्ष में) आने वाली पर्व तिथि उस दिवस का पूर्वार्ध भी नहीं भुगतती, अतः इसके पूर्व की अपर्व तिथि का क्षय करके उस पूर्व के दिवस को ही वह पर्व तिथि मानकर आराधना करनी चाहिए ।

अर्थात् ३ पर्व के बाद वाले ४थे पर्व (पक्ष) की द्वितीया, पंचमी, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा या अमावस्या की पर्व तिथि क्रमशः पिछली (पूर्व में) माननी और आराधना करनी चाहिए ।

## उदाहरण

४७वें कर्म दिवस की जगह ४६वें दिन द्वितीया मानें और आराधना करें,  
५०वें कर्म दिवस की जगह ४९वें दिन पंचमी मानें और आराधना करें,  
५३वें कर्म दिवस की जगह ५२वें दिन अष्टमी मानें और आराधना करें,  
५६वें कर्म दिवस की जगह ५५वें दिन एकादशी मानें और आराधना करें,  
५९वें कर्म दिवस की जगह ५८वें दिन चतुर्दशी मानें और आराधना करें,  
६०वें कर्म दिवस की जगह ५९वें दिन पूनम/अमावस मानें और आराधना करें,

इस प्रकार इस पर्व में (पक्ष में) व्यवस्था बदलती रहती है, इसलिए इसे अवम पर्व माना गया, ऐसा अर्थ लगा सकते हैं।

लगभग हमारी ये सभी परम्पराएँ छूट ही गई हैं।

यदि क्षय तिथि इस प्रकार ली जाए तो ही टाणांग सूत्र, सूर्यप्रज्ञप्तिआदि के पाठ व्यवस्थित बैठ सकते हैं।

यहाँ यह बताना आवश्यक है, कि **क्षये पूर्वा** = कर्म दिवस की अपेक्षा से अवम / क्षय आता हो तब उस कर्म दिवस में मनाई जाने वाली (आने वाली) चन्द्र तिथि पहले माननी और आराधना करनी, और वृद्धौ उत्तरा = जिस कर्म दिवस की (अपेक्षा से) वृद्धि तिथि (अतिरात्रि) आए, तब उस कर्म दिवस में मनाई जाने वाली (आने वाली) सूर्य तिथि उत्तर के कर्म दिवस में माननी और आराधना करनी चाहिए।

**उदाहरण : ६०वें कर्म दिवस का अवम हो, तब ६०वीं चन्द्र तिथि (पिछले) अर्थात् ५९वें कर्म दिवस को माननी और आराधना करनी चाहिए।**

**६०वें कर्म दिवस की वृद्धि (अतिरात्रि) हो तब ६०वीं सूर्य तिथि (बाद वाली) अर्थात् ६१वें कर्म दिवस को माननी और आराधना करनी चाहिए।**

अतः, क्या मानना और कब आराधना करनी ? इसका उत्तर है—**चन्द्र तिथि (सूर्य तिथि)**

किसमें मानना और कब आराधना करना ? इसका उत्तर है—**कर्म तिथि में।**

इस गणित की स्पष्टता अन्य पद्धति से वेदांग ज्योतिष में भी मिलती है, इसके अनुसार क्षय तिथि लेने से सब कुछ व्यवस्थित हो जाता है।

लगघमुनि प्रोक्त वेदांग ज्योतिष का श्लोक नं.१२ इस प्रकार है:-

**द्यु हेयं पर्व चेत् पादे,** पादस् त्रिंशत् तु सैकिका ।

भागात्मनाऽपमृज्यांशान्, निर्दिशेदधिको यदि ॥१२॥

इसके अलावा शिवराज आचार्य कौडिन्यायन द्वारा की गई व्याख्या युक्त वेदांग ज्योतिष की पुस्तिका में अन्य ग्रंथों के पाठ दिए गए हैं, जो अपने टाणांग सूत्र के साथ पूर्ण रूप से मेल खाते हैं । यह इस प्रकार है:

हेमन्तानामिति । यथा वर्षा इत्येकस्मिन्नप्यर्थे बहुवचनं प्रसिद्धम्, तथा हेमन्ता ग्रीष्मा इति द्रष्टव्यम् । प्रवचने त्रय एवर्तवः, न यथा लोके षडिति । शिशिरो हि शीतसामान्याद् धेमन्त इत्युक्तः, वसन्तोऽप्यूष्मसामान्याद् ग्रीष्म इत्युक्तः, शरदपि वृष्टिसामान्याद् वर्षा इत्युक्तेति ।

[हेमन्तग्रीष्मवर्षाणामध्यर्धे मासि निगति ।

शेषेऽर्धमासे विद्वद्भिरूनरात्रो निपात्यते ॥ ]

हेमन्तग्रीष्मवर्षाणामिति । सर्वबौद्धानां हेमन्ताः प्रथम ऋतुः, ग्रीष्मा द्वितीयः, वर्षास् तृतीयः । अधिकमर्धमस्येत्यध्यर्धो मासः, तस्मिन्नध्यर्धे मासि निगति । मार्गशीर्षे सपौषार्धेऽधि(ति)क्रान्ते । शेषेऽर्धमासे पौषस्याऽर्धेऽवशिष्टे कृष्णचतुर्दश्याम् ऊनरात्रो निपात्यते त्यज्यत इत्यर्थः । चातुर्दशिकोऽत्र भिक्षुभिः पोषधः क्रियते । एवं माघे फाल्गुनावशिष्टे पुनरपर ऊनरात्रो निपात्यते । तथा ग्रीष्मेषु वैशाखकृष्णचतुर्दश्याम्, आषाढकृष्णचतुर्दश्यां चाऽपरावूनरात्रौ निपात्यते । वर्षास्वपि भाद्रपदकृष्णचतुर्दश्यां कार्तिककृष्णचतुर्दश्यां चापरावूनरात्रौ निपात्यते । इति

—स्फुटार्थव्याख्यायाम्, अभिधर्मकोशे वसुबन्धुविरचितस्वोपज्ञभाष्यसहिते, यशोमित्रकृत-स्फुटार्थ-व्याख्योपेते, तृतीये कोशस्थाने लोकधातु-निर्देशप्रकरणे (श्लो. ८८-८९)।

**नोट :-** हम सुदान्त मास की मान्यता वाले हैं, किन्तु उपरोक्त पाठ वदान्त मास की अपेक्षा से है, इसलिए इतना फर्क आएगा ।

अतः यदि जिनागमों और वेदांग ज्योतिष की अनेक मान्यताएँ समान नजर आती है, तो जिनागमों में प्राप्त अवमरात्रि और अतिरात्रि की व्याख्या का अर्थघटन करने के लिए वेदांग ज्योतिष की गाथा-१२ के अर्थ की सहायता लें, तो बहुत सारे संघर्ष टाले जा सकते हैं ।

[ पक्षद्युहानव्यवस्था, पादपरिभाषादिकं च ]

द्यु हेयं पर्व चेत् पादे पादस् त्रिंशत् तु सैकिका।

भागात्मनाऽपमृज्याऽंशान् निर्दिशेदधिको यदि ॥१२॥

(सोमाकरभाष्यम्)

दुहेयं पर्व चेत् पाद इति। पर्वार्धमासः। यथाह नैरुक्तः—“अर्धमासः पर्व देवा अस्मिन् प्रीणन्तीति वचनात्” (१।६।६)। तच् चेद् यदि दुहेयं गर्गोक्तलवादिकल्पनयाऽधिकमासार्थं यच् छिष्यते तत् सङ्ख्यायैकं कल्पयेत्।

यथाह गर्गः—

ततः प्रक्षीयमाणस्य तिथिरित्येव सञ्ज्ञिता।

द्विलवोनमहोरात्रं सोमस्य गतिरुत्तमा ॥ इति।

एतदूनं कियद् भवेदित्याह पाद इति। तदप्यप्रतीतमित्याह पादस् त्रिंशत् तु सैकिका नाडिकेति वाक्यशेषः। तत्राधिकमासनिष्पत्तिः।

यथाह गर्गः—

द्विलवक्षयसम्भूतो द्वाषष्टिर् भवते तिथिः।

ऋतोरन्तमनुप्राप्य हीनरात्रेति नामतः ॥

सभाष्ये सव्याख्याने च वेदाङ्गज्योतिषे

यस्मात् तस्मादेतावन्मात्रमर्धमासस्याङ्गा हसते तस्य भागात्मनाऽपमृज्याऽंशान् निर्दिशेत्। सङ्कलितं व्यवस्थाप्यैकत्र सङ्कलयेदंशं लवानां कुतस् तदधिकदिनानां लुप्त-चादिति वाक्यशेषः। एवं तूक्तभागानां विसूचितानामुत्तरत्र वक्ष्यमाणानामंशानाम् ॥१२॥

(कौण्डिन्यायनव्याख्यानम्)

अथ इष्टिदिनविशेषनिरूपणं कुर्वन् शास्त्रकार आह—द्यु हेयं पर्व चेदित्यादि।

पूर्वयागदिवसात् पञ्चदशे दिवसे दिनस्य प्रथमे पादे पञ्चदशी-प्रतिपदोः सन्धिर् भवति चेत् एकं दिनं त्याज्यम्, अर्थात् पूर्वां चतुर्दशीं त्यक्त्वा पूर्वदिनमेव पञ्चदशीरूपं स्वीकृत्य तत्रैवोपसथो वा तदपराह्णे पिण्डपितृयज्ञो वा कर्तव्यः, पञ्चदशे दिने एव यागः कर्तव्य इति भावः। चतुर्विंशशतांशकस्य दिनस्य पादस् तु सैका त्रिंशत् (३१) अंशा ज्ञेयाः। यदि पर्वदिनांशराशिसङ्कलने समागतो दिनाऽंशराशिर् दिनसम्पूर्णांशोऽधिको भवति तर्हि दिनसम्पूर्णांशभागरूपेण राशिना तं राशिमपमृष्टं कृत्वाऽवशिष्टानंशान् तत्पूर्वदिनांशरूपेण निर्दिशेदित्यर्थः।

उदा.	कर्म मास का दिन	पूर्वा तिथि	उत्तरा तिथि	तिथि का संधिकाल
	५९	भा.सु.-१४	भा.सु.-१५	दिन के पूर्वार्ध की समाप्ति से पूर्व
	६०	भा.सु.-१५	भा.व.१	दिन के पूर्वार्ध की समाप्ति से पूर्व

जब ऐसा हो तब भा.सु. १५ को ६०वें कर्म दिवस को नहीं मानकर (५९वें कर्म दिवस की भा.सु. १४ को छोड़कर) ५९वें कर्म दिवस को माननी और आराधना करनी चाहिए।

### वेदांग ज्योतिष की गाथा १२ और उसकी टीका के अनुसार :

- (a) तिथि का माप दिन  $\frac{६१}{६२}$  दिन =  $२९\frac{३२}{६२}$  मु. = २३ घ. ३६ मि. ४६ से लिया है,  
 (b) सभी तिथियों के माप उपरोक्त प्रमाण जितना ही है, अर्थात् समान है,  
 (c) इस गणित में कभी भी वृद्धि तिथि नहीं आती,  
 (d) कर्मवर्ष की तुलना में चन्द्रवर्ष में ६ तिथि ही अवम होती है। अर्थात् ३५४.१९३५५ कर्मदिवस में ३६० चन्द्रतिथि पूर्ण करनी होती है, और  
 (e) इस प्रकार प्रत्येक दिवस दो चन्द्र तिथियों का भाग आता है, प्रत्येक दिन में दो तिथियों का भाग व्याप्त होकर रहता है।

अर्थात् १ कर्म दिवस में भिन्न-भिन्न २ चन्द्र तिथियों का भाग आता है जिसे पूर्वा तिथि और उत्तरा तिथि के नाम से पहचाना जाता है।

उपरोक्त सभी बातों का जिनागमों के साथ समन्वय होता है, किन्तु अब नीचे बताई गई बातें हमारे लिए नई हैं ॥ गीतार्थों को इस मामले में गम्भीर विचार करना चाहिए और श्रीसंघ को मार्गदर्शन देना चाहिए, कि क्या इन बातों से संघभेद और तिथिभेद के संघर्ष का निवारण हो सकता है ? क्या जैन टिप्पण पुनर्जीवित किया जा सकता है या नहीं ?

### वेदांग मान्यता के अनुसार :-

(a) १ कर्म दिवस में व्याप्त तिथियों में से उपरोक्त पूर्वातिथि और उत्तरातिथि में से किस तिथि को अधिक प्राथमिकता देनी चाहिए ? आराधना हेतु दो चन्द्र तिथियों में से कौनसी चन्द्रतिथि को मान्यता देनी चाहिए ? इस मामले में वेदांग ज्योतिष बताता है कि, "प्रागर्ध पर्व यदा, तदोत्तराऽतोऽन्यथा तिथि पूर्वाः ॥" अर्थात् यदि पर्वतिथि दिन के पूर्वार्ध में पूर्ण होती हो, तो उस दिन की उत्तरातिथि को सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक मानें और आराधना करें। किन्तु यदि पर्वतिथि पूर्वार्ध के बाद पूर्ण होती हो, तो उस दिन की पूर्वातिथि को सम्पूर्ण अहोरात्रि मानें और आराधना करें। उस दिन उस

तिथि की मात्र आराधना करने का ही नहीं, बल्कि मानने का नियम (P. ७७ प२) दिए गए "पूर्व चतुर्दशीं त्यक्त्वा पूर्वदिनमेव पंचदशीरूपं स्वीकृत्य" से बना है।

(b) प्राचीन काल में पर्व=पूर्णिमा, अमावस्या को भिक्षुक पौषध और यज्ञ-याग आदि धर्मक्रियाएँ करते थे। उनके अनुसार पर्व तिथि पूनम और अमावस ही थी, और कोई नहीं। इसलिए उसकी आराधना अनिवार्य थी...। अब जैसे १ दिवस में २ तिथियाँ होती हैं, वैसे अधिकांश रूप से सभी तिथियाँ (पहली और ६२वीं छोड़कर) २ दिन में व्याप्त होकर रहती है।

(c) इसलिए १ले कर्मदिवस को उसमें व्याप्त १ली पूर्वा और २री उत्तरा चन्द्रतिथि में से कौनसी तिथि मानें ? इसका समाधान पाना आवश्यक है। तो इसका उत्तर है, कि १ले दिवस उसमें रही पूर्वा तिथि को मानें और आराधना करें।

(d) तो दूसरा प्रश्न होता है, कि पहले कर्मदिवस की दूसरी चन्द्र तिथि उत्तरा की आराधना पहले कर्मदिवस करनी है या दूसरे कर्मदिवस को ? तो उत्तर है, दूसरे कर्मदिवस को करनी है। अर्थात् दूसरी तिथि, पहले दिवस को उत्तरातिथि है, और दूसरे दिन पूर्वातिथि है, इसलिए दूसरे दिन पूर्वातिथि के रूप में रहने वाली इस दूसरी तिथि को मानें और आराधना करें। इसी प्रकार पूनम और अमावस रूपी पर्व की मान्यता और आराधना कब करनी, इसका निर्णय लेना आवश्यक है, क्योंकि दोनों पर्व तिथि (पूनम और अमावस) अन्य तिथि की भांति दो दिन में व्याप्त (या उसी दिन के पूर्वा या उत्तरा तिथि के रूप में) होती है। इसलिए दोनों दिवस में से कौनसे दिन आराधना करनी चाहिए ?

(e) तो क्या ऐसा नियम है कि हमेशा कर्मदिवस में जो तिथि पूर्वा हो उसी की आराधना करनी चाहिए ? तो उत्तर है, नहीं। इसीलिए गाथा में दिखाया है कि :-

(f) यदि पर्व तिथि (पूर्णिमा और अमावस्या) जिस कर्म दिवस के पूर्वार्ध में पूर्ण हो जाए, तो उस कर्म दिवस को उत्तरा तिथि = वदी या सुदी १ की आराधना होती है और पर्व की गणना और आराधना पिछले कर्म दिवस को होती है। अर्थात् पिछले दिवस के उत्तरार्ध में रहे पर्व को मानते हुए आराधना करनी है। (प्रगार्धे पर्व यदा, तदोत्तरा...)

(g) किन्तु यदि पर्व तिथि उस दिवस के पूर्वार्ध के बाद पूर्ण हो, तो उसी कर्मदिवस को उस पूर्वा तिथि (चन्द्रतिथि) को प्रधानता देते हुए पर्वाराधना उसी दिन करनी चाहिए। (अतोऽन्यथा तिथि पूर्वाः)

उदा.	पूर्वा तिथि	पूर्वा तिथि का समाप्ति समय घ. मि. से.	उत्तरा तिथि	उत्तरा तिथि को मिलने वाला दिन का बाकी का सूर्योदय तक का समय घ.मि.से.	मान्य एवं आराध्य तिथि
1a	श्रा.व.१४	२४:३४:४८	श्रा.व.०))	५:२५:१२	श्रा.व.१४ पूर्वा
b	श्रा.व.०))	२४:११:३४	श्रा.सु.१	५:४८:०८	श्रा.व.०)) पूर्वा
2a	भा.सु.१३	७:३२:५२	भा.सु.१४	२२:२७:०८	भा.सु.१४ उत्तरा
b	भा.सु.१४	७:०९:३८	भा.सु.१५	२२:५०:२२	भा.सु.१५ उत्तरा
c	भा.सु.१५	६:४६:२४	भा.व.१	२३:१३:३६	भा.व.१ उत्तरा
3a	दूसरे वर्ष की भा.सु.१४	११:४८:२२	भा.सु.१५	१८:११:३८	भा.सु.१५ उत्तरा
b	दूसरे वर्ष की भा.सु.१५	११:२५:०८	भा.व.१	१८:३४:५२	भा.व.१ उत्तरा

**नोट :** १) काल्पनिक रूप से सूर्योदय का समय लगभग ६ बजे का माना है ।  
 २) **2a से 3b तक :** पूर्वा तिथि पूर्वार्ध से पहले पूर्ण हो गई, इसलिए उत्तरा तिथि आराध्य है । उदाहरण 2 और 3, इन दोनों में पूर्वा तिथि पूर्वार्ध से पूर्व समाप्त हो रही है, इसलिए दोनों दिन उस दिन की उत्तरा तिथि की आराधना होनी चाहिए । नमूने के लिए **देखिए परिशिष्ट-३ पेज नं. ११६.**

क्या हम यह पद्धति स्वीकार कर सकते हैं ? इस मामले में गीतार्थ अपना मार्गदर्शन दें, ऐसी मेरी विनती है ।

कदाचित् **मध्यरात्रि से** युगारम्भ तथा तिथि की शुरुआत मानें तो **पूर्वार्ध सूर्योदय** पर पूर्ण हो, तो **'उदयमि जा'** श्लोक का भावार्थ भी बैठ जाए । किन्तु इस प्रकार **सूर्योदय से** युगारम्भ मानें तो प्रायः **पुरिमड्ड** पच्चक्खाण तक पूर्वार्ध चलेगा ।

संक्षेप में कहें, तो वेदांग ज्योतिष की यह पद्धति यह दर्शाती है, कि दिन के १२४ में से ३१ भाग, यानि **कम से कम पूर्वार्ध के ६.०० घण्टे का भाग तिथि हो, तो उसी दिन, अन्यथा पिछले (पहले के) दिन उस तिथि को मानकर आराधना करनी चाहिए ।**

अतः अन्य परम्परा मात्र दो ही पर्व मानती होने के कारण पूर्णिमा और अमावस्या के पर्व हेतु यह विधि बताई है । हम द्वितीया, पंचमी, अष्टमी, एकादशी चतुर्दशी, पूर्णिमा और अमावस्या, सबको पर्वतिथि मानते हैं, तो इन

सभी तिथियों के लिए क्या इसी विधि से आचरण नहीं किया जा सकता ?

(याद रहे कि इस पद्धति में क्षय तिथि कर्ममास—चन्द्रमास की अपेक्षा से ही ५९-६०वें दिन दिखाई है। फिर भी युग में सूर्यमास—कर्ममास, सूर्यमास—चन्द्रमास का मेल भी करना होता है इसलिए ५९-६० का गणित एक वर्ष के लिए ही जानें, तत्पश्चात् सामान्य बदलाव भी होंगे। या तो अधिकमास को (सूर्यमास—चंद्रमास का मेल) फल्यु समझ के आगे बढे तो (८९-९०) ५९-६० का गणित लंबे समय तक चलेगा वरना अधिकमास को adjust करके युग के अंतमें सभी (सूर्य—चंद्र—ऋतु) मास को एक करने हेतु कभी ५९-६० की जगह ७४-७५ का गणित क्षयतिथि के लिए आएगा।)

जो मध्यरात्रि से युगारम्भ मानना हो तो  $\frac{1}{8}$  भाग = लगभग ६ घण्टे होते हैं, अतः सूर्योदय के समय जो तिथि हो उसकी आराधना करने का नियम बनता है। और यदि सूर्योदय से युगारम्भ मानना हो तो  $\frac{1}{8}$  भाग = लगभग ६ घण्टे हुए, तो पुरिमद्ध पच्चक्खाण के समय जो तिथि हो उसकी आराधना पूरे दिन होनी चाहिए।

छोट्टुमाई सुथार "ब्रह्माण्ड दर्शन" पुस्तक में लिखते है कि "आर्यभट्ट" ने "आर्यभट्टीय" ग्रन्थ की रचना की, जिसमें उस समय में युगारम्भ अर्धरात्रि से और सूर्योदय से गिनने की पद्धतियों को क्रमशः अर्धरात्रिक गणना और औदयिक गणना प्रचलित होना बताया है। इस प्रकार :-  
१) ४२ सेकण्ड के संस्कारपूर्वक का वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाला प्रत्यक्ष के साथ मेल करवाने वाला  $\frac{६१}{६२}$  का (संस्कारयुक्त) गणित,  
२) "क्षये पूर्वा" प्रघोष चन्द्रमास के कर्ममास हेतु, और "वृद्धौ उत्तरा" प्रघोष सूर्यमास से कर्ममास की विचारणा का गणित,  
३) ३६० दिन में ६ तिथियों के क्षय का टाणांग, सूर्यप्रज्ञप्ति और वेदांगज्योतिषानुसार प्राचीन गणित।

वर्तमान का जन्मभूमि पंचांग या उपरोक्त तीनों विकल्पों में से जो पद्धति स्वीकार हो, किन्तु आराधना का नियामक तो स्थूल गणित ही बनेगा, या सूक्ष्म गणित का स्थूल उपयोग बनेगा। जन्मभूमि के अनुसार मानने से वृद्धि तिथि और शास्त्राज्ञाभंग का दोष भी लगेगा, जो उपरोक्त तीन विकल्पों में नहीं लगता।

गीतार्थों से भावपूर्वक विनती है कि इन भिन्न-भिन्न विकल्पों पर इस प्रकार विचार करें। ये तीन विकल्प कोई नया असमंजस उत्पन्न करने हेतु नहीं रखें, परंतु जब सत्यभाव तक पहुँचना हो तो विभिन्न विकल्पों के लाभालाभ की विचारणा करके अन्तिम निष्कर्ष तक पहुँच सकते हैं, इसलिए ये तीन विकल्प दिए गए हैं।

## अधिक मास की निष्पत्ति

सूर्य मास और चन्द्र मास का अन्तर  $(३० \frac{१}{२}$  दिन  $- २९ \frac{३२}{६२}$  दिन)

$\frac{६१}{६२}$  दिन) लगभग होते हैं, जिन्हें ३० महीनों के साथ गुणा करने से  $२९ \frac{३२}{६२}$  दिन का अन्तर आया। इस कारण ३० महीनों के बाद ३१वां, फिर ३० महीनों के बाद ६२वां चन्द्र मास अधिक लेने की प्रचलित परम्परा सबको पता है। किन्तु अभी इस परम्परा में प्रत्यक्ष के साथ समस्या आने के कारण हमने छोड़ दी होगी, ऐसा लगता है।

यह सुप्रचलित है कि प्राचीन काल में पोष और आषाढ़ महीने ही अधिक मास के रूप में आते थे, किन्तु लच्छवी शासन के लेखों से जानकारी मिलती है, कि  $२ \frac{१}{२}$  वर्ष की जगह कुछ निश्चित संयोगों में ३ वर्ष में (लगातार दो पोष या आषाढ़) अधिक मास लिया जाता है, जिसकी जानकारी नीचे दी गई है। इस कारण **संस्कारयुक्त तिथि या नक्षत्र लेने के बावजूद भी सूर्य-चन्द्र के गणित में प्रत्यक्ष के साथ भेद न आए, ऐसी अधिक मास की व्यवस्था प्राचीन लच्छवी शासन में आती होगी, जो हम भूल चूके हैं।** वर्तमान काल में चन्द्र मास में सूर्य की राशि संक्राति न हो, उस मास को अधिक मास कहते हैं। उपरान्त आधुनिक खलोगशास्त्र के अनुसार प्रत्येक चन्द्र मास का माप बदलता है। चन्द्र मास छोटा होता है, और सूर्य प्रत्येक राशि में लगभग  $३० \frac{१}{२}$  दिन रहता है (यह माप भी आधुनिक खलोगशास्त्र के अनुसार सतत बदलता है) इस प्रकार यह माप बढ़ा होने के कारण पूरे महीने में सूर्य की राशि संक्रान्ति न हो, वहाँ अधिक मास आता है। इस परम्परा के अनुसार लगभग ३२.५ महीनों में, या कभी कम—ज्यादा समय में भी अधिक मास आता है। यह परम्परा **सूर्य की राशि की संक्रान्ति** के साथ जुड़ी हुई है। इसकी जानकारी इस प्रकार है :-

The difference between one year of earth & 12 months of Moon is 10.8992 days = 11 days.

Therefore every year lunar months comes 11 days earlier but in 3 years this difference reaches upto 33 days, which is more than one month. We call this as Adhik Masa.

Year	Month	Year	Month	Year	Month	Year	Month	Year	Month		
1966	Shravan	2	9	1982	Ashwin	2	4	1999	Jyeshtha	2	11
1969	Ashadh	2	11	1985	Shravan	2	10	2001	Ashwin	2	4
1972	Vaishakh	2	10	1988	Jyeshtha	2	10	2004	Shravan	2	10
1974	Bhadra	2	4	1991	Vaishakh	2	11	2007	Jyeshtha	2	10
1977	Shravan	2	11	1993	Bhadra	2	4	2010	Vaishakh	2	11
1980	Jyeshtha	2	10	1996	Ashadh	2	10	2012	Bhadrapad	2	4

Generally Adhik Masa comes after an interval of 2 years and 4 months, 2 years and 9 months, 2 years and 10 months or 2 years and 11 months. On an average Adhik Maas comes in 2 years and 8.5 months. This value can be verified dividing the duration of month i.e. 29.5 days by 10.9. Lunar year is 10.9 days smaller than solar year therefore after dividing  $29.53/10.9=2$  years and 8.5 months there arises a difference of one month.

अतः यह भी स्थूल गणित ही हुआ, इसीलिए अमुक वर्ष को क्षय मास लेना पड़ता है।

वर्तमान में शास्त्रों में प्राप्त परम्परा के अनुसार अयन की (उत्तरायण / दक्षिणायन की) समाप्ति के समय  $२\frac{१}{२}$ ,  $२\frac{१}{२}$  वर्ष में पोष और आषाढ़ में ही अधिक मास आते हैं, तो इस प्रकार ५० वर्ष में २० अधिक मास आते हैं। यह गणित भी स्थूल ही था।

प्रस्तुत में प्रकट की गई लच्छवी शासन के राजाओं द्वारा प्रवर्तित **सूक्ष्म गणित** पर आधारित अधिक मास की प्रक्रिया में अयन के अन्त में ही, किन्तु कभी  $२\frac{१}{२}$  तो कभी ३ वर्ष में अधिक मास आता है, जिससे प्रत्यक्ष आकाश के साथ भेद नहीं आता, क्षय मास नहीं आता, उपरान्त इसमें मात्र २ वर्ष ८ महीनों की एवरेज के लौकिक गणित का सेटिंग कभी  $२\frac{१}{२}$  वर्ष तो कभी ३ वर्ष में होता है।

उपरान्त यहाँ यह बात ध्यान रखने की है, कि आर्य संस्कृति और जैन संस्कृति नक्षत्र गणित को मानने वाली परम्परा है, इसलिए सूर्य के अयन परिवर्तन को अधिक मास मानते थे, राशि परिवर्तन को नहीं। गीतार्थों को इस सन्दर्भ में विशेष संशोधन करना चाहिए।

शिवराज आचार्य की वेदांग ज्योतिष नामक पुस्तक में गा. ३७ में P. ४०३ से ४०७ में इस प्रकार का उल्लेख है, जो नीचे दिया गया है :

उक्तविधे व्यतिकरे न हि सर्वेषु पञ्चवर्षात्मकेषु युगेषु प्रतियुगार्धमधिक-  
मासो नियमेन योज्यते, यथावश्यकं यथौचित्येव चाऽधिकमासो योज्यते। किन्तु  
यदायदाऽधिकमासो योज्यते तदातदाऽयनान्ते एव शुचौ मासे (आषाढे) वा सहस्ये  
मासे (पौषे) वा द्वितीयशुचिमासरूपेण (द्वितीयाषाढरूपेण) वा द्वितीयसहस्यमास-  
रूपेण (द्वितीयपौषरूपेण) वैवाऽधिकमासो योज्यते, नाऽयनमध्येऽन्येषु मासेष्विति  
बोध्यम्। एतादृशी व्यवस्था च यदा दृक्सिद्धसौरायनारम्भदिने कृष्णपक्षस्य दशमी

सभाष्ये सव्याख्याने च वेदाङ्गज्योतिषे

वा ततः परा वा तिथिर् भवति तदैव तेन कृष्णपक्षेण युक्तोऽमावास्यान्तो मासो-  
ऽधिको मास इति स्वीक्रियते, यदा तु दृक्सिद्धसौरायनारम्भदिने कृष्णपक्षस्य  
नवमी वा ततः पूर्वा वा तिथिर् भवति तदा तु तेन कृष्णपक्षेण युक्तोऽमावास्यान्तो  
मासोऽधिको मास इति न स्वीक्रियते इति सूचकाभ्यां वचनाभ्यां नेपालशासनकेन्द्र-  
रूपे काष्ठमण्डपमहानगरे स्थिते राष्ट्रियाऽभिलेखालये सङ्गृहीते द्रोणकृते रत्न-  
करण्डिकाख्ये प्राचीने स्मृतिसमुच्चयत्वेनोक्ते धर्मशास्त्रनिबन्धे (सूक्ष्मच्छायाचित्रा-  
धारपत्रकस्थप्रतिलिपिसङ्ख्या बी ३३/१२) एकादशीप्रकरणे २०९तमे पत्रे पूर्वपृष्ठे  
दृश्याभ्यां वचनाभ्यां स्पष्टतयाऽवगम्यते। तथाहि—

कृष्णपक्षे दशम्यादौ मेध्यं गच्छेद् दिवाकरः।

द्विराषाढः स विज्ञेयो विष्णुः स्वपिति कर्कटे ॥ इति,

दशमीमभ्यतिक्रम्य यदा सङ्क्रमते रविः।

द्विराषाढः स (न) विज्ञेयो विष्णुः स्वपिति कर्कटे ॥ इति च।

तत्र मेध्यमित्यस्य निरूढपशुबन्धरूपमेधहितमयनमुखरूपं कालमित्यर्थोऽव-  
गम्यते। एवं च यदा गताद् अधिमासाच् चान्द्रेषु त्रिंशति मासेषु व्यतीतेषु एकत्रिंशत्य  
मासस्य कृष्णपक्षस्य दशम्याः पूर्वमेव नवम्यां वा ततः पूर्वमेव वा सूर्योऽयनान्तरं  
गच्छति तदा तेन कृष्णपक्षेण सहितश् चान्द्रो मासोऽधिमास इति न स्वीक्रियते, तत

उत्तरस्याऽयनस्याऽन्ते गताद् अधिमासाच्च चान्द्रेषु त्रिषु वर्षेषु व्यतीतेष्वेवाऽधिक-  
मासः स्वीक्रियते। एवं च चान्द्राणां तपस्-तपस्यादीनां मासानां शिशिरादीनामृतानां  
च सौरैर ऋतुभिः सदैव सम्बद्धत्वं यथावत् तिष्ठति, नैव तत्र सुदूरविप्रकर्षो भवति।

उदाहरणेनाऽप्ययं विषयः स्पष्टीक्रियते। तत्र वेङ्कटेश्वर-शताब्दीपञ्चाङ्गे  
२०१४तमे वैक्रमाब्दे १८७९तमे शकाब्दे १९५७तमे क्रैस्ताब्दे दिसम्बरमासस्य  
२१तमे दिवसे सौरस्य दृक्सिद्धस्योदगयनस्य शुक्लप्रतिपदश् च सामीप्येन स्थितिर  
दृश्यते। इयमेव शुक्लप्रतिपद वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थानुसारं तपःशुक्लप्रतिपद (माघ-  
शुक्लप्रतिपद) अस्ति। ततः प्रवर्तते वैदिकानां वर्षम्। ततः प्रभृति त्रिंशति चान्द्र-  
मासेषु गतेषु २०१७तमे वैक्रमाब्दे १८८२तमे शकाब्दे १९६०तमे क्रैस्ताब्दे मईमासस्य  
२६तमे दिवसे शुक्लप्रतिपदि वैदिकानामधिको मासः (द्वितीयः शुचिमासः द्वितीय  
आषाढो वा) प्रवर्तते। तस्मिन्नधिकमासे पूर्णे ततः परं त्रिंशति चान्द्रमासेषु व्यतीतेषु  
२०१९तमे वैक्रमाब्दे १८८४तमे शकाब्दे १९६२तमे क्रैस्ताब्दे नवम्बरमासस्य  
१७तमे दिवसे अमावास्योत्तरशुक्लप्रतिपदि वैदिकानामधिको मासः (द्वितीयः  
सहस्यमासः द्वितीयः पौषो वा) प्रवर्तते। तस्मिन्नधिकमासे पूर्णे ततः परं षट्त्रिंशति  
चान्द्रमासेषु (त्रिषु चान्द्रेषु वर्षेषु) व्यतीतेषु २०२२तमे वैक्रमाब्दे १८८७तमे

#### अधिकमासोपजन्मकारणम्

शकाब्दे १९६५तमे क्रैस्ताब्दे नवम्बरमासस्य २३तमे दिवसे अमावास्योत्तरशुक्ल-  
प्रतिपदि वैदिकानामधिको मासः (द्वितीयः सहस्यमासः द्वितीयः पौषो वा) प्रवर्तते।  
तस्मिन्नधिकमासे पूर्णे ततः परं त्रिंशति चान्द्रमासेषु व्यतीतेषु २०२५तमे वैक्रमाब्दे  
१८९०तमे शकाब्दे १९६८तमे क्रैस्ताब्दे मईमासस्य २७तमे दिवसे अमावास्यागत-  
शुक्लप्रतिपदि वैदिकानामधिको मासः (द्वितीयः शुचिमासः द्वितीय आषाढो वा)  
प्रवर्तते। तस्मिन्नधिकमासे पूर्णे ततः परं षट्त्रिंशति चान्द्रमासेषु (त्रिषु चान्द्रवर्षेषु)  
व्यतीतेषु २०२८तमे वैक्रमाब्दे १८९३तमे शकाब्दे १९७१तमे क्रैस्ताब्दे मईमासस्य  
२५तमे दिवसे शुक्लप्रतिपदि वैदिकानामधिको मासः (द्वितीयः शुचिमासः द्वितीय  
आषाढो वा) प्रवर्तते। तस्मिन्नधिकमासे पूर्णे ततः परं त्रिंशति चान्द्रमासेषु गतेषु  
२०३०तमे वैक्रमेऽब्दे १९९५तमे शकाब्दे १९७३तमे क्रैस्ताब्दे नवम्बरमासस्य  
२५तमे दिवसे शुक्लप्रतिपदि वैदिकानामधिको मासः (द्वितीयः सहस्यमासः  
द्वितीयः पौषो वा) प्रवर्तते। तस्मिन्नधिकमासे पूर्णे ततः परं षट्त्रिंशति चान्द्रमासेषु  
(त्रिषु चान्द्रवर्षेषु) व्यतीतेषु २०३३तमे वैक्रमाब्दे १८९८तमे शकाब्दे १९७६तमे  
क्रैस्ताब्दे नवम्बरमासस्य २२तमे दिवसे शुक्लप्रतिपदि वैदिकानामधिको मासः



वर्षेषु) व्यतीतेषु २०६०तमे वैक्रमाब्दे १९२५तमे शकाब्दे २००३तमे क्रैस्ताब्दे नवम्बरमासस्य २४तमे दिवसे शुक्लप्रतिपदि वैदिकानामधिकमासः (द्वितीयः सहस्यमासः द्वितीयः पौषो वा) प्रवर्तते इति ज्ञेयम्।

भारतवर्षे यावनस्य ज्योतिषस्य प्रचारात्, शकानां शासनस्य स्थापनायाः कालाच्च प्रागेव मागधशासकातिक्रमणादिकैः कारणैर् नेपालोपत्यकां प्रविष्टैश्च वैशाल्या लिच्छविभिः शासकैर् भारतवर्षीया मौलिकी वैदिकी कालगणनापद्धतिरु नेपालदेशमानीता चिराय सुरक्षिता चाऽवगम्यते। नेपालदेशस्येतिहासे लिच्छवीनां शिलालेखेषु केवलमाषाढे पौषे चाऽधिमासो दृश्यते, तत्र ४३५ इत्यङ्किते (५६९ वैक्रमाब्दे), ५१९ इत्यङ्किते (६५३वै.), ३१ इत्यङ्किते (६६४वै.), ३४ इत्यङ्किते (६६७ वै.) च वर्षे पौषेऽधिमासो दृश्यते; प्राचीनलेख्येषु ५४७तमे, ५५५तमे च नेपालवर्षेऽपि (१४८३ वै. १४९१ वै.) पौषेऽधिमासो दृश्यते; ५९८तमे ६०१तमे च नेपालवर्षे (१५३५ वै., १५३८ वै.) आषाढेऽधिमासो दृश्यते; ६०४तमे नेपालवर्षे (१५४० वै.) पौषेऽधिमासो दृश्यते, ६५२तमे ६५५तमे च नेपालवर्षे (१५८९ वै., १५९२ वै.) आषाढेऽधिमासो दृश्यते इति च स्मरणीयम्। इत्थं नेपालदेशे वैक्रमाब्दानां षष्ठात् शतकात् प्रभृति षोडशं शतकं यावद् वेदाङ्गज्योतिषस्य अयनान्त एवाऽधिमास उपजायते इति सिद्धान्तमनुसृत्य आषाढे पौषे चैवाधिमासः स्वीक्रियते स्मेत्यपि स्पष्टं भवति। तत्र लिच्छविशासने पूर्वकाले प्रयुक्तः संवत्सरो वर्तमान-शकसंवत्सरोऽस्तीति प्रमोदवर्धनेन निर्णीतम्; सुमतितन्त्रपुस्तकादिषु प्राप्येषु केषुचिल्लेखेषु मानदेवाब्द इति नाम्नोल्लिखितो लिच्छविशासने उत्तरकाले प्रयुक्तः संवत्सरस् तु ६३३तमे वैक्रमेऽब्दे प्रारब्धः संवत्सर इति कैश्चिदुक्तम्,

#### अधिकमासोपजन्मकारणम्

किन्तु संः ६३४तमे वैक्रमेऽब्दे (५७७तमे क्रैस्ताब्दे) प्रारब्ध इत्यपि प्रमोदवर्धनेनैव निर्णीतम्। तदनुसारमेव चाऽत्र कोष्ठकेषु वैक्रमाब्दा उल्लिखिता बोध्याः।

- इस प्रकार :
- |                             |                             |
|-----------------------------|-----------------------------|
| १) $२\frac{१}{२}$ वर्ष में, | २) ३ वर्ष में,              |
| ३) $२\frac{१}{२}$ वर्ष में, | ४) ३ वर्ष में,              |
| ५) $२\frac{१}{२}$ वर्ष में, | ६) ३ वर्ष में,              |
| ७) $२\frac{१}{२}$ वर्ष में, | ८) $२\frac{१}{२}$ वर्ष में, |

- ९) ३ वर्ष में,      १०)  $२\frac{१}{२}$  वर्ष में,  
 ११) ३ वर्ष में,      १२)  $२\frac{१}{२}$  वर्ष में,  
 १३) ३ वर्ष में,      १४)  $२\frac{१}{२}$  वर्ष में,  
 १५)  $२\frac{१}{२}$  वर्ष में,      १६) ३ वर्ष में,

इस क्रम से अधिक मास आएगा । ऐसा करने से आकाश के साथ कभी भी भेद नहीं आएगा , यह बात लच्छवी शासन के शिलालेख कहते हैं ।  
 नमूने के लिए **देखिए परिशिष्ट ४, पेज नं. १२७**

- इस प्रकार अधिक मास की व्यवस्था आज भी की जा सकती है ।
- जिनागमों में जैन पंचांग का तिथि गणित , अधिक मास का गणित और नक्षत्र गणित आज भी उपलब्ध है , मात्र परस्पर संवाद , सहकार और देव-गुरु के अनुग्रह से इसे सामने लाना हम सबका कर्तव्य है । अब प्रश्न यह है , कि यदि सारा ज्ञान और परम्परा विद्यमान ही है , तो क्या उपरोक्त पद्धति से जैन पंचांग का निर्माण करना सम्भव है ? यदि हाँ , तो इसकी पद्धति क्या है ? तो उत्तर है कि जैन पंचांग का निर्माण आज भी सम्भव है । इसकी पद्धति आने वाले प्रकरण में दी गई है ।

## नूतन पंचांग निर्माण प्रक्रिया

सबसे पहले :-

१) पंचांग की शुरुआत कब से करनी ? कौनसी तिथि से करनी ? और कौनसे सम्वत् से करनी ? यह तय करें ।

२) वर्तमान के साथ समन्वय करने के लिए तिथि के साथ तारीख और वार का मेल भी आवश्यक है, इसलिए पंचांग की शुरुआत में कौनसी तारीख और कौनसा वार लेना चाहिए, यह तय करें ।

३) पंचांग में सूर्य और चन्द्र की राशि का (नक्षत्र का) भी उपयोग महत्व रखता है, इसलिए पंचांग की शुरुआत में कौनसे नक्षत्र थे, यह तय करें ।

४) पंचांग निर्माण हेतु ज्योतिषात्मक ग्रहचार का ज्ञान भी आवश्यक है, इसकी जानकारी प्राप्त करें ।

अब, Jet Propulsion Laboratory Development Ephemeris (JPLDE) द्वारा साल 1970 में नासा-स्विस आदि के सहकार से DE-430, DE-431 लॉन्च किया गया था । अवकाशीय पदार्थों के उचित स्थानादि बताने और दिन-प्रतिदिन के एस्ट्रोनॉमी डेटा को बताने हेतु इसकी रचना हुई थी । DE-430 में 1100 वर्षों का डेटा प्राप्त होता है, जबकि DE-431 में लगभग 30,000 वर्षों का प्रतिदिन का अवकाशीय पदार्थों का डेटा प्राप्त होता है । जैन पंचांग के निर्माण हेतु संस्कार की लुप्त परम्परा पुनर्जीवित करने के बाद भी उस संस्कार का प्रारम्भिक बिन्दु कहाँ से लेना चाहिए, यह एक बड़ा प्रश्न है । इस हेतु प्रभु वीर का निर्वाण या पंचम आरे की शुरुआत का बिन्दु सर्वाधिक विश्वसनीय विकल्प है । इसलिए वहाँ से संस्कार करके पंचांग का निर्माण होना चाहिए । अब इतने वर्षों पूर्व का डेटा DE-430 से नहीं मिलेगा, इसलिए DE-431 का उपयोग अनिवार्य है । किन्तु DE-430 की तुलना में DE-431 का डेटा कम Accurate है । इसकी जानकारी इस प्रकार है ।

# The Planetary and Lunar Ephemerides DE430 and DE431

William M. Folkner,\* James G. Williams,† Dale H. Boggs,†  
Ryan S. Park,\* and Petr Kuchynka\*

**ABSTRACT.** — The planetary and lunar ephemerides DE430 and DE431 are generated by fitting numerically integrated orbits of the Moon and planets to observations. The present-day lunar orbit is known to submeter accuracy through fitting lunar laser ranging data with an updated lunar gravity field from the Gravity Recovery and Interior Laboratory (GRAIL) mission. The orbits of the inner planets are known to subkilometer accuracy through fitting radio tracking measurements of spacecraft in orbit about them. Very long baseline interferometry measurements of spacecraft at Mars allow the orientation of the ephemeris to be tied to the International Celestial Reference Frame with an accuracy of  $0''.0002$ . This orientation is the limiting error source for the orbits of the terrestrial planets, and corresponds to orbit uncertainties of a few hundred meters. The orbits of Jupiter and Saturn are determined to accuracies of tens of kilometers as a result of fitting spacecraft tracking data. The orbits of Uranus, Neptune, and Pluto are determined primarily from astrometric observations, for which measurement uncertainties due to the Earth's atmosphere, combined with star catalog uncertainties, limit position accuracies to several thousand kilometers. DE430 and DE431 differ in their integrated time span and lunar dynamical modeling. The dynamical model for DE430 included a damping term between the Moon's liquid core and solid mantle that gives the best fit to lunar laser ranging data but that is not suitable for backward integration of more than a few centuries. The ephemeris DE431 is similar to DE430 but was fit without the core/mantle damping term, so the lunar orbit is less accurate than in DE430 for times near the current epoch, but is more suitable for times more than a few centuries in the past. DE431 is a longer integration (covering years  $-13,200$  to  $+17,191$ ) than DE430 (covering years 1550 to 2650).

## I. Introduction

The planetary and lunar ephemeris DE430 succeeds the ephemeris DE421 [1] and its precursor DE405 [2] as a general purpose ephemeris. Several interim ephemerides have been released since DE421 with specific improvements in estimates of the orbits of Mercury, Mars, and Saturn intended primarily to support the Mercury Surface, Space Environment,

---

\* Mission Design and Navigation Section.

† Tracking Systems and Applications Section.

The research described in this publication was carried out by the Jet Propulsion Laboratory, California Institute of Technology, under a contract with the National Aeronautics and Space Administration. © 2014 California Institute of Technology. U.S. Government sponsorship acknowledged.

अब, जिनमतानुसार पंचांग की शुरुआत युगारम्भ के बिन्दु समान पंचम आरे की शुरुआत, अर्थात् श्रा.व. १, पुष्य में स्थित सूर्य के दक्षिणायन और अभिजित स्थित चन्द्र के उत्तरायण से होगी।

प्रभुवीर के निर्वाण, का.व. ०) से ३ वर्ष  $८\frac{1}{2}$  महीने = श्रा.वद-१ से पंचम आरे की शुरुआत होती है।

उक्तं हि – सावणबहुलपडिवए, बालवकरणे, अभीइनक्खत्ते सव्वत्थ पढम समए, जुगस्स आइं विआणाहि। सर्वत्रेति भरतैरावतविदेहेषु भाव्यम् अवसर्पिण्यां षण्णामरकाणाम् अप्यादिरत्रैव ॥

और “किञ्च सर्वबाह्यमंडलस्थस्य पुष्यस्य भोगः सूर्याचंद्रमसो-स्सर्वाभ्यंतरमंडलस्थयोः स्यात्। तथा सर्वाभ्यंतरमंडलस्थिताभिजिन्द्रोगः सर्वबाह्ये मंडले तयोः स्यादित्यत्रायनापेक्षो भोगो न तु मंडलैकत्वं कारणम्।” मंडल प्रकरण गा. ७९ की टीका।

इसके उपरान्त क्षेत्र लोक प्रकाश के सर्ग-२० की गाथा ४६६-४६७ में भी पांचवें आरे की शुरुआत में ही सूर्य का दक्षिणायन और चन्द्र का उत्तरायण शुरु होता है, ऐसा दिखाया है।

आज से २५४७ वर्ष पूर्व प्रभु का निर्वाण हुआ, उसमें ३ वर्ष  $८\frac{1}{2}$  महीने जोड़ें, अर्थात् २५४४ वर्ष पूर्व पांचवें आरे की शुरुआत हुई। अर्थात् २५४४ वर्ष में से ई.सं. २०२० निकालें, तो **५२४ वर्ष B.C. पंचम आरे की शुरुआत माननी पड़े।**

अर्थात् ५२४ वर्ष B.C. की श्रावण वदी-१ के दक्षिणायन में प्रवेश करता सूर्य पुष्य के (कर्क के)  $६^{\circ}४२'$  पर हो, उत्तरायन में प्रवेश करता चन्द्र अभिजित के (मकर के)  $६^{\circ}४२'$  पर हो, उस समय आषाढ़ सुदी-१५ पूर्ण हो, फिर अनन्तर समय पर तुरन्त श्रा.व.१ शुरु हो। इसी प्रकार का अवकाश DE-431 निर्दिष्ट 524 B.C. २२/६ (२८/६) के डेटा में दिया गया है। मात्र १-२ घण्टे या सूर्य-चन्द्र की १-२ डिग्री का भेद डेटा की Accuracy के अभाव के कारण है। इसकी जानकारी इस प्रकार है।

ASTRODIENST EPHEMERIS for the year 524 BCE

JUNE 524 BCE (-523) JC बु शु मं गु श

00:00 UT

Day	Sid1	☉	☽	♀	♂	♃	♄	♅	♆	♇	♈	♉	♊	♋	♌	♍	♎	♏	♐	♑	♒	♓	♈	♉	♊	♋	♌	♍	♎	♏	♐	♑	♒	♓	♈	♉	♊	♋	♌	♍	♎	♏	♐	♑	♒	♓	Day
S 1	16 13 17	3II1203	0B40	12X13	9B30	28R23	25B49	28Q33	7R 1	6P 0	14B19	14R45	15R53	4II 4	n.a.	S 1																															
S 2	16 17 13	4° 9'08	13° 5	13°31	10°42	28R16	25°59	28°36	6°59	6° 0	14°21	14R38	15°49	4°11	n.a.	S 2																															
M 3	16 21 10	5° 6'13	25°41	14°54	11°55	28° 9	26° 9	28°38	6°57	6° 0	14°22	14°35	15°46	4°18	n.a.	M 3																															
T 4	16 25 6	6° 3'19	8R30	16°20	13° 7	28° 0	26°20	28°41	6°55	6° 1	14°24	14°33	15°43	4°24	n.a.	T 4																															
W 5	16 29 3	7° 0'25	21°34	17°50	14°20	27°51	26°30	28°44	6°53	6° 1	14°25	14°D33	15°40	4°31	n.a.	W 5																															
T 6	16 32 59	7°57'31	4K58	19°23	15°33	27°42	26°40	28°46	6°51	6° 1	14°27	14°R33	15°37	4°38	n.a.	T 6																															
F 7	16 36 56	8°54'36	18°42	21° 1	16°45	27°32	26°51	28°49	6°49	6° 2	14°28	14°33	15°34	4°45	n.a.	F 7																															
S 8	16 40 52	9°51'46	2°49	22°41	17°58	27°21	27° 2	28°52	6°47	6° 2	14°30	14°31	15°30	4°51	n.a.	S 8																															
S 9	16 44 49	10°48'54	17°17	24°25	19°11	27° 9	27°12	28°55	6°45	6° 3	14°32	14°27	15°27	4°58	n.a.	S 9																															
M10	16 48 46	11°46'03	2B 4	26°13	20°23	26°57	27°23	28°59	6°43	6° 3	14°33	14°20	15°24	5° 5	n.a.	M10																															
T 11	16 52 42	12°43'13	17° 2	28° 3	21°36	26°45	27°34	29° 2	6°41	6° 4	14°35	14°12	15°21	5°12	n.a.	T 11																															
W12	16 56 39	13°40'23	2II 4	29°56	22°49	26°31	27°45	29° 5	6°39	6° 4	14°36	14° 3	15°18	5°18	n.a.	W12																															
T 13	17 0 35	14°37'34	17° 1	II52	24° 2	26°18	27°56	29° 9	6°37	6° 5	14°38	13°55	15°14	5°25	n.a.	T 13																															
F 14	17 4 32	15°34'46	1B41	3°51	25°15	26° 4	28° 7	29°12	6°35	6° 6	14°40	13°47	15°11	5°32	n.a.	F 14																															
S 15	17 8 28	16°31'58	16° 0	5°51	26°28	25°49	28°18	29°16	6°33	6° 6	14°41	13°42	15° 8	5°38	n.a.	S 15																															
S 16	17 12 25	17°29'10	29°53	7°54	27°41	25°35	28°30	29°19	6°30	6° 7	14°43	13°39	15° 5	5°45	n.a.	S 16																															
M17	17 16 22	18°26'23	13Q18	9°58	28°54	25°19	28°51	29°23	6°28	6° 8	14°45	13°D38	15° 2	5°52	n.a.	M17																															
T 18	17 20 18	19°23'36	26°17	12° 3	0II 7	25° 4	28°41	29°27	6°26	6° 9	14°47	13°59	14°59	5°59	n.a.	T 18																															
W19	17 24 15	20°20'49	8P53	14° 9	1°20	24°48	29° 4	29°31	6°24	6°10	14°48	13°40	14°55	6° 5	n.a.	W19																															
T 20	17 28 11	21°18'03	21°11	16°16	2°33	24°32	29°15	29°35	6°21	6°10	14°50	13°R40	14°52	6°12	n.a.	T 20																															
F 21	17 32 8	22°15'17	3A16	18°23	3°46	24°17	29°27	29°39	6°19	6°11	14°52	13°40	14°49	6°19	n.a.	F 21																															
S 22	17 36 4	23°12'32	15°12	20°30	4°59	24° 0	29°38	29°43	6°17	6°12	14°53	13°37	14°46	6°25	n.a.	S 22																															
S 23	17 40 1	24° 9'48	27° 5	22°37	6°12	23°44	29°50	29°47	6°14	6°13	14°55	13°33	14°43	6°32	n.a.	S 23																															
M24	17 43 57	25° 7'04	8II57	24°44	7°25	23°28	0Q 2	29°52	6°12	6°14	14°57	13°26	14°40	6°39	n.a.	M24																															
T 25	17 47 54	26° 4'21	20°53	26°50	8°39	23°12	0°13	29°56	6°10	6°15	14°59	13°18	14°36	6°46	n.a.	T 25																															
W26	17 51 51	27° 1'38	2A56	28°55	9°52	22°56	0°25	0P 0	6° 7	6°16	15° 1	13°10	14°33	6°52	n.a.	W26																															
T 27	17 55 47	27°58'57	15° 6	0B59	11° 5	22°40	0°37	0° 5	6° 5	6°17	15° 2	13° 2	14°30	6°59	n.a.	T 27																															
F 28	17 59 44	28°56'16	27°26	3° 2	12°19	22°24	0°49	0°14	6° 3	6°18	15° 4	12°54	14°27	7° 6	n.a.	F 28																															
S 29	18 3 40	29°53'37	9B56	5° 3	13°32	22° 9	1° 1	0°14	6° 3	6°19	15° 6	12°49	14°24	7°13	n.a.	S 29																															
S 30	18 7 37	0B50'58	22B37	7B 3	14II45	21R54	1Q13	0P 19	5B58	6P 20	15B 8	12R45	14R20	7II19	n.a.	S 30																															

सूर्य चंद्र

टिप्पण : १. पांचवें आरे की शुरुआत श्रा.व.१ से



## टिप्पण की समझ :-

(१) पांचवें आरे की शुरुआत श्रा.व.१ से है। यहाँ सूर्य और चन्द्र लगभग १८० डिग्री पर दिखाई देते हैं। सायन परम्परा के अनुसार **सूर्य मिथुन में और चन्द्र धन में** है, जबकि **निरयन** (हमारी) परम्परा के अनुसार **सूर्य कर्क में और चन्द्र मकर में** है, इसलिए पूनम पूर्ण होकर प्रतिपदा (एकम तिथि) शुरू हुई है। तो इधर सूर्यप्रज्ञप्ति के सूत्र ३७, ३८, और ३९ (१०वें प्राभृत का ५/६ प्राभृत-प्राभृत) बताते हैं कि आषाढ़ सुदी-१५ के उत्तराषाढ़ा नामक कुलसंज्ञक नक्षत्र में चन्द्र होता है, जो एफेमरीज के डेटा में दिखाई देता है।

इसलिए २१ जून के उत्तराषाढ़ा में (मकर में) चन्द्र है, ऐसा पता चल ही रहा है, और अ. सु.-१५ के बाद तुरन्त श्रा.व. १ आती है।

(२) चन्द्र दक्षिण में सुबह ५.३० बजे २७°२४' कला का दिखाई देता है, अभी चन्द्र थोड़ा दक्षिण में जाकर वापिस आएगा।

सूर्य उत्तर में सुबह ५.३० बजे २३°४५' कला का दिखाया है, अभी सूर्य थोड़ा उत्तर में जाकर वापिस आएगा।

इस प्रकार अब सूर्य का दक्षिणायन और चन्द्र का उत्तरायण शुरू होगा।

(३) अभी हमारी तारीखें ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार चलती है। ये डेटा जूलियन कैलेंडर के अनुसार है। उस समय जूलियन कैलेंडर के अनुसार **१ जून = २६ मई होती है**, इस प्रकार **२८ जून = २२ जून ग्रेगोरियन की तारीख आएगी। जब शुक्रवार आता है, तब पांचवें आरे की शुरुआत हुई।**

(४) सायन से निरयन में जाने के लिए उस समय अयनांश (+) करने पड़ते हैं, अभी (-) करने पड़ते हैं। अयनांश में भी अनेक मतान्तर हैं, जो "नक्षत्र मीमांसा" नामक पुस्तक में दिए हैं, वहाँ से देख लें।

✽ प्रस्तुत में सूर्य २८°५६'१६" मिथुन का + १०°१८'१५" अयनांश = ९°१४'३१" कर्क का सूर्य है।

✽ चंद्र २७°२६' धनु का + १०°१८' अयनांश = ७°४४' मकर का है।

अब मात्र एक-दो डिग्री अयनांश अलग हो या सूर्य-चन्द्र के स्थान में एक-दो डिग्री (२-३ घण्टे) का अंतर adjust करने से सूर्य-चन्द्र के अयनांश ६°४२' होते हैं, जो जैन मत के अनुसार अभिजित शुरुआत है।

सारिणी

Nakshatra	Initial Point (Equal div.)			Initial Point (Unequal div.)			Yogatara-with Nirayana Long. (After Burgess)			As Identified by the author		
	S	0	1	S	0	1	S	0	1			
Asvini	0	0	0	0	0	0	β Arietis	0	10	7	1	Meshasya
Bharani	0	13	20	0	13	11	41 Arietis	0	24	21	3	Meshasya
Krittika	0	26	40	0	19	46	η Tauri	1	0	8	20	Vrishasya
Rohini	1	10	0	1	2	56	α Tauri	1	15	56	1	Vrishasya
Mrigasiras	1	23	20	1	22	42	λ Orionis	1	29	51	11	Mrigasya
Ardra	2	6	40	2	5	53	α Orionis	2	4	54	2	Mrigasya
Punarvasu	2	20	0	2	12	28	β Geminor	2	29	22	1	Mithunasya
Pushya	3	3	20	3	2	14	δ Cancrī	3	14	52	3	Karkatasya
Aslesha	3	16	40	3	15	25	δ Hydrac	3	18	29	2	Hirada-Sarpasya
Magha	4	0	0	3	22	0	α Leonis	4	5	58	1	Simhasya
P.Phalguni	4	13	20	4	5	11	δ Leonis	4	17	27	4	Simhasya
U.Phalguni	4	26	40	4	18	21	β Leonis	4	27	46	2	Simhasya
Hasta	5	10	0	5	8	7	δ Corvi	5	19	36	2	Karkatasya
Chitra	5	23	20	5	21	18	α Virginis	5	29	59	1	Kanyah
Svati	6	6	40	6	4	28	α Bootis	6	0	23		Nishthya
Visakha	6	20	0	6	11	3	α Libra	6	21	14	1	Tulasya
Anuradha	7	3	20	7	0	49	δ Scorpīi	7	8	43	5	Vriscikasya
Jyestha	7	16	40	7	14	0	α Scorpīi	7	15	54	1	Vriscikasya
Mula	8	0	0	7	20	35	λ Scorpīi	8	0	44	2	Vriscikasya
P.Aśadhā	8	13	20	8	3	46	δ Sagittarii	8	10	43	3	Dhanusah
U.Aśadhā	8	26	40	8	16	56	α Sagittarii	8	18	32	2	Dhanusah
Abhijit		9	0	9	0	42	α Lyrac	8	21	27	1	Vinayalu
Sravana	9	10	0	9	10	57	α Aquilac	9	7	55	1	Garudasya
Dhanishta	9	23	20	9	24	7	β Delphini	9	22	29	1	Sravisthasya
Satabhisaj	10	6	40	10	7	18	λ Aquarii	10	17	43	7	Kumbhasya
P.Bhadrapada	10	20	0	10	13	53	α Pegasi	10	29	38	3	Pakshirajasya
U.Bhadrapada	11	3	20	10	27	4	γ Pegasi	11	15	18	1	Dhruvamatuh
Revati	11	16	40	11	16	49	ι Piscium	11	26	1	6	Minasya
Asvini	12	0	0	12	0	0						

५. इसमें अभी भी संशोधन की जगह है, किन्तु यह बिन्दु ९० से ९५% सत्य के निकट लगता है। इसलिए अभी २२ जून-५२४ B.C. शुक्रवार से संस्कार सहित (तिथि और नक्षत्र दोनों का) पंचांग बनाकर संशोधन होना चाहिए।

फिर से बता दें, कि यह मात्र ठोस विचारणा है, संशोधन है। अतीन्द्रिय तत्त्व तक शास्त्रचक्षु या मार्गानुसारी अर्थघटन द्वारा पहुँचने का प्रयास है, इसलिए फेर-बदल का स्थान है। जिनाज्ञा विरुद्ध कुछ भी लिखा गया हो तो मिच्छामि दुक्कडम्।

## परिशिष्ट-१

६१/६२ अहोरात्रि के माप की २३ घ. ३६ मि. ४६ से. के माप की तिथि से पंचांग निर्माण

**नोट :** १) सूर्योदय का समय जोड़ने से वास्तविक तिथि समाप्ति का समय मिलेगा ।

२) इस प्रकार हर वर्ष साधिक ४ घण्टे, अर्थात्

१ ले वर्ष साधिक ४ घण्टे का भेद,

२ रे वर्ष साधिक ८ घण्टे का भेद,

३ रे वर्ष साधिक १२ घण्टे का भेद,

४ थे वर्ष साधिक १६ घण्टे का भेद,

५ वें वर्ष साधिक २० घण्टे का भेद प्रत्यक्ष के सूर्य-चन्द्र की गति से निर्मित होने वाली तिथि से होगा ।

इस प्रकार लगभग एक दिन का फर्क आएगा ।

### PARISHISTH 1 - Tithi Duration: 23:36:46:452 + Extra Day at Yug End

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tiithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
1	Friday	1	1	4	Shravan	Vad	1	23:36:46	
2	Saturday			4	Shravan	Vad	2	23:13:33	
3	Sunday			4	Shravan	Vad	3	22:50:19	
4	Monday			4	Shravan	Vad	4	22:27:06	
5	Tuesday			4	Shravan	Vad	5	22:03:52	
6	Wednesday			4	Shravan	Vad	6	21:40:39	
7	Thursday			4	Shravan	Vad	7	21:17:25	
8	Friday			4	Shravan	Vad	8	20:54:12	
9	Saturday			4	Shravan	Vad	9	20:30:58	
10	Sunday			4	Shravan	Vad	10	20:07:45	
11	Monday			4	Shravan	Vad	11	19:44:31	
12	Tuesday			4	Shravan	Vad	12	19:21:17	
13	Wednesday			4	Shravan	Vad	13	18:58:04	
14	Thursday			4	Shravan	Vad	14	18:34:50	
15	Friday			4	Shravan	Vad	30	18:11:37	
16	Saturday			4	Shravan	Sud	1	17:48:23	
17	Sunday			4	Shravan	Sud	2	17:25:10	
18	Monday			4	Shravan	Sud	3	17:01:56	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
19	Tuesday			4	Shravan	Sud	4	16:38:43	
20	Wednesday			4	Shravan	Sud	5	16:15:29	
21	Thursday			4	Shravan	Sud	6	15:52:15	
22	Friday			4	Shravan	Sud	7	15:29:02	
23	Saturday			4	Shravan	Sud	8	15:05:48	
24	Sunday			4	Shravan	Sud	9	14:42:35	
25	Monday			4	Shravan	Sud	10	14:19:21	
26	Tuesday			4	Shravan	Sud	11	13:56:08	
27	Wednesday			4	Shravan	Sud	12	13:32:54	
28	Thursday			4	Shravan	Sud	13	13:09:41	
29	Friday			4	Shravan	Sud	14	12:46:27	
30	Saturday			4	Shravan	Sud	15	12:23:14	
31	Sunday			4	Bhadarvo	Vad	1	12:00:00	
32	Monday			4	Bhadarvo	Vad	2	11:36:46	
33	Tuesday			4	Bhadarvo	Vad	3	11:13:33	
34	Wednesday			4	Bhadarvo	Vad	4	10:50:19	
35	Thursday			4	Bhadarvo	Vad	5	10:27:06	
36	Friday			4	Bhadarvo	Vad	6	10:03:52	
37	Saturday			4	Bhadarvo	Vad	7	9:40:39	
38	Sunday			4	Bhadarvo	Vad	8	9:17:25	
39	Monday			4	Bhadarvo	Vad	9	8:54:12	
40	Tuesday			4	Bhadarvo	Vad	10	8:30:58	
41	Wednesday			4	Bhadarvo	Vad	11	8:07:45	
42	Thursday			4	Bhadarvo	Vad	12	7:44:31	
43	Friday			4	Bhadarvo	Vad	13	7:21:17	
44	Saturday			4	Bhadarvo	Vad	14	6:58:04	
45	Sunday			4	Bhadarvo	Vad	30	6:34:50	
46	Monday			4	Bhadarvo	Sud	1	6:11:37	
47	Tuesday			4	Bhadarvo	Sud	2	5:48:23	
48	Wednesday			4	Bhadarvo	Sud	3	5:25:10	
49	Thursday			4	Bhadarvo	Sud	4	5:01:56	
50	Friday			4	Bhadarvo	Sud	5	4:38:43	
51	Saturday			4	Bhadarvo	Sud	6	4:15:29	
52	Sunday			4	Bhadarvo	Sud	7	3:52:16	
53	Monday			4	Bhadarvo	Sud	8	3:29:02	
54	Tuesday			4	Bhadarvo	Sud	9	3:05:48	
55	Wednesday			4	Bhadarvo	Sud	10	2:42:35	
56	Thursday			4	Bhadarvo	Sud	11	2:19:21	
57	Friday			4	Bhadarvo	Sud	12	1:56:08	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
58	Saturday			4	Bhadarvo	Sud	13	1:32:54	
59	Sunday			4	Bhadarvo	Sud	14	1:09:41	
60	Monday			4	Bhadarvo	Sud	15	0:46:27	
61	Tuesday			4	Aaso	Vad	1	0:23:14	२ का क्षय
62	Wednesday			4	Aaso	Vad	3	23:36:46	
63	Thursday			4	Aaso	Vad	4	23:13:33	
64	Friday			4	Aaso	Vad	5	22:50:19	
65	Saturday			4	Aaso	Vad	6	22:27:06	
66	Sunday			4	Aaso	Vad	7	22:03:52	
67	Monday			4	Aaso	Vad	8	21:40:39	
68	Tuesday			4	Aaso	Vad	9	21:17:25	
69	Wednesday			4	Aaso	Vad	10	20:54:12	
70	Thursday			4	Aaso	Vad	11	20:30:58	
71	Friday			4	Aaso	Vad	12	20:07:45	
72	Saturday			4	Aaso	Vad	13	19:44:31	
73	Sunday			4	Aaso	Vad	14	19:21:17	
74	Monday			4	Aaso	Vad	30	18:58:04	
75	Tuesday			4	Aaso	Sud	1	18:34:50	
76	Wednesday			4	Aaso	Sud	2	18:11:37	
77	Thursday			4	Aaso	Sud	3	17:48:23	
78	Friday			4	Aaso	Sud	4	17:25:10	
79	Saturday			4	Aaso	Sud	5	17:01:56	
80	Sunday			4	Aaso	Sud	6	16:38:43	
81	Monday			4	Aaso	Sud	7	16:15:29	
82	Tuesday			4	Aaso	Sud	8	15:52:16	
83	Wednesday			4	Aaso	Sud	9	15:29:02	
84	Thursday			4	Aaso	Sud	10	15:05:48	
85	Friday			4	Aaso	Sud	11	14:42:35	
86	Saturday			4	Aaso	Sud	12	14:19:21	
87	Sunday			4	Aaso	Sud	13	13:56:08	
88	Monday			4	Aaso	Sud	14	13:32:54	
89	Tuesday			4	Aaso	Sud	15	13:09:41	
90	Wednesday			4	Kartak	Vad	1	12:46:27	
91	Thursday			4	Kartak	Vad	2	12:23:14	
92	Friday			4	Kartak	Vad	3	12:00:00	
93	Saturday			4	Kartak	Vad	4	11:36:46	
94	Sunday			4	Kartak	Vad	5	11:13:33	
95	Monday			4	Kartak	Vad	6	10:50:19	
96	Tuesday			4	Kartak	Vad	7	10:27:06	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
97	Wednesday			4	Kartak	Vad	8	10:03:52	
98	Thursday			4	Kartak	Vad	9	9:40:39	
99	Friday			4	Kartak	Vad	10	9:17:25	
100	Saturday			4	Kartak	Vad	11	8:54:12	
101	Sunday			4	Kartak	Vad	12	8:30:58	
102	Monday			4	Kartak	Vad	13	8:07:45	
103	Tuesday			4	Kartak	Vad	14	7:44:31	
104	Wednesday			4	Kartak	Vad	30	7:21:17	
105	Thursday			5	Kartak	Sud	1	6:58:04	
106	Friday			5	Kartak	Sud	2	6:34:50	
107	Saturday			5	Kartak	Sud	3	6:11:37	
108	Sunday			5	Kartak	Sud	4	5:48:23	
109	Monday			5	Kartak	Sud	5	5:25:10	
110	Tuesday			5	Kartak	Sud	6	5:01:56	
111	Wednesday			5	Kartak	Sud	7	4:38:43	
112	Thursday			5	Kartak	Sud	8	4:15:29	
113	Friday			5	Kartak	Sud	9	3:52:16	
114	Saturday			5	Kartak	Sud	10	3:29:02	
115	Sunday			5	Kartak	Sud	11	3:05:48	
116	Monday			5	Kartak	Sud	12	2:42:35	
117	Tuesday			5	Kartak	Sud	13	2:19:21	
118	Wednesday			5	Kartak	Sud	14	1:56:08	
119	Thursday			5	Kartak	Sud	15	1:32:54	
120	Friday			5	Magshar	Vad	1	1:09:41	
121	Saturday			5	Magshar	Vad	2	0:46:27	
122	Sunday			5	Magshar	Vad	3	0:23:14	४ का क्षय
123	Monday			5	Magshar	Vad	5	23:36:46	
124	Tuesday			5	Magshar	Vad	6	23:13:33	
125	Wednesday			5	Magshar	Vad	7	22:50:19	
126	Thursday			5	Magshar	Vad	8	22:27:06	
127	Friday			5	Magshar	Vad	9	22:03:52	
128	Saturday			5	Magshar	Vad	10	21:40:39	
129	Sunday			5	Magshar	Vad	11	21:17:25	
130	Monday			5	Magshar	Vad	12	20:54:12	
131	Tuesday			5	Magshar	Vad	13	20:30:58	
132	Wednesday			5	Magshar	Vad	14	20:07:45	
133	Thursday			5	Magshar	Vad	30	19:44:31	
134	Friday			5	Magshar	Sud	1	19:21:17	
135	Saturday			5	Magshar	Sud	2	18:58:04	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
136	Sunday			5	Magshar	Sud	3	18:34:50	
137	Monday			5	Magshar	Sud	4	18:11:37	
138	Tuesday			5	Magshar	Sud	5	17:48:23	
139	Wednesday			5	Magshar	Sud	6	17:25:10	
140	Thursday			5	Magshar	Sud	7	17:01:56	
141	Friday			5	Magshar	Sud	8	16:38:43	
142	Saturday			5	Magshar	Sud	9	16:15:29	
143	Sunday			5	Magshar	Sud	10	15:52:16	
144	Monday			5	Magshar	Sud	11	15:29:02	
145	Tuesday			5	Magshar	Sud	12	15:05:48	
146	Wednesday			5	Magshar	Sud	13	14:42:35	
147	Thursday			5	Magshar	Sud	14	14:19:21	
148	Friday			5	Magshar	Sud	15	13:56:08	
149	Saturday			5	Posh	Vad	1	13:32:54	
150	Sunday			5	Posh	Vad	2	13:09:41	
151	Monday			5	Posh	Vad	3	12:46:27	
152	Tuesday			5	Posh	Vad	4	12:23:14	
153	Wednesday			5	Posh	Vad	5	12:00:00	
154	Thursday			5	Posh	Vad	6	11:36:47	
155	Friday			5	Posh	Vad	7	11:13:33	
156	Saturday			5	Posh	Vad	8	10:50:19	
157	Sunday			5	Posh	Vad	9	10:27:06	
158	Monday			5	Posh	Vad	10	10:03:52	
159	Tuesday			5	Posh	Vad	11	9:40:39	
160	Wednesday			5	Posh	Vad	12	9:17:25	
161	Thursday			5	Posh	Vad	13	8:54:12	
162	Friday			5	Posh	Vad	14	8:30:58	
163	Saturday			5	Posh	Vad	30	8:07:45	
164	Sunday			5	Posh	Sud	1	7:44:31	
165	Monday			5	Posh	Sud	2	7:21:17	
166	Tuesday			5	Posh	Sud	3	6:58:04	
167	Wednesday			5	Posh	Sud	4	6:34:50	
168	Thursday			5	Posh	Sud	5	6:11:37	
169	Friday			5	Posh	Sud	6	5:48:23	
170	Saturday			5	Posh	Sud	7	5:25:10	
171	Sunday			5	Posh	Sud	8	5:01:56	
172	Monday			5	Posh	Sud	9	4:38:43	
173	Tuesday			5	Posh	Sud	10	4:15:29	
174	Wednesday			5	Posh	Sud	11	3:52:16	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
175	Thursday			5	Posh	Sud	12	3:29:02	
176	Friday			5	Posh	Sud	13	3:05:48	
177	Saturday			5	Posh	Sud	14	2:42:35	
178	Sunday			5	Posh	Sud	15	2:19:21	
179	Monday			5	Mahaa	Vad	1	1:56:08	
180	Tuesday			5	Mahaa	Vad	2	1:32:54	
181	Wednesday			5	Mahaa	Vad	3	1:09:41	
182	Thursday			5	Mahaa	Vad	4	0:46:27	
183	Friday			5	Mahaa	Vad	5	0:23:14	६ का क्षय
184	Saturday			5	Mahaa	Vad	7	23:36:47	
185	Sunday			5	Mahaa	Vad	8	23:13:33	
186	Monday			5	Mahaa	Vad	9	22:50:19	
187	Tuesday			5	Mahaa	Vad	10	22:27:06	
188	Wednesday			5	Mahaa	Vad	11	22:03:52	
189	Thursday			5	Mahaa	Vad	12	21:40:39	
190	Friday			5	Mahaa	Vad	13	21:17:25	
191	Saturday			5	Mahaa	Vad	14	20:54:12	
192	Sunday			5	Mahaa	Vad	30	20:30:58	
193	Monday			5	Mahaa	Sud	1	20:07:45	
194	Tuesday			5	Mahaa	Sud	2	19:44:31	
195	Wednesday			5	Mahaa	Sud	3	19:21:17	
196	Thursday			5	Mahaa	Sud	4	18:58:04	
197	Friday			5	Mahaa	Sud	5	18:34:50	
198	Saturday			5	Mahaa	Sud	6	18:11:37	
199	Sunday			5	Mahaa	Sud	7	17:48:23	
200	Monday			5	Mahaa	Sud	8	17:25:10	
201	Tuesday			5	Mahaa	Sud	9	17:01:56	
202	Wednesday			5	Mahaa	Sud	10	16:38:43	
203	Thursday			5	Mahaa	Sud	11	16:15:29	
204	Friday			5	Mahaa	Sud	12	15:52:16	
205	Saturday			5	Mahaa	Sud	13	15:29:02	
206	Sunday			5	Mahaa	Sud	14	15:05:48	
207	Monday			5	Mahaa	Sud	15	14:42:35	
208	Tuesday			5	Fagan	Vad	1	14:19:21	
209	Wednesday			5	Fagan	Vad	2	13:56:08	
210	Thursday			5	Fagan	Vad	3	13:32:54	
211	Friday			5	Fagan	Vad	4	13:09:41	
212	Saturday			5	Fagan	Vad	5	12:46:27	
213	Sunday			5	Fagan	Vad	6	12:23:14	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
214	Monday			5	Fagan	Vad	7	12:00:00	
215	Tuesday			5	Fagan	Vad	8	11:36:47	
216	Wednesday			5	Fagan	Vad	9	11:13:33	
217	Thursday			5	Fagan	Vad	10	10:50:19	
218	Friday			5	Fagan	Vad	11	10:27:06	
219	Saturday			5	Fagan	Vad	12	10:03:52	
220	Sunday			5	Fagan	Vad	13	9:40:39	
221	Monday			5	Fagan	Vad	14	9:17:25	
222	Tuesday			5	Fagan	Vad	30	8:54:12	
223	Wednesday			5	Fagan	Sud	1	8:30:58	
224	Thursday			5	Fagan	Sud	2	8:07:45	
225	Friday			5	Fagan	Sud	3	7:44:31	
226	Saturday			5	Fagan	Sud	4	7:21:18	
227	Sunday			5	Fagan	Sud	5	6:58:04	
228	Monday			5	Fagan	Sud	6	6:34:50	
229	Tuesday			5	Fagan	Sud	7	6:11:37	
230	Wednesday			5	Fagan	Sud	8	5:48:23	
231	Thursday			5	Fagan	Sud	9	5:25:10	
232	Friday			5	Fagan	Sud	10	5:01:56	
233	Saturday			5	Fagan	Sud	11	4:38:43	
234	Sunday			5	Fagan	Sud	12	4:15:29	
235	Monday			5	Fagan	Sud	13	3:52:16	
236	Tuesday			5	Fagan	Sud	14	3:29:02	
237	Wednesday			5	Fagan	Sud	15	3:05:48	
238	Thursday			5	Chaitra	Vad	1	2:42:35	
239	Friday			5	Chaitra	Vad	2	2:19:21	
240	Saturday			5	Chaitra	Vad	3	1:56:08	
241	Sunday			5	Chaitra	Vad	4	1:32:54	
242	Monday			5	Chaitra	Vad	5	1:09:41	
243	Tuesday			5	Chaitra	Vad	6	0:46:27	
244	Wednesday			5	Chaitra	Vad	7	0:23:14	८ का क्षय
245	Thursday			5	Chaitra	Vad	9	23:36:47	
246	Friday			5	Chaitra	Vad	10	23:13:33	
247	Saturday			5	Chaitra	Vad	11	22:50:19	
248	Sunday			5	Chaitra	Vad	12	22:27:06	
249	Monday			5	Chaitra	Vad	13	22:03:52	
250	Tuesday			5	Chaitra	Vad	14	21:40:39	
251	Wednesday			5	Chaitra	Vad	30	21:17:25	
252	Thursday			5	Chaitra	Sud	1	20:54:12	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
253	Friday			5	Chaitra	Sud	2	20:30:58	
254	Saturday			5	Chaitra	Sud	3	20:07:45	
255	Sunday			5	Chaitra	Sud	4	19:44:31	
256	Monday			5	Chaitra	Sud	5	19:21:18	
257	Tuesday			5	Chaitra	Sud	6	18:58:04	
258	Wednesday			5	Chaitra	Sud	7	18:34:50	
259	Thursday			5	Chaitra	Sud	8	18:11:37	
260	Friday			5	Chaitra	Sud	9	17:48:23	
261	Saturday			5	Chaitra	Sud	10	17:25:10	
262	Sunday			5	Chaitra	Sud	11	17:01:56	
263	Monday			5	Chaitra	Sud	12	16:38:43	
264	Tuesday			5	Chaitra	Sud	13	16:15:29	
265	Wednesday			5	Chaitra	Sud	14	15:52:16	
266	Thursday			5	Chaitra	Sud	15	15:29:02	
267	Friday			5	Vaishakh	Vad	1	15:05:48	
268	Saturday			5	Vaishakh	Vad	2	14:42:35	
269	Sunday			5	Vaishakh	Vad	3	14:19:21	
270	Monday			5	Vaishakh	Vad	4	13:56:08	
271	Tuesday			5	Vaishakh	Vad	5	13:32:54	
272	Wednesday			5	Vaishakh	Vad	6	13:09:41	
273	Thursday			5	Vaishakh	Vad	7	12:46:27	
274	Friday			5	Vaishakh	Vad	8	12:23:14	
275	Saturday			5	Vaishakh	Vad	9	12:00:00	
276	Sunday			5	Vaishakh	Vad	10	11:36:47	
277	Monday			5	Vaishakh	Vad	11	11:13:33	
278	Tuesday			5	Vaishakh	Vad	12	10:50:19	
279	Wednesday			5	Vaishakh	Vad	13	10:27:06	
280	Thursday			5	Vaishakh	Vad	14	10:03:52	
281	Friday			5	Vaishakh	Vad	30	9:40:39	
282	Saturday			5	Vaishakh	Sud	1	9:17:25	
283	Sunday			5	Vaishakh	Sud	2	8:54:12	
284	Monday			5	Vaishakh	Sud	3	8:30:58	
285	Tuesday			5	Vaishakh	Sud	4	8:07:45	
286	Wednesday			5	Vaishakh	Sud	5	7:44:31	
287	Thursday			5	Vaishakh	Sud	6	7:21:18	
288	Friday			5	Vaishakh	Sud	7	6:58:04	
289	Saturday			5	Vaishakh	Sud	8	6:34:50	
290	Sunday			5	Vaishakh	Sud	9	6:11:37	
291	Monday			5	Vaishakh	Sud	10	5:48:23	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
292	Tuesday			5	Vaishakh	Sud	11	5:25:10	
293	Wednesday			5	Vaishakh	Sud	12	5:01:56	
294	Thursday			5	Vaishakh	Sud	13	4:38:43	
295	Friday			5	Vaishakh	Sud	14	4:15:29	
296	Saturday			5	Vaishakh	Sud	15	3:52:16	
297	Sunday			5	Jeth	Vad	1	3:29:02	
298	Monday			5	Jeth	Vad	2	3:05:49	
299	Tuesday			5	Jeth	Vad	3	2:42:35	
300	Wednesday			5	Jeth	Vad	4	2:19:21	
301	Thursday			5	Jeth	Vad	5	1:56:08	
302	Friday			5	Jeth	Vad	6	1:32:54	
303	Saturday			5	Jeth	Vad	7	1:09:41	
304	Sunday			5	Jeth	Vad	8	0:46:27	
305	Monday			5	Jeth	Vad	9	0:23:14	१० का क्षय
306	Tuesday			5	Jeth	Vad	11	23:36:47	
307	Wednesday			5	Jeth	Vad	12	23:13:33	
308	Thursday			5	Jeth	Vad	13	22:50:19	
309	Friday			5	Jeth	Vad	14	22:27:06	
310	Saturday			5	Jeth	Vad	30	22:03:52	
311	Sunday			5	Jeth	Sud	1	21:40:39	
312	Monday			5	Jeth	Sud	2	21:17:25	
313	Tuesday			5	Jeth	Sud	3	20:54:12	
314	Wednesday			5	Jeth	Sud	4	20:30:58	
315	Thursday			5	Jeth	Sud	5	20:07:45	
316	Friday			5	Jeth	Sud	6	19:44:31	
317	Saturday			5	Jeth	Sud	7	19:21:18	
318	Sunday			5	Jeth	Sud	8	18:58:04	
319	Monday			5	Jeth	Sud	9	18:34:50	
320	Tuesday			5	Jeth	Sud	10	18:11:37	
321	Wednesday			5	Jeth	Sud	11	17:48:23	
322	Thursday			5	Jeth	Sud	12	17:25:10	
323	Friday			5	Jeth	Sud	13	17:01:56	
324	Saturday			5	Jeth	Sud	14	16:38:43	
325	Sunday			5	Jeth	Sud	15	16:15:29	
326	Monday			5	Ashadh	Vad	1	15:52:16	
327	Tuesday			5	Ashadh	Vad	2	15:29:02	
328	Wednesday			5	Ashadh	Vad	3	15:05:49	
329	Thursday			5	Ashadh	Vad	4	14:42:35	
330	Friday			5	Ashadh	Vad	5	14:19:21	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
331	Saturday			5	Ashadh	Vad	6	13:56:08	
332	Sunday			5	Ashadh	Vad	7	13:32:54	
333	Monday			5	Ashadh	Vad	8	13:09:41	
334	Tuesday			5	Ashadh	Vad	9	12:46:27	
335	Wednesday			5	Ashadh	Vad	10	12:23:14	
336	Thursday			5	Ashadh	Vad	11	12:00:00	
337	Friday			5	Ashadh	Vad	12	11:36:47	
338	Saturday			5	Ashadh	Vad	13	11:13:33	
339	Sunday			5	Ashadh	Vad	14	10:50:19	
340	Monday			5	Ashadh	Vad	30	10:27:06	
341	Tuesday			5	Ashadh	Sud	1	10:03:52	
342	Wednesday			5	Ashadh	Sud	2	9:40:39	
343	Thursday			5	Ashadh	Sud	3	9:17:25	
344	Friday			5	Ashadh	Sud	4	8:54:12	
345	Saturday			5	Ashadh	Sud	5	8:30:58	
346	Sunday			5	Ashadh	Sud	6	8:07:45	
347	Monday			5	Ashadh	Sud	7	7:44:31	
348	Tuesday			5	Ashadh	Sud	8	7:21:18	
349	Wednesday			5	Ashadh	Sud	9	6:58:04	
350	Thursday			5	Ashadh	Sud	10	6:34:50	
351	Friday			5	Ashadh	Sud	11	6:11:37	
352	Saturday			5	Ashadh	Sud	12	5:48:23	
353	Sunday			5	Ashadh	Sud	13	5:25:10	
354	Monday			5	Ashadh	Sud	14	5:01:56	
355	Tuesday			5	Ashadh	Sud	15	4:38:43	
356	Wednesday	1	2	5	Shravan	Vad	1	4:15:29	
357	Thursday			5	Shravan	Vad	2	3:52:16	
358	Friday			5	Shravan	Vad	3	3:29:02	
359	Saturday			5	Shravan	Vad	4	3:05:49	
360	Sunday			5	Shravan	Vad	5	2:42:35	
361	Monday			5	Shravan	Vad	6	2:19:21	
362	Tuesday			5	Shravan	Vad	7	1:56:08	
363	Wednesday			5	Shravan	Vad	8	1:32:54	
364	Thursday			5	Shravan	Vad	9	1:09:41	
365	Friday			5	Shravan	Vad	10	0:46:27	
366	Saturday			5	Shravan	Vad	11	0:23:14	१२ का क्षय

इस प्रकार, इस तरह १ वर्ष के बाद प्रत्यक्ष की तिथि के साथ लगभग ४ घ. १० मि. को भेद आयेगा ।

## परिशिष्ट-२

समाधान – (१) के अनुसार वाली पद्धति का अंदाजित पंचांग ।  
संस्कार सहित, प्रत्यक्ष की सूर्य-चन्द्र की गति द्वारा निर्मित होने  
वाली तिथि के साथ लगभग मेल खाता हुआ २३ घ. ३७ मि.  
२८.८१ से. के माप वाली तिथि का पंचांग ।

नोट : १) सूर्योदय का समय जोड़ने से वास्तविक तिथि समाप्ति का समय मिलेगा ।

२) हर वर्ष प्रत्यक्ष के साथ के साधिक ४ घंटे = २५० मिनट • इस प्रकार ५ वर्ष में लगभग साधिक २० घण्टे = १२५० मिनट का भेद को दूर करने के लिए प्रतिदिन ४२ सेकण्ड का संस्कार का गणित इसमें है ।

३) तिथि का क्षय सूर्योदय को जो तिथि स्पर्श न करे (‘उदयमि जा सा’ नियम से) इस आधार से किया है । लगभग ६३-६४ दिन में तिथि का क्षय आएगा ।

### PARISHISTH 2 - Tithi Duration: 23:37:28:81

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
1	Friday	1	1	4	Shravan	Vad	1	23:37:28	
2	Saturday			4	Shravan	Vad	2	23:14:56	
3	Sunday			4	Shravan	Vad	3	22:52:24	
4	Monday			4	Shravan	Vad	4	22:29:52	
5	Tuesday			4	Shravan	Vad	5	22:07:20	
6	Wednesday			4	Shravan	Vad	6	21:44:48	
7	Thursday			4	Shravan	Vad	7	21:22:17	
8	Friday			4	Shravan	Vad	8	20:59:45	
9	Saturday			4	Shravan	Vad	9	20:37:13	
10	Sunday			4	Shravan	Vad	10	20:14:41	
11	Monday			4	Shravan	Vad	11	19:52:09	
12	Tuesday			4	Shravan	Vad	12	19:29:37	
13	Wednesday			4	Shravan	Vad	13	19:07:05	
14	Thursday			4	Shravan	Vad	14	18:44:33	
15	Friday			4	Shravan	Vad	30	18:22:01	
16	Saturday			4	Shravan	Sud	1	17:59:29	
17	Sunday			4	Shravan	Sud	2	17:36:57	
18	Monday			4	Shravan	Sud	3	17:14:25	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
19	Tuesday			4	Shravan	Sud	4	16:51:54	
20	Wednesday			4	Shravan	Sud	5	16:29:22	
21	Thursday			4	Shravan	Sud	6	16:06:50	
22	Friday			4	Shravan	Sud	7	15:44:18	
23	Saturday			4	Shravan	Sud	8	15:21:46	
24	Sunday			4	Shravan	Sud	9	14:59:14	
25	Monday			4	Shravan	Sud	10	14:36:42	
26	Tuesday			4	Shravan	Sud	11	14:14:10	
27	Wednesday			4	Shravan	Sud	12	13:51:38	
28	Thursday			4	Shravan	Sud	13	13:29:06	
29	Friday			4	Shravan	Sud	14	13:06:34	
30	Saturday			4	Shravan	Sud	15	12:44:02	
31	Sunday			4	Bhadarvo	Vad	1	12:21:31	
32	Monday			4	Bhadarvo	Vad	2	11:58:59	
33	Tuesday			4	Bhadarvo	Vad	3	11:36:27	
34	Wednesday			4	Bhadarvo	Vad	4	11:13:55	
35	Thursday			4	Bhadarvo	Vad	5	10:51:23	
36	Friday			4	Bhadarvo	Vad	6	10:28:51	
37	Saturday			4	Bhadarvo	Vad	7	10:06:19	
38	Sunday			4	Bhadarvo	Vad	8	9:43:47	
39	Monday			4	Bhadarvo	Vad	9	9:21:15	
40	Tuesday			4	Bhadarvo	Vad	10	8:58:43	
41	Wednesday			4	Bhadarvo	Vad	11	8:36:11	
42	Thursday			4	Bhadarvo	Vad	12	8:13:39	
43	Friday			4	Bhadarvo	Vad	13	7:51:07	
44	Saturday			4	Bhadarvo	Vad	14	7:28:36	
45	Sunday			4	Bhadarvo	Vad	30	7:06:04	
46	Monday			4	Bhadarvo	Sud	1	6:43:32	
47	Tuesday			4	Bhadarvo	Sud	2	6:21:00	
48	Wednesday			4	Bhadarvo	Sud	3	5:58:28	
49	Thursday			4	Bhadarvo	Sud	4	5:35:56	
50	Friday			4	Bhadarvo	Sud	5	5:13:24	
51	Saturday			4	Bhadarvo	Sud	6	4:50:52	
52	Sunday			4	Bhadarvo	Sud	7	4:28:20	
53	Monday			4	Bhadarvo	Sud	8	4:05:48	
54	Tuesday			4	Bhadarvo	Sud	9	3:43:16	
55	Wednesday			4	Bhadarvo	Sud	10	3:20:44	
56	Thursday			4	Bhadarvo	Sud	11	2:58:13	
57	Friday			4	Bhadarvo	Sud	12	2:35:41	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
58	Saturday			4	Bhadarvo	Sud	13	2:13:09	
59	Sunday			4	Bhadarvo	Sud	14	1:50:37	
60	Monday			4	Bhadarvo	Sud	15	1:28:05	
61	Tuesday			4	Aaso	Vad	1	1:05:33	
62	Wednesday			4	Aaso	Vad	2	0:43:01	
63	Thursday			4	Aaso	Vad	3	0:20:29	४ का क्षय
64	Friday			4	Aaso	Vad	5	23:35:25	
65	Saturday			4	Aaso	Vad	6	23:12:53	
66	Sunday			4	Aaso	Vad	7	22:50:21	
67	Monday			4	Aaso	Vad	8	22:27:50	
68	Tuesday			4	Aaso	Vad	9	22:05:18	
69	Wednesday			4	Aaso	Vad	10	21:42:46	
70	Thursday			4	Aaso	Vad	11	21:20:14	
71	Friday			4	Aaso	Vad	12	20:57:42	
72	Saturday			4	Aaso	Vad	13	20:35:10	
73	Sunday			4	Aaso	Vad	14	20:12:38	
74	Monday			4	Aaso	Vad	30	19:50:06	
75	Tuesday			4	Aaso	Sud	1	19:27:34	
76	Wednesday			4	Aaso	Sud	2	19:05:02	
77	Thursday			4	Aaso	Sud	3	18:42:30	
78	Friday			4	Aaso	Sud	4	18:19:58	
79	Saturday			4	Aaso	Sud	5	17:57:26	
80	Sunday			4	Aaso	Sud	6	17:34:55	
81	Monday			4	Aaso	Sud	7	17:12:23	
82	Tuesday			4	Aaso	Sud	8	16:49:51	
83	Wednesday			4	Aaso	Sud	9	16:27:19	
84	Thursday			4	Aaso	Sud	10	16:04:47	
85	Friday			4	Aaso	Sud	11	15:42:15	
86	Saturday			4	Aaso	Sud	12	15:19:43	
87	Sunday			4	Aaso	Sud	13	14:57:11	
88	Monday			4	Aaso	Sud	14	14:34:39	
89	Tuesday			4	Aaso	Sud	15	14:12:07	
90	Wednesday			4	Kartak	Vad	1	13:49:35	
91	Thursday			4	Kartak	Vad	2	13:27:03	
92	Friday			4	Kartak	Vad	3	13:04:32	
93	Saturday			4	Kartak	Vad	4	12:42:00	
94	Sunday			4	Kartak	Vad	5	12:19:28	
95	Monday			4	Kartak	Vad	6	11:56:56	
96	Tuesday			4	Kartak	Vad	7	11:34:24	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
97	Wednesday			4	Kartak	Vad	8	11:11:52	
98	Thursday			4	Kartak	Vad	9	10:49:20	
99	Friday			4	Kartak	Vad	10	10:26:48	
100	Saturday			4	Kartak	Vad	11	10:04:16	
101	Sunday			4	Kartak	Vad	12	9:41:44	
102	Monday			4	Kartak	Vad	13	9:19:12	
103	Tuesday			4	Kartak	Vad	14	8:56:40	
104	Wednesday			4	Kartak	Vad	30	8:34:09	
105	Thursday			5	Kartak	Sud	1	8:11:37	
106	Friday			5	Kartak	Sud	2	7:49:05	
107	Saturday			5	Kartak	Sud	3	7:26:33	
108	Sunday			5	Kartak	Sud	4	7:04:01	
109	Monday			5	Kartak	Sud	5	6:41:29	
110	Tuesday			5	Kartak	Sud	6	6:18:57	
111	Wednesday			5	Kartak	Sud	7	5:56:25	
112	Thursday			5	Kartak	Sud	8	5:33:53	
113	Friday			5	Kartak	Sud	9	5:11:21	
114	Saturday			5	Kartak	Sud	10	4:48:49	
115	Sunday			5	Kartak	Sud	11	4:26:17	
116	Monday			5	Kartak	Sud	12	4:03:45	
117	Tuesday			5	Kartak	Sud	13	3:41:14	
118	Wednesday			5	Kartak	Sud	14	3:18:42	
119	Thursday			5	Kartak	Sud	15	2:56:10	
120	Friday			5	Magshar	Vad	1	2:33:38	
121	Saturday			5	Magshar	Vad	2	2:11:06	
122	Sunday			5	Magshar	Vad	3	1:48:34	
123	Monday			5	Magshar	Vad	4	1:26:02	
124	Tuesday			5	Magshar	Vad	5	1:03:30	
125	Wednesday			5	Magshar	Vad	6	0:40:58	
126	Thursday			5	Magshar	Vad	7	0:18:26	८ का क्षय
127	Friday			5	Magshar	Vad	9	23:33:22	
128	Saturday			5	Magshar	Vad	10	23:10:51	
129	Sunday			5	Magshar	Vad	11	22:48:19	
130	Monday			5	Magshar	Vad	12	22:25:47	
131	Tuesday			5	Magshar	Vad	13	22:03:15	
132	Wednesday			5	Magshar	Vad	14	21:40:43	
133	Thursday			5	Magshar	Vad	30	21:18:11	
134	Friday			5	Magshar	Sud	1	20:55:39	
135	Saturday			5	Magshar	Sud	2	20:33:07	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
136	Sunday			5	Magshar	Sud	3	20:10:35	
137	Monday			5	Magshar	Sud	4	19:48:03	
138	Tuesday			5	Magshar	Sud	5	19:25:31	
139	Wednesday			5	Magshar	Sud	6	19:02:59	
140	Thursday			5	Magshar	Sud	7	18:40:28	
141	Friday			5	Magshar	Sud	8	18:17:56	
142	Saturday			5	Magshar	Sud	9	17:55:24	
143	Sunday			5	Magshar	Sud	10	17:32:52	
144	Monday			5	Magshar	Sud	11	17:10:20	
145	Tuesday			5	Magshar	Sud	12	16:47:48	
146	Wednesday			5	Magshar	Sud	13	16:25:16	
147	Thursday			5	Magshar	Sud	14	16:02:44	
148	Friday			5	Magshar	Sud	15	15:40:12	
149	Saturday			5	Posh	Vad	1	15:17:40	
150	Sunday			5	Posh	Vad	2	14:55:08	
151	Monday			5	Posh	Vad	3	14:32:36	
152	Tuesday			5	Posh	Vad	4	14:10:04	
153	Wednesday			5	Posh	Vad	5	13:47:33	
154	Thursday			5	Posh	Vad	6	13:25:01	
155	Friday			5	Posh	Vad	7	13:02:29	
156	Saturday			5	Posh	Vad	8	12:39:57	
157	Sunday			5	Posh	Vad	9	12:17:25	
158	Monday			5	Posh	Vad	10	11:54:53	
159	Tuesday			5	Posh	Vad	11	11:32:21	
160	Wednesday			5	Posh	Vad	12	11:09:49	
161	Thursday			5	Posh	Vad	13	10:47:17	
162	Friday			5	Posh	Vad	14	10:24:45	
163	Saturday			5	Posh	Vad	30	10:02:13	
164	Sunday			5	Posh	Sud	1	9:39:41	
165	Monday			5	Posh	Sud	2	9:17:10	
166	Tuesday			5	Posh	Sud	3	8:54:38	
167	Wednesday			5	Posh	Sud	4	8:32:06	
168	Thursday			5	Posh	Sud	5	8:09:34	
169	Friday			5	Posh	Sud	6	7:47:02	
170	Saturday			5	Posh	Sud	7	7:24:30	
171	Sunday			5	Posh	Sud	8	7:01:58	
172	Monday			5	Posh	Sud	9	6:39:26	
173	Tuesday			5	Posh	Sud	10	6:16:54	
174	Wednesday			5	Posh	Sud	11	5:54:22	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
175	Thursday			5	Posh	Sud	12	5:31:50	
176	Friday			5	Posh	Sud	13	5:09:18	
177	Saturday			5	Posh	Sud	14	4:46:46	
178	Sunday			5	Posh	Sud	15	4:24:15	
179	Monday			5	Mahaa	Vad	1	4:01:43	
180	Tuesday			5	Mahaa	Vad	2	3:39:11	
181	Wednesday			5	Mahaa	Vad	3	3:16:39	
182	Thursday			5	Mahaa	Vad	4	2:54:07	
183	Friday			5	Mahaa	Vad	5	2:31:35	
184	Saturday			5	Mahaa	Vad	6	2:09:03	
185	Sunday			5	Mahaa	Vad	7	1:46:31	
186	Monday			5	Mahaa	Vad	8	1:23:59	
187	Tuesday			5	Mahaa	Vad	9	1:01:27	
188	Wednesday			5	Mahaa	Vad	10	0:38:55	
189	Thursday			5	Mahaa	Vad	11	0:16:23	१२ का क्षय
190	Friday			5	Mahaa	Vad	13	23:31:20	
191	Saturday			5	Mahaa	Vad	14	23:08:48	
192	Sunday			5	Mahaa	Vad	30	22:46:16	
193	Monday			5	Mahaa	Sud	1	22:23:44	
194	Tuesday			5	Mahaa	Sud	2	22:01:12	
195	Wednesday			5	Mahaa	Sud	3	21:38:40	
196	Thursday			5	Mahaa	Sud	4	21:16:08	
197	Friday			5	Mahaa	Sud	5	20:53:36	
198	Saturday			5	Mahaa	Sud	6	20:31:04	
199	Sunday			5	Mahaa	Sud	7	20:08:32	
200	Monday			5	Mahaa	Sud	8	19:46:00	
201	Tuesday			5	Mahaa	Sud	9	19:23:29	
202	Wednesday			5	Mahaa	Sud	10	19:00:57	
203	Thursday			5	Mahaa	Sud	11	18:38:25	
204	Friday			5	Mahaa	Sud	12	18:15:53	
205	Saturday			5	Mahaa	Sud	13	17:53:21	
206	Sunday			5	Mahaa	Sud	14	17:30:49	
207	Monday			5	Mahaa	Sud	15	17:08:17	
208	Tuesday			5	Fagan	Vad	1	16:45:45	
209	Wednesday			5	Fagan	Vad	2	16:23:13	
210	Thursday			5	Fagan	Vad	3	16:00:41	
211	Friday			5	Fagan	Vad	4	15:38:09	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
212	Saturday			5	Fagan	Vad	5	15:15:37	
213	Sunday			5	Fagan	Vad	6	14:53:05	
214	Monday			5	Fagan	Vad	7	14:30:34	
215	Tuesday			5	Fagan	Vad	8	14:08:02	
216	Wednesday			5	Fagan	Vad	9	13:45:30	
217	Thursday			5	Fagan	Vad	10	13:22:58	
218	Friday			5	Fagan	Vad	11	13:00:26	
219	Saturday			5	Fagan	Vad	12	12:37:54	
220	Sunday			5	Fagan	Vad	13	12:15:22	
221	Monday			5	Fagan	Vad	14	11:52:50	
222	Tuesday			5	Fagan	Vad	30	11:30:18	
223	Wednesday			5	Fagan	Sud	1	11:07:46	
224	Thursday			5	Fagan	Sud	2	10:45:14	
225	Friday			5	Fagan	Sud	3	10:22:42	
226	Saturday			5	Fagan	Sud	4	10:00:11	
227	Sunday			5	Fagan	Sud	5	9:37:39	
228	Monday			5	Fagan	Sud	6	9:15:07	
229	Tuesday			5	Fagan	Sud	7	8:52:35	
230	Wednesday			5	Fagan	Sud	8	8:30:03	
231	Thursday			5	Fagan	Sud	9	8:07:31	
232	Friday			5	Fagan	Sud	10	7:44:59	
233	Saturday			5	Fagan	Sud	11	7:22:27	
234	Sunday			5	Fagan	Sud	12	6:59:55	
235	Monday			5	Fagan	Sud	13	6:37:23	
236	Tuesday			5	Fagan	Sud	14	6:14:51	
237	Wednesday			5	Fagan	Sud	15	5:52:19	
238	Thursday			5	Chaitra	Vad	1	5:29:48	
239	Friday			5	Chaitra	Vad	2	5:07:16	
240	Saturday			5	Chaitra	Vad	3	4:44:44	
241	Sunday			5	Chaitra	Vad	4	4:22:12	
242	Monday			5	Chaitra	Vad	5	3:59:40	
243	Tuesday			5	Chaitra	Vad	6	3:37:08	
244	Wednesday			5	Chaitra	Vad	7	3:14:36	
245	Thursday			5	Chaitra	Vad	8	2:52:04	
246	Friday			5	Chaitra	Vad	9	2:29:32	
247	Saturday			5	Chaitra	Vad	10	2:07:00	
248	Sunday			5	Chaitra	Vad	11	1:44:28	
249	Monday			5	Chaitra	Vad	12	1:21:56	
250	Tuesday			5	Chaitra	Vad	13	0:59:24	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
251	Wednesday			5	Chaitra	Vad	14	0:36:53	
252	Thursday			5	Chaitra	Vad	30	0:14:21	१ का क्षय
253	Friday			5	Chaitra	Sud	2	23:29:17	
254	Saturday			5	Chaitra	Sud	3	23:06:45	
255	Sunday			5	Chaitra	Sud	4	22:44:13	
256	Monday			5	Chaitra	Sud	5	22:21:41	
257	Tuesday			5	Chaitra	Sud	6	21:59:09	
258	Wednesday			5	Chaitra	Sud	7	21:36:37	
259	Thursday			5	Chaitra	Sud	8	21:14:05	
260	Friday			5	Chaitra	Sud	9	20:51:33	
261	Saturday			5	Chaitra	Sud	10	20:29:01	
262	Sunday			5	Chaitra	Sud	11	20:06:30	
263	Monday			5	Chaitra	Sud	12	19:43:58	
264	Tuesday			5	Chaitra	Sud	13	19:21:26	
265	Wednesday			5	Chaitra	Sud	14	18:58:54	
266	Thursday			5	Chaitra	Sud	15	18:36:22	
267	Friday			5	Vaishakh	Vad	1	18:13:50	
268	Saturday			5	Vaishakh	Vad	2	17:51:18	
269	Sunday			5	Vaishakh	Vad	3	17:28:46	
270	Monday			5	Vaishakh	Vad	4	17:06:14	
271	Tuesday			5	Vaishakh	Vad	5	16:43:42	
272	Wednesday			5	Vaishakh	Vad	6	16:21:10	
273	Thursday			5	Vaishakh	Vad	7	15:58:38	
274	Friday			5	Vaishakh	Vad	8	15:36:07	
275	Saturday			5	Vaishakh	Vad	9	15:13:35	
276	Sunday			5	Vaishakh	Vad	10	14:51:03	
277	Monday			5	Vaishakh	Vad	11	14:28:31	
278	Tuesday			5	Vaishakh	Vad	12	14:05:59	
279	Wednesday			5	Vaishakh	Vad	13	13:43:27	
280	Thursday			5	Vaishakh	Vad	14	13:20:55	
281	Friday			5	Vaishakh	Vad	30	12:58:23	
282	Saturday			5	Vaishakh	Sud	1	12:35:51	
283	Sunday			5	Vaishakh	Sud	2	12:13:19	
284	Monday			5	Vaishakh	Sud	3	11:50:47	
285	Tuesday			5	Vaishakh	Sud	4	11:28:15	
286	Wednesday			5	Vaishakh	Sud	5	11:05:43	
287	Thursday			5	Vaishakh	Sud	6	10:43:12	
288	Friday			5	Vaishakh	Sud	7	10:20:40	
289	Saturday			5	Vaishakh	Sud	8	9:58:08	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
290	Sunday			5	Vaishakh	Sud	9	9:35:36	
291	Monday			5	Vaishakh	Sud	10	9:13:04	
292	Tuesday			5	Vaishakh	Sud	11	8:50:32	
293	Wednesday			5	Vaishakh	Sud	12	8:28:00	
294	Thursday			5	Vaishakh	Sud	13	8:05:28	
295	Friday			5	Vaishakh	Sud	14	7:42:56	
296	Saturday			5	Vaishakh	Sud	15	7:20:24	
297	Sunday			5	Jeth	Vad	1	6:57:52	
298	Monday			5	Jeth	Vad	2	6:35:20	
299	Tuesday			5	Jeth	Vad	3	6:12:49	
300	Wednesday			5	Jeth	Vad	4	5:50:17	
301	Thursday			5	Jeth	Vad	5	5:27:45	
302	Friday			5	Jeth	Vad	6	5:05:13	
303	Saturday			5	Jeth	Vad	7	4:42:41	
304	Sunday			5	Jeth	Vad	8	4:20:09	
305	Monday			5	Jeth	Vad	9	3:57:37	
306	Tuesday			5	Jeth	Vad	10	3:35:05	
307	Wednesday			5	Jeth	Vad	11	3:12:33	
308	Thursday			5	Jeth	Vad	12	2:50:01	
309	Friday			5	Jeth	Vad	13	2:27:29	
310	Saturday			5	Jeth	Vad	14	2:04:57	
311	Sunday			5	Jeth	Vad	30	1:42:26	
312	Monday			5	Jeth	Sud	1	1:19:54	
313	Tuesday			5	Jeth	Sud	2	0:57:22	
314	Wednesday			5	Jeth	Sud	3	0:34:50	
315	Thursday			5	Jeth	Sud	4	0:12:18	५ का क्षय
316	Friday			5	Jeth	Sud	6	23:27:14	
317	Saturday			5	Jeth	Sud	7	23:04:42	
318	Sunday			5	Jeth	Sud	8	22:42:10	
319	Monday			5	Jeth	Sud	9	22:19:38	
320	Tuesday			5	Jeth	Sud	10	21:57:06	
321	Wednesday			5	Jeth	Sud	11	21:34:34	
322	Thursday			5	Jeth	Sud	12	21:12:02	
323	Friday			5	Jeth	Sud	13	20:49:31	
324	Saturday			5	Jeth	Sud	14	20:26:59	
325	Sunday			5	Jeth	Sud	15	20:04:27	
326	Monday			5	Ashadh	Vad	1	19:41:55	
327	Tuesday			5	Ashadh	Vad	2	19:19:23	
328	Wednesday			5	Ashadh	Vad	3	18:56:51	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
329	Thursday			5	Ashadh	Vad	4	18:34:19	
330	Friday			5	Ashadh	Vad	5	18:11:47	
331	Saturday			5	Ashadh	Vad	6	17:49:15	
332	Sunday			5	Ashadh	Vad	7	17:26:43	
333	Monday			5	Ashadh	Vad	8	17:04:11	
334	Tuesday			5	Ashadh	Vad	9	16:41:39	
335	Wednesday			5	Ashadh	Vad	10	16:19:08	
336	Thursday			5	Ashadh	Vad	11	15:56:36	
337	Friday			5	Ashadh	Vad	12	15:34:04	
338	Saturday			5	Ashadh	Vad	13	15:11:32	
339	Sunday			5	Ashadh	Vad	14	14:49:00	
340	Monday			5	Ashadh	Vad	30	14:26:28	
341	Tuesday			5	Ashadh	Sud	1	14:03:56	
342	Wednesday			5	Ashadh	Sud	2	13:41:24	
343	Thursday			5	Ashadh	Sud	3	13:18:52	
344	Friday			5	Ashadh	Sud	4	12:56:20	
345	Saturday			5	Ashadh	Sud	5	12:33:48	
346	Sunday			5	Ashadh	Sud	6	12:11:16	
347	Monday			5	Ashadh	Sud	7	11:48:45	
348	Tuesday			5	Ashadh	Sud	8	11:26:13	
349	Wednesday			5	Ashadh	Sud	9	11:03:41	
350	Thursday			5	Ashadh	Sud	10	10:41:09	
351	Friday			5	Ashadh	Sud	11	10:18:37	
352	Saturday			5	Ashadh	Sud	12	9:56:05	
353	Sunday			5	Ashadh	Sud	13	9:33:33	
354	Monday			5	Ashadh	Sud	14	9:11:01	
355	Tuesday			5	Ashadh	Sud	15	8:48:29	
356	Wednesday	1	2	5	Shravan	Vad	1	8:25:57	
357	Thursday			5	Shravan	Vad	2	8:03:25	
358	Friday			5	Shravan	Vad	3	7:40:53	
359	Saturday			5	Shravan	Vad	4	7:18:21	
360	Sunday			5	Shravan	Vad	5	6:55:50	
361	Monday			5	Shravan	Vad	6	6:33:18	
362	Tuesday			5	Shravan	Vad	7	6:10:46	
363	Wednesday			5	Shravan	Vad	8	5:48:14	
364	Thursday			5	Shravan	Vad	9	5:25:42	
365	Friday			5	Shravan	Vad	10	5:03:10	
366	Saturday			5	Shravan	Vad	11	4:40:38	

## परिशिष्ट-३

समाधान – (३) के अनुसार वाली पद्धति का अंदाजित पंचांग ।  
वेदांग ज्योतिष के काल की टाणांग सूत्र के पाठ के साथ मेल  
खाती ५९वें कर्म दिवस को ६०वीं चन्द्र तिथि (पूनम / अमावस  
पर्व) का आयोजन और आराधना दिखाती पद्धति ।

नोट : १) सूर्योदय का समय जोड़ने से वास्तविक तिथि समाप्ति का समय मिलेगा ।

२) तिथि का माप ६१/६२ अहोरात्रि = २३ घ. ३६ मि. दिया है ।

३) क्षय तिथि / अवम रात्रि का गणित ६१/६२ के नियम से नहीं चलता, किन्तु अहोरात्रि के प्रथम पाद में पर्व समाप्त हो, तो पूर्व की तिथि का क्षय करके पूर्व के दिवस को पर्व मानना और दूसरे पाद में पर्व समाप्त हो तो उसी दिन पर्व मानने के नियम से चलता है ।

४) यहाँ याद रहे, कि पर्व = पूनम और अमावस ।

### PARISHISTH 3 - Tithi Duration: 23:36:46:452

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
1	Friday	1	1	4	Shravan	Vad	1	23:36:46	
2	Saturday			4	Shravan	Vad	2	23:13:33	
3	Sunday			4	Shravan	Vad	3	22:50:19	
4	Monday			4	Shravan	Vad	4	22:27:06	
5	Tuesday			4	Shravan	Vad	5	22:03:52	
6	Wednesday			4	Shravan	Vad	6	21:40:39	
7	Thursday			4	Shravan	Vad	7	21:17:25	
8	Friday			4	Shravan	Vad	8	20:54:12	
9	Saturday			4	Shravan	Vad	9	20:30:58	
10	Sunday			4	Shravan	Vad	10	20:07:45	
11	Monday			4	Shravan	Vad	11	19:44:31	
12	Tuesday			4	Shravan	Vad	12	19:21:17	
13	Wednesday			4	Shravan	Vad	13	18:58:04	
14	Thursday			4	Shravan	Vad	14	18:34:50	
15	Friday			4	Shravan	Vad	30	18:11:37	
16	Saturday			4	Shravan	Sud	1	17:48:23	
17	Sunday			4	Shravan	Sud	2	17:25:10	
18	Monday			4	Shravan	Sud	3	17:01:56	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
19	Tuesday			4	Shravan	Sud	4	16:38:43	
20	Wednesday			4	Shravan	Sud	5	16:15:29	
21	Thursday			4	Shravan	Sud	6	15:52:15	
22	Friday			4	Shravan	Sud	7	15:29:02	
23	Saturday			4	Shravan	Sud	8	15:05:48	
24	Sunday			4	Shravan	Sud	9	14:42:35	
25	Monday			4	Shravan	Sud	10	14:19:21	
26	Tuesday			4	Shravan	Sud	11	13:56:08	
27	Wednesday			4	Shravan	Sud	12	13:32:54	
28	Thursday			4	Shravan	Sud	13	13:09:41	
29	Friday			4	Shravan	Sud	14	12:46:27	
30	Saturday			4	Shravan	Sud	15	12:23:14	
31	Sunday			4	Bhadarvo	Vad	1	12:00:00	
32	Monday			4	Bhadarvo	Vad	2	11:36:46	
33	Tuesday			4	Bhadarvo	Vad	3	11:13:33	
34	Wednesday			4	Bhadarvo	Vad	4	10:50:19	
35	Thursday			4	Bhadarvo	Vad	5	10:27:06	
36	Friday			4	Bhadarvo	Vad	6	10:03:52	
37	Saturday			4	Bhadarvo	Vad	7	9:40:39	
38	Sunday			4	Bhadarvo	Vad	8	9:17:25	
39	Monday			4	Bhadarvo	Vad	9	8:54:12	
40	Tuesday			4	Bhadarvo	Vad	10	8:30:58	
41	Wednesday			4	Bhadarvo	Vad	11	8:07:45	
42	Thursday			4	Bhadarvo	Vad	12	7:44:31	
43	Friday			4	Bhadarvo	Vad	13	7:21:17	
44	Saturday			4	Bhadarvo	Vad	14	6:58:04	
45	Sunday			4	Bhadarvo	Vad	30	6:34:50	
46	Monday			4	Bhadarvo	Sud	1	6:11:37	
47	Tuesday			4	Bhadarvo	Sud	2	5:48:23	
48	Wednesday			4	Bhadarvo	Sud	3	5:25:10	
49	Thursday			4	Bhadarvo	Sud	4	5:01:56	
50	Friday			4	Bhadarvo	Sud	5	4:38:43	
51	Saturday			4	Bhadarvo	Sud	6	4:15:29	
52	Sunday			4	Bhadarvo	Sud	7	3:52:16	
53	Monday			4	Bhadarvo	Sud	8	3:29:02	
54	Tuesday			4	Bhadarvo	Sud	9	3:05:48	
55	Wednesday			4	Bhadarvo	Sud	10	2:42:35	
56	Thursday			4	Bhadarvo	Sud	11	2:19:21	
57	Friday			4	Bhadarvo	Sud	12	1:56:08	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
58	Saturday			4	Bhadarvo	Sud	13	1:32:54	
59	Sunday			4	Bhadarvo	Sud	15	1:09:41	१४ का क्षय करके पर्व को अखंड मानना—आराधना
60	Monday			4	Aaso	Vad	1	0:46:27	प्रथम पादमें पर्व समाप्त होता है इसलिए अगले दिन पर्व मानना तथा आज एकम माननी ।
61	Tuesday			4	Aaso	Vad	2	0:23:14	
62	Wednesday			4	Aaso	Vad	3	23:36:46	
63	Thursday			4	Aaso	Vad	4	23:13:33	
64	Friday			4	Aaso	Vad	5	22:50:19	
65	Saturday			4	Aaso	Vad	6	22:27:06	
66	Sunday			4	Aaso	Vad	7	22:03:52	
67	Monday			4	Aaso	Vad	8	21:40:39	
68	Tuesday			4	Aaso	Vad	9	21:17:25	
69	Wednesday			4	Aaso	Vad	10	20:54:12	
70	Thursday			4	Aaso	Vad	11	20:30:58	
71	Friday			4	Aaso	Vad	12	20:07:45	
72	Saturday			4	Aaso	Vad	13	19:44:31	
73	Sunday			4	Aaso	Vad	14	19:21:17	
74	Monday			4	Aaso	Vad	30	18:58:04	
75	Tuesday			4	Aaso	Sud	1	18:34:50	
76	Wednesday			4	Aaso	Sud	2	18:11:37	
77	Thursday			4	Aaso	Sud	3	17:48:23	
78	Friday			4	Aaso	Sud	4	17:25:10	
79	Saturday			4	Aaso	Sud	5	17:01:56	
80	Sunday			4	Aaso	Sud	6	16:38:43	
81	Monday			4	Aaso	Sud	7	16:15:29	
82	Tuesday			4	Aaso	Sud	8	15:52:16	
83	Wednesday			4	Aaso	Sud	9	15:29:02	
84	Thursday			4	Aaso	Sud	10	15:05:48	
85	Friday			4	Aaso	Sud	11	14:42:35	
86	Saturday			4	Aaso	Sud	12	14:19:21	
87	Sunday			4	Aaso	Sud	13	13:56:08	
88	Monday			4	Aaso	Sud	14	13:32:54	
89	Tuesday			4	Aaso	Sud	15	13:09:41	
90	Wednesday			4	Kartak	Vad	1	12:46:27	
91	Thursday			4	Kartak	Vad	2	12:23:14	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
92	Friday			4	Kartak	Vad	3	12:00:00	
93	Saturday			4	Kartak	Vad	4	11:36:46	
94	Sunday			4	Kartak	Vad	5	11:13:33	
95	Monday			4	Kartak	Vad	6	10:50:19	
96	Tuesday			4	Kartak	Vad	7	10:27:06	
97	Wednesday			4	Kartak	Vad	8	10:03:52	
98	Thursday			4	Kartak	Vad	9	9:40:39	
99	Friday			4	Kartak	Vad	10	9:17:25	
100	Saturday			4	Kartak	Vad	11	8:54:12	
101	Sunday			4	Kartak	Vad	12	8:30:58	
102	Monday			4	Kartak	Vad	13	8:07:45	
103	Tuesday			4	Kartak	Vad	14	7:44:31	
104	Wednesday			4	Kartak	Vad	30	7:21:17	
105	Thursday			5	Kartak	Sud	1	6:58:04	
106	Friday			5	Kartak	Sud	2	6:34:50	
107	Saturday			5	Kartak	Sud	3	6:11:37	
108	Sunday			5	Kartak	Sud	4	5:48:23	
109	Monday			5	Kartak	Sud	5	5:25:10	
110	Tuesday			5	Kartak	Sud	6	5:01:56	
111	Wednesday			5	Kartak	Sud	7	4:38:43	
112	Thursday			5	Kartak	Sud	8	4:15:29	
113	Friday			5	Kartak	Sud	9	3:52:16	
114	Saturday			5	Kartak	Sud	10	3:29:02	
115	Sunday			5	Kartak	Sud	11	3:05:48	
116	Monday			5	Kartak	Sud	12	2:42:35	
117	Tuesday			5	Kartak	Sud	13	2:19:21	
118	Wednesday			5	Kartak	Sud	15	1:56:08	१४ का क्षय करके पर्व को अखंड मानना—आराधना
119	Thursday			5	Magshar	Vad	1	1:32:54	प्रथम पादमें पर्व समाप्त होता है इसलिए अगले दिन पर्व मानना तथा आज एकम माननी ।
120	Friday			5	Magshar	Vad	2	1:09:41	
121	Saturday			5	Magshar	Vad	3	0:46:27	
122	Sunday			5	Magshar	Vad	4	0:23:14	
123	Monday			5	Magshar	Vad	5	23:36:46	
124	Tuesday			5	Magshar	Vad	6	23:13:33	
125	Wednesday			5	Magshar	Vad	7	22:50:19	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
126	Thursday			5	Magshar	Vad	8	22:27:06	
127	Friday			5	Magshar	Vad	9	22:03:52	
128	Saturday			5	Magshar	Vad	10	21:40:39	
129	Sunday			5	Magshar	Vad	11	21:17:25	
130	Monday			5	Magshar	Vad	12	20:54:12	
131	Tuesday			5	Magshar	Vad	13	20:30:58	
132	Wednesday			5	Magshar	Vad	14	20:07:45	
133	Thursday			5	Magshar	Vad	30	19:44:31	
134	Friday			5	Magshar	Sud	1	19:21:17	
135	Saturday			5	Magshar	Sud	2	18:58:04	
136	Sunday			5	Magshar	Sud	3	18:34:50	
137	Monday			5	Magshar	Sud	4	18:11:37	
138	Tuesday			5	Magshar	Sud	5	17:48:23	
139	Wednesday			5	Magshar	Sud	6	17:25:10	
140	Thursday			5	Magshar	Sud	7	17:01:56	
141	Friday			5	Magshar	Sud	8	16:38:43	
142	Saturday			5	Magshar	Sud	9	16:15:29	
143	Sunday			5	Magshar	Sud	10	15:52:16	
144	Monday			5	Magshar	Sud	11	15:29:02	
145	Tuesday			5	Magshar	Sud	12	15:05:48	
146	Wednesday			5	Magshar	Sud	13	14:42:35	
147	Thursday			5	Magshar	Sud	14	14:19:21	
148	Friday			5	Magshar	Sud	15	13:56:08	
149	Saturday			5	Posh	Vad	1	13:32:54	
150	Sunday			5	Posh	Vad	2	13:09:41	
151	Monday			5	Posh	Vad	3	12:46:27	
152	Tuesday			5	Posh	Vad	4	12:23:14	
153	Wednesday			5	Posh	Vad	5	12:00:00	
154	Thursday			5	Posh	Vad	6	11:36:47	
155	Friday			5	Posh	Vad	7	11:13:33	
156	Saturday			5	Posh	Vad	8	10:50:19	
157	Sunday			5	Posh	Vad	9	10:27:06	
158	Monday			5	Posh	Vad	10	10:03:52	
159	Tuesday			5	Posh	Vad	11	9:40:39	
160	Wednesday			5	Posh	Vad	12	9:17:25	
161	Thursday			5	Posh	Vad	13	8:54:12	
162	Friday			5	Posh	Vad	14	8:30:58	
163	Saturday			5	Posh	Vad	30	8:07:45	
164	Sunday			5	Posh	Sud	1	7:44:31	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
165	Monday			5	Posh	Sud	2	7:21:17	
166	Tuesday			5	Posh	Sud	3	6:58:04	
167	Wednesday			5	Posh	Sud	4	6:34:50	
168	Thursday			5	Posh	Sud	5	6:11:37	
169	Friday			5	Posh	Sud	6	5:48:23	
170	Saturday			5	Posh	Sud	7	5:25:10	
171	Sunday			5	Posh	Sud	8	5:01:56	
172	Monday			5	Posh	Sud	9	4:38:43	
173	Tuesday			5	Posh	Sud	10	4:15:29	
174	Wednesday			5	Posh	Sud	11	3:52:16	
175	Thursday			5	Posh	Sud	12	3:29:02	
176	Friday			5	Posh	Sud	13	3:05:48	
177	Saturday			5	Posh	Sud	15	2:42:35	१४ का क्षय करके पर्व को अखंड मानना—आराधना
178	Sunday			5	Mahaa	Vad	1	2:19:21	प्रथम पादमें पर्व समाप्त होता है इसलिए अगले दिन पर्व मानना तथा आज एकम माननी ।
179	Monday			5	Mahaa	Vad	2	1:56:08	
180	Tuesday			5	Mahaa	Vad	3	1:32:54	
181	Wednesday			5	Mahaa	Vad	4	1:09:41	
182	Thursday			5	Mahaa	Vad	5	0:46:27	
183	Friday			5	Mahaa	Vad	6	0:23:14	
184	Saturday			5	Mahaa	Vad	7	23:36:47	
185	Sunday			5	Mahaa	Vad	8	23:13:33	
186	Monday			5	Mahaa	Vad	9	22:50:19	
187	Tuesday			5	Mahaa	Vad	10	22:27:06	
188	Wednesday			5	Mahaa	Vad	11	22:03:52	
189	Thursday			5	Mahaa	Vad	12	21:40:39	
190	Friday			5	Mahaa	Vad	13	21:17:25	
191	Saturday			5	Mahaa	Vad	14	20:54:12	
192	Sunday			5	Mahaa	Vad	30	20:30:58	
193	Monday			5	Mahaa	Sud	1	20:07:45	
194	Tuesday			5	Mahaa	Sud	2	19:44:31	
195	Wednesday			5	Mahaa	Sud	3	19:21:17	
196	Thursday			5	Mahaa	Sud	4	18:58:04	
197	Friday			5	Mahaa	Sud	5	18:34:50	
198	Saturday			5	Mahaa	Sud	6	18:11:37	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
199	Sunday			5	Mahaa	Sud	7	17:48:23	
200	Monday			5	Mahaa	Sud	8	17:25:10	
201	Tuesday			5	Mahaa	Sud	9	17:01:56	
202	Wednesday			5	Mahaa	Sud	10	16:38:43	
203	Thursday			5	Mahaa	Sud	11	16:15:29	
204	Friday			5	Mahaa	Sud	12	15:52:16	
205	Saturday			5	Mahaa	Sud	13	15:29:02	
206	Sunday			5	Mahaa	Sud	14	15:05:48	
207	Monday			5	Mahaa	Sud	15	14:42:35	
208	Tuesday			5	Fagan	Vad	1	14:19:21	
209	Wednesday			5	Fagan	Vad	2	13:56:08	
210	Thursday			5	Fagan	Vad	3	13:32:54	
211	Friday			5	Fagan	Vad	4	13:09:41	
212	Saturday			5	Fagan	Vad	5	12:46:27	
213	Sunday			5	Fagan	Vad	6	12:23:14	
214	Monday			5	Fagan	Vad	7	12:00:00	
215	Tuesday			5	Fagan	Vad	8	11:36:47	
216	Wednesday			5	Fagan	Vad	9	11:13:33	
217	Thursday			5	Fagan	Vad	10	10:50:19	
218	Friday			5	Fagan	Vad	11	10:27:06	
219	Saturday			5	Fagan	Vad	12	10:03:52	
220	Sunday			5	Fagan	Vad	13	9:40:39	
221	Monday			5	Fagan	Vad	14	9:17:25	
222	Tuesday			5	Fagan	Vad	30	8:54:12	
223	Wednesday			5	Fagan	Sud	1	8:30:58	
224	Thursday			5	Fagan	Sud	2	8:07:45	
225	Friday			5	Fagan	Sud	3	7:44:31	
226	Saturday			5	Fagan	Sud	4	7:21:18	
227	Sunday			5	Fagan	Sud	5	6:58:04	
228	Monday			5	Fagan	Sud	6	6:34:50	
229	Tuesday			5	Fagan	Sud	7	6:11:37	
230	Wednesday			5	Fagan	Sud	8	5:48:23	
231	Thursday			5	Fagan	Sud	9	5:25:10	
232	Friday			5	Fagan	Sud	10	5:01:56	
233	Saturday			5	Fagan	Sud	11	4:38:43	
234	Sunday			5	Fagan	Sud	12	4:15:29	
235	Monday			5	Fagan	Sud	13	3:52:16	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
236	Tuesday			5	Fagan	Sud	15	3:29:02	१४ का क्षय करके पर्व को अखंड मानना—आराधना
237	Wednesday			5	Chaitra	Vad	1	3:05:48	प्रथम पादमें पर्व समाप्त होता है इसलिए अगले दिन पर्व मानना तथा आज एकम माननी ।
238	Thursday			5	Chaitra	Vad	2	2:42:35	
239	Friday			5	Chaitra	Vad	3	2:19:21	
240	Saturday			5	Chaitra	Vad	4	1:56:08	
241	Sunday			5	Chaitra	Vad	5	1:32:54	
242	Monday			5	Chaitra	Vad	6	1:09:41	
243	Tuesday			5	Chaitra	Vad	7	0:46:27	
244	Wednesday			5	Chaitra	Vad	8	0:23:14	
245	Thursday			5	Chaitra	Vad	9	23:36:47	
246	Friday			5	Chaitra	Vad	10	23:13:33	
247	Saturday			5	Chaitra	Vad	11	22:50:19	
248	Sunday			5	Chaitra	Vad	12	22:27:06	
249	Monday			5	Chaitra	Vad	13	22:03:52	
250	Tuesday			5	Chaitra	Vad	14	21:40:39	
251	Wednesday			5	Chaitra	Vad	30	21:17:25	
252	Thursday			5	Chaitra	Sud	1	20:54:12	
253	Friday			5	Chaitra	Sud	2	20:30:58	
254	Saturday			5	Chaitra	Sud	3	20:07:45	
255	Sunday			5	Chaitra	Sud	4	19:44:31	
256	Monday			5	Chaitra	Sud	5	19:21:18	
257	Tuesday			5	Chaitra	Sud	6	18:58:04	
258	Wednesday			5	Chaitra	Sud	7	18:34:50	
259	Thursday			5	Chaitra	Sud	8	18:11:37	
260	Friday			5	Chaitra	Sud	9	17:48:23	
261	Saturday			5	Chaitra	Sud	10	17:25:10	
262	Sunday			5	Chaitra	Sud	11	17:01:56	
263	Monday			5	Chaitra	Sud	12	16:38:43	
264	Tuesday			5	Chaitra	Sud	13	16:15:29	
265	Wednesday			5	Chaitra	Sud	14	15:52:16	
266	Thursday			5	Chaitra	Sud	15	15:29:02	
267	Friday			5	Vaishakh	Vad	1	15:05:48	
268	Saturday			5	Vaishakh	Vad	2	14:42:35	
269	Sunday			5	Vaishakh	Vad	3	14:19:21	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
270	Monday			5	Vaishakh	Vad	4	13:56:08	
271	Tuesday			5	Vaishakh	Vad	5	13:32:54	
272	Wednesday			5	Vaishakh	Vad	6	13:09:41	
273	Thursday			5	Vaishakh	Vad	7	12:46:27	
274	Friday			5	Vaishakh	Vad	8	12:23:14	
275	Saturday			5	Vaishakh	Vad	9	12:00:00	
276	Sunday			5	Vaishakh	Vad	10	11:36:47	
277	Monday			5	Vaishakh	Vad	11	11:13:33	
278	Tuesday			5	Vaishakh	Vad	12	10:50:19	
279	Wednesday			5	Vaishakh	Vad	13	10:27:06	
280	Thursday			5	Vaishakh	Vad	14	10:03:52	
281	Friday			5	Vaishakh	Vad	30	9:40:39	
282	Saturday			5	Vaishakh	Sud	1	9:17:25	
283	Sunday			5	Vaishakh	Sud	2	8:54:12	
284	Monday			5	Vaishakh	Sud	3	8:30:58	
285	Tuesday			5	Vaishakh	Sud	4	8:07:45	
286	Wednesday			5	Vaishakh	Sud	5	7:44:31	
287	Thursday			5	Vaishakh	Sud	6	7:21:18	
288	Friday			5	Vaishakh	Sud	7	6:58:04	
289	Saturday			5	Vaishakh	Sud	8	6:34:50	
290	Sunday			5	Vaishakh	Sud	9	6:11:37	
291	Monday			5	Vaishakh	Sud	10	5:48:23	
292	Tuesday			5	Vaishakh	Sud	11	5:25:10	
293	Wednesday			5	Vaishakh	Sud	12	5:01:56	
294	Thursday			5	Vaishakh	Sud	13	4:38:43	१४ का क्षय करके पर्व को अखंड मानना-आराधना
295	Friday			5	Vaishakh	Sud	15	4:15:29	प्रथम पादमें पर्व समाप्त होता है इसलिए अगले दिन पर्व मानना तथा आज एकम माननी ।
296	Saturday			5	Jeth	Vad	1	3:52:16	
297	Sunday			5	Jeth	Vad	2	3:29:02	
298	Monday			5	Jeth	Vad	3	3:05:49	
299	Tuesday			5	Jeth	Vad	4	2:42:35	
300	Wednesday			5	Jeth	Vad	5	2:19:21	
301	Thursday			5	Jeth	Vad	6	1:56:08	
302	Friday			5	Jeth	Vad	7	1:32:54	
303	Saturday			5	Jeth	Vad	8	1:09:41	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
304	Sunday			5	Jeth	Vad	9	0:46:27	
305	Monday			5	Jeth	Vad	10	0:23:14	
306	Tuesday			5	Jeth	Vad	11	23:36:47	
307	Wednesday			5	Jeth	Vad	12	23:13:33	
308	Thursday			5	Jeth	Vad	13	22:50:19	
309	Friday			5	Jeth	Vad	14	22:27:06	
310	Saturday			5	Jeth	Vad	30	22:03:52	
311	Sunday			5	Jeth	Sud	1	21:40:39	
312	Monday			5	Jeth	Sud	2	21:17:25	
313	Tuesday			5	Jeth	Sud	3	20:54:12	
314	Wednesday			5	Jeth	Sud	4	20:30:58	
315	Thursday			5	Jeth	Sud	5	20:07:45	
316	Friday			5	Jeth	Sud	6	19:44:31	
317	Saturday			5	Jeth	Sud	7	19:21:18	
318	Sunday			5	Jeth	Sud	8	18:58:04	
319	Monday			5	Jeth	Sud	9	18:34:50	
320	Tuesday			5	Jeth	Sud	10	18:11:37	
321	Wednesday			5	Jeth	Sud	11	17:48:23	
322	Thursday			5	Jeth	Sud	12	17:25:10	
323	Friday			5	Jeth	Sud	13	17:01:56	
324	Saturday			5	Jeth	Sud	14	16:38:43	
325	Sunday			5	Jeth	Sud	15	16:15:29	
326	Monday			5	Ashadh	Vad	1	15:52:16	
327	Tuesday			5	Ashadh	Vad	2	15:29:02	
328	Wednesday			5	Ashadh	Vad	3	15:05:49	
329	Thursday			5	Ashadh	Vad	4	14:42:35	
330	Friday			5	Ashadh	Vad	5	14:19:21	
331	Saturday			5	Ashadh	Vad	6	13:56:08	
332	Sunday			5	Ashadh	Vad	7	13:32:54	
333	Monday			5	Ashadh	Vad	8	13:09:41	
334	Tuesday			5	Ashadh	Vad	9	12:46:27	
335	Wednesday			5	Ashadh	Vad	10	12:23:14	
336	Thursday			5	Ashadh	Vad	11	12:00:00	
337	Friday			5	Ashadh	Vad	12	11:36:47	
338	Saturday			5	Ashadh	Vad	13	11:13:33	
339	Sunday			5	Ashadh	Vad	14	10:50:19	
340	Monday			5	Ashadh	Vad	30	10:27:06	
341	Tuesday			5	Ashadh	Sud	1	10:03:52	
342	Wednesday			5	Ashadh	Sud	2	9:40:39	

Karma Day	Week Day	Yug	Yug Yr.	Veer Sam.	Month	Paksh	Tithi	Sunrise Time + EndTime	Remarks
343	Thursday			5	Ashadh	Sud	3	9:17:25	
344	Friday			5	Ashadh	Sud	4	8:54:12	
345	Saturday			5	Ashadh	Sud	5	8:30:58	
346	Sunday			5	Ashadh	Sud	6	8:07:45	
347	Monday			5	Ashadh	Sud	7	7:44:31	
348	Tuesday			5	Ashadh	Sud	8	7:21:18	
349	Wednesday			5	Ashadh	Sud	9	6:58:04	
350	Thursday			5	Ashadh	Sud	10	6:34:50	
351	Friday			5	Ashadh	Sud	11	6:11:37	
352	Saturday			5	Ashadh	Sud	12	5:48:23	
353	Sunday			5	Ashadh	Sud	13	5:25:10	
354	Monday			5	Ashadh	Sud	15	5:01:56	१४ का क्षय करके पर्व को अखंड मानना-आराधना
355	Tuesday			5	Shravan	Vad	1	4:38:43	प्रथम पादमें पर्व समाप्त होता है इसलिए अगले दिन पर्व मानना तथा आज एकम माननी ।
356	Wednesday	1	2	5	Shravan	Vad	2	4:15:29	
357	Thursday			5	Shravan	Vad	3	3:52:16	
358	Friday			5	Shravan	Vad	4	3:29:02	
359	Saturday			5	Shravan	Vad	5	3:05:49	
360	Sunday			5	Shravan	Vad	6	2:42:35	
361	Monday			5	Shravan	Vad	7	2:19:21	
362	Tuesday			5	Shravan	Vad	8	1:56:08	
363	Wednesday			5	Shravan	Vad	9	1:32:54	
364	Thursday			5	Shravan	Vad	10	1:09:41	
365	Friday			5	Shravan	Vad	11	0:46:27	
366	Saturday			5	Shravan	Vad	12	0:23:14	

## परिशिष्ट-४

### अधिक मास का गणित (लच्छवीयों के शिलालेख के अनुसार)

**नोट :** १) मात्र पोष और आषाढ़ ही अधिक मास आएँगे, किन्तु कभी २.५ वर्ष में तो कभी ३ वर्ष में अधिक मास आएगा।

२) सूर्य का उत्तरायण या दक्षिणायन यदि सुदान्त पद्धति के पोष या आषाढ़ की सुदी दशमी से पहले हो तो ३ वर्ष में अधिक मास लें, किन्तु यदि सुदी दशमी या उसके बाद हो तो उसे ही (यानि २.५ वर्ष में ही अधिक मास आता है) वदान्त मास से गणना हो तो वदी दशम को लेकर यही नियम चलेगा।)

३) सूर्य दक्षिणायन—उत्तरायण के प्रारंभ के समयमें सूर्योदय समय जोड़नेका।

#### PARISHISTH 4

No.	Sun Ayan starting	Veer Sam.	Month	Pak-sh	Tithi	Remarks
1	सूर्य दक्षिणायन प्रारंभ-00:00:00.0000000	4	Ashadh	Sud	15	
2	सूर्य उत्तरायण प्रारंभ- 14:54:22.6080000	5	Mahaa	Vad	5	
3	सूर्य दक्षिणायन प्रारंभ-05:48:45.2160000	5	Shravan	Vad	11	
4	सूर्य उत्तरायण प्रारंभ- 20:43:07.8240000	6	Mahaa	Sud	1	
5	सूर्य दक्षिणायन प्रारंभ-11:37:30.4320000	6	Shravan	Sud	7	
6	सूर्य उत्तरायण प्रारंभ- 02:31:53.0400000	7	Posh	Sud	13	सु-१० के बाद होने से अधिकमास बने।
7	सूर्य दक्षिणायन प्रारंभ-17:26:15.6480000	7	Shravan	Vad	3	
8	सूर्य उत्तरायण प्रारंभ- 08:20:38.2560000	8	Mahaa	Vad	9	
9	सूर्य दक्षिणायन प्रारंभ-23:15:00.8640000	8	Shravan	Vad	14	
10	सूर्य उत्तरायण प्रारंभ- 14:09:23.4720000	9	Mahaa	Sud	5	
11	सूर्य दक्षिणायन प्रारंभ-05:03:46.0800000	9	Ashadh	Sud	11	सु-१० के बाद होने से अधिकमास बने।
12	सूर्य उत्तरायण प्रारंभ- 19:58:08.6880000	10	Mahaa	Vad	1	
13	सूर्य दक्षिणायन प्रारंभ-10:52:31.2960000	10	Shravan	Vad	7	
14	सूर्य उत्तरायण प्रारंभ- 01:46:53.9040000	11	Mahaa	Vad	13	
15	सूर्य दक्षिणायन प्रारंभ-16:41:16.5120000	11	Shravan	Sud	3	

No.	Sun Ayan starting	Veer Sam.	Month	Pak-sh	Tithi	Remarks
16	सूर्य उत्तरायण प्रारंभ- 07:35:39.1200000	12	Posh	Sud	9	सुद-१० के पहले होने से अधिकमास न बने ।
17	सूर्य दक्षिणायन प्रारंभ-22:30:01.7280000	12	Ashadh	Sud	14	३ सालके बाद अधिकमास निष्पत्ति
18	सूर्य उत्तरायण प्रारंभ- 13:24:24.3360000	13	Mahaa	Vad	5	
19	सूर्य दक्षिणायन प्रारंभ-04:18:46.9440000	13	Shravan	Vad	11	
20	सूर्य उत्तरायण प्रारंभ- 19:13:09.5520000	14	Mahaa	Sud	1	
21	सूर्य दक्षिणायन प्रारंभ-10:07:32.1600000	14	Ashadh	Sud	7	
22	सूर्य उत्तरायण प्रारंभ- 01:01:54.7680000	15	Posh	Sud	13	सु-१० के बाद होने से अधिकमास बने ।

## गाजे-गाजे छे महावीरनुं शासन गाजे छे...

प्रभु, आपने ठाणांग सूत्र-२९ के माध्यम से बताया,  
चंद्रदिणे णं एगूणतीसं मुहुते सातिरेगे मुहुतगणेणं पण्णते ॥८॥  
ज्योतिष करंडक के ४थे प्राभृत की १०५वी गाथा से बताते है,  
अउणत्तीसं पुण्णा उ मुहुता सोमतो तिही होइ ।

भागा दुगत्तीसं बावट्टिकएण छेएणं ॥१०५॥

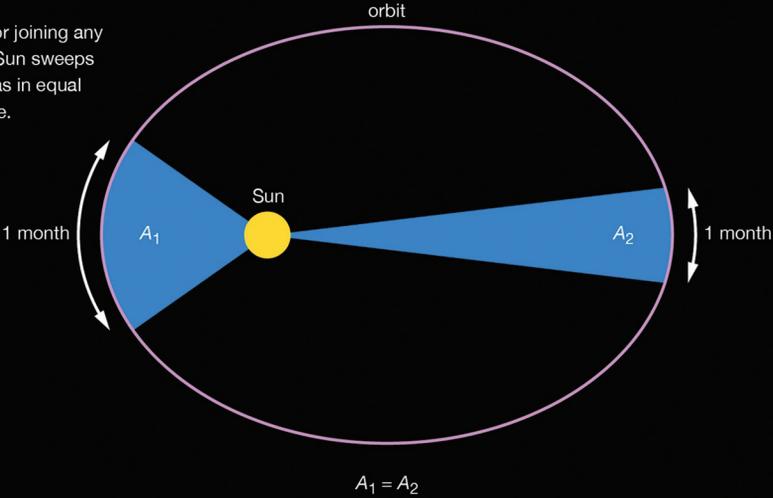
टुकमें **समान समय की प्रत्येक तिथि** बताई है...

इ.स. १५७१ में **जोहनेस केप्लर** नाम के  
वैज्ञानिक ने भी साबित किया की खुदके केन्द्र की आजुबाजु परिभ्रमण करनेवाले  
कोइ भी ग्रह का **समान समय में समान क्षेत्रफल (कला)** पसार होता है ।

### Kepler's laws of planetary motion

#### Second law

A radius vector joining any planet to the Sun sweeps out equal areas in equal lengths of time.



© Encyclopædia Britannica, Inc.

प्रभु यह पढके मन तुरंत बोल उठा

“तमेव सच्चं निःसंकं जं जिणेहिं पवेइयं ॥”

बस, इस तरह की अनेक बातें समजने पढीए

तिथि मीमांसा

Shubhay 98205 30299